सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संधान

राजभाषा हिन्दी को समर्पित पत्रिका

चतुर्थ अंक (जुलाई 2020–जून 2021)

आजादी के 75 वर्ष

आजादी का अमृत महोत्सव

“ऑडिट भवन” लखनऊ स्थित भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग के कार्यालयों का संयुक्त प्रयास

"ऑडिट भवन" परिसर लखनऊ
स्थित कार्यालयों से सम्बद्ध शाखाओं के कार्य-स्थल

ऑडिट भवन,
लखनऊ

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
झारखण्ड, राँची

कार्यालय महालेखाकार
बिहार, पटना

सत्यनिष्ठा भवन
कार्यालय महालेखाकार, प्रयागराज

संधान परिवार

प्रकाशन
विभागीय राजभाषा हिन्दी पत्रिका
'संधान' (अर्धवार्षिक)

प्रकाशक
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ

अंक
चतुर्थ अंक
(जुलाई 2020 – जून 2021)
(कोरोना की दूसरी लहर के कारण जुलाई 2020 – दिसम्बर 2020 का अंक भी इसी अंक के साथ संयुक्त रूप प्रकाशित)

मूल्य
राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा
एवं सम्मान

मुख्य संरक्षक (पदेन – वरिष्ठता के आधार पर)
श्री जयंत सिन्हा, प्रधान महालेखाकार, (निवर्तमान)
(लेखापरीक्षा-II) उत्तर प्रदेश, लखनऊ

संरक्षक
श्री राजकुमार, महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ

प्रधान संपादक (पदेन – निदेशक, प्रशासन, लखनऊ)
श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव,
निदेशक, प्रशासन/अप्रत्यक्ष कर,
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
लखनऊ

कार्यकारी संपादक
श्री शैलेंद्र कुमार शर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल
श्री अतुलेश रंजन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती लीना दरियाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री कैलाश नाथ मिश्रा, वरिष्ठ लेखाकार

संधान का अर्थ – ''लक्ष्य भेदन हेतु धनुष पर बाण चढ़ाना'' अथवा ''लक्ष्य भेदन हेतु निशाना लगाना'' है विभागीय पत्रिका का ये नाम हमारे विभाग के मुख्य कर्तव्य/लक्ष्य/उद्देश्य अर्थात किसी तंत्र (सिस्टम) की कमियों का अनुसंधान करना/उनको इंगित करना, के अनुरूप भी है। इसी विचार के साथ सम्पादक मण्डल ने पत्रिका हेतु इस नाम पर अपनी सहमति प्रदान की ।

आवरण चित्र – 'आजादी के अमृत महोत्सव' को समर्पित

"ऑडिट भवन" लखनऊ स्थित कार्यालयों का विवरण

कार्यालय	अधीनस्थ शाखा कार्यालय	कार्य-क्षेत्र
महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ	अप्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय- लखनऊ	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय सरकार) की लेखापरीक्षा
	प्रत्यक्ष कर शाखा कार्यालय- प्रयागराज	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) की लेखापरीक्षा
	केंद्रीय व्यय शाखा कार्यालय- प्रयागराज	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
	शाखा कार्यालय- पटना (बिहार)	बिहार राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
	शाखा कार्यालय- राँची (झारखंड)	झारखंड राज्य में वस्तु एवं सेवा कर (केन्द्रीय कार्यालय), प्रत्यक्ष कर (केन्द्रीय) एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं स्वायत्त निकायों के व्ययों की लेखापरीक्षा
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) उत्तर प्रदेश, लखनऊ	पुनर्गठन के पश्चात कार्यालय को चार समूहों में विभक्त किया गया है, ए.एम.जी.-I, II, III एवं IV	ए.एम.जी.-I, II एवं III जिसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों एवं उनके अधीनस्थ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों तथा स्वायत्त निकायों की लेखापरीक्षा तथा उत्तर प्रदेश सरकार की राजस्व प्राप्तियों की लेखापरीक्षा
	शाखा कार्यालय- प्रयागराज	ए.एम.जी.-IV जिसके द्वारा लोक निर्माण विभाग, वन विभाग तथा इसके अधीनस्थ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की लेखापरीक्षा
निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, लखनऊ (शाखा कार्यालय)	इसका मुख्य कार्यालय महानिदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, नई दिल्ली है	उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में स्थित मुख्यतः डाक एवं दूरसंचार विभाग के राजस्व एवं प्राप्तियों, एन.आई.सी. व यू.आई.डी.ए.आई. के लेखों की लेखापरीक्षा
वरिष्ठ लेखा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, लखनऊ (शाखा कार्यालय)	इसका मुख्य कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) II, प्रयागराज है	लेखा निर्माण के लेखों का संकलन और विशेष मुद्रा प्राधिकार-पत्र को निर्गत करने का एवं सम्बन्धित कार्य

अस्वीकरण (डिसक्लेमर)

इस अंक में लेखकों/रचनाकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। संपादक मण्डल का उनसे सहमत होना या असहमत होना आवश्यक नहीं है। विचारों एवं लेखन की मौलिकता संबंधी जिम्मेदारी स्वयं रचनाकार की है। रचना/आलेखों के सम्पादन एवं प्रकाशन संबंधी सर्वाधिकार सम्पादक मण्डल में निहित होंगे।

अनुक्रमणिका

शीर्षक	रचनाकार/लेखक (श्री/सुश्री)	पृष्ठ संख्या
• शुभकामना संदेश		
दुख से मुक्ति हमारे हाथ में	सुशील कुमार श्रीवास्तव	1
भारतीय संस्कृति	मनमीत कुमार	3
वन्दे मातरम्	सदानन्द कुमार चटर्जी	3
क्या-क्या हुआ गाँव से गायब	देवमणि पांडेय	4
प्रभावी कार्य-संस्कृति में नेतृत्व का योगदान	बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी	5
मैं फिर पूजी जाऊँगी	सुशील कुमार श्रीवास्तव	6
बचपन	स्वाति सिंह पुत्री श्री अशोक नारायण सिंह	6
दोषी कौन?	अतुलेश रंजन	7
आलोचना एवं साहित्य	आभा पांडे	9
इंतज़ार	पंकज मोहन जायसवाल	10
प्रकृति से छेड़छाड़	लीना दरियाल	11
ज़िदगी जीने को है	लीना दरियाल	11
बदलना पड़ेगा	बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी	11
शून्य से शिखर तक	राम जनम राय	12
कोरोना	बनी पाण्डेय पुत्री आभा पाण्डेय	14
हौसला	विनय कुमार सिंह	14
इम्यूनिटी	शैलेन्द्र कुमार शर्मा	15
आज़ादी का अमृत महोत्सव-		
आज़ादी के 75 वर्षों के विकास के 75 सोपान	सम्पादक मण्डल	17
आज़ाद भारत की 75 विभूतियाँ	सम्पादक मण्डल	18
आज़ादी के अमृत वचन	सम्पादक मण्डल	22
अनाम वैरागी-सिवनहवा बाबा	चन्द्रजीत यादव	23
कोरोना ने बदली जीवन शैली	आदर्श पाण्डेय	24
एक अविस्मरणीय यात्रा वृतांत	अर्जुन राम	25
चींटा और गिरगिट	प्रभा शंकर तिवारी	27
वक्त-गतिमान	राजेश कुमार-प्रथम	28
जीवन है अनमोल	राजेश कुमार-प्रथम	28

स्वर्ग प्रवेश-परीक्षा	सत्य प्रकाश	29
प्रयागराज गाथा	रविंद्र कुमार	30
बी.एन.पी.एल.-ब्याह नहीं, पहले लैटर्स	संजीव कुमार श्रीवास्तव	31
स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत	शुभम वर्मा	32
राष्ट्र-निर्माण और बुद्धि-शुद्धि	प्रभाकर दुबे	34
वाह रे विधाता	अनीता सिंह पत्नी श्री प्रदीप कुमार	35
भाषा	अनीता सिंह पत्नी श्री प्रदीप कुमार	35
रुको !!	धीरेन्द्र किशोर	36
सानिध्य	दीपिका पांडे	36
प्रयागराज का समय और हवा	गणेश शंकर निषाद	37
उलझन	राम औतार प्रसाद	38
• आपके पत्र/आशीर्वाद/प्रतिक्रिया		39-40
• मुख्य क्रिया-कलाप, पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति		41-45

विशेष सूचना: संधान परिवार के सभी सदस्य संज्ञान लें कि इंटरनेट से 'कॉपी-पेस्ट' किया गया, किसी अन्य लेखक का कोई लेख/कविता स्वीकार्य नहीं होगी। कृपया स्वयं की रचनाधर्मिता एवं लेखन क्षमता को अवसर प्रदान करें। इंटरनेट से प्रमाणिक तथ्य एवं आँकड़े लिये जा सकते है।

सुझाव/प्रतिक्रिया आमंत्रण

ये हमारे लिए हर्ष का विषय है कि "संधान" का चतुर्थ अंक आपके समक्ष है। आप सभी सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस अंक के बारे में अपनी मूल्यवान प्रतिक्रिया एवं सुझाव अवश्य भेजें। आपकी प्रतिक्रिया एवं सुझाव हमारे लिए अति महत्वपूर्ण हैं जो इस पत्रिका को और अधिक रुचिकर एवं जानकारी पूर्ण बनाने में सहयोगी सिद्ध होंगे।

पता : वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन), कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ, तृतीय तल, 'ऑडिट भवन', टी.सी.-35-वी-1, विभूतिखण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

ई-मेल: sao-admn.luk.cca@cag.gov.in

सूचना: संधान परिवार के सभी सुधी सदस्यों को विदित है कि समाज में समरसता, सौहार्द एवं देश प्रेम को बढ़ावा देने हेतु, इस पत्रिका में भारत के महापुरुषों/संतों एवं उनकी शिक्षा पर आधारित एक श्रृंखला प्रकाशित की जा रही है। अतः आप सभी से अनुरोध है कि इस संदर्भ में आगामी अंकों के लिए आप अपने लेख के माध्यम से योगदान दें।

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा–II)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

जयंत सिन्हा
प्रधान महालेखाकार

मुख्य संरक्षक के आशीर्वचन

हमारे कार्यालय परिसर 'ऑडिट भवन' में स्थित सभी कार्यालयों एवं उनसे सम्बद्ध शाखा कार्यालयों के संयुक्त प्रयास से राजभाषा हिंदी की विभागीय पत्रिका 'संधान' के चतुर्थ अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

राजभाषा का कार्यान्वयन हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है, इसलिए कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य को बढ़ावा देने के लिए सदैव प्रेरित किया जाता रहा है। हिंदी पत्रिका, राजभाषा के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा मौलिक हिंदी लेखन को प्रोत्साहन मिलता है। कोविड–19 की विषम परिस्थितियों में भी 'संधान' पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम और निष्ठा को दर्शाता है। इसी क्रम की निरंतरता में, इस पत्रिका 'संधान' के चतुर्थ अंक का सफल प्रकाशन, राजभाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दृढ़ करता है।

'संधान' पत्रिका के माध्यम से हमारे विचारों का आदान-प्रदान तो होता ही है साथ ही कार्यालय में हिंदी को बढ़ावा देने की दिशा में आयोजित होने वाली अन्य गतिविधियों की झलक भी मिलती है। आशा है कि इसमें समाविष्ट समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय होंगी। इस पत्रिका के कुशल संपादन व सहयोग हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। 'संधान' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

(जयंत सिन्हा)
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II)
उ.प्र., लखनऊ
मुख्य संरक्षक संधान पत्रिका

सत्यमेव जयते

कार्यालय
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
नई दिल्ली

राज कुमार
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि महानिदेशक, लेखापरीक्षा केंद्रीय लखनऊ कार्यालय से प्रकाशित पत्रिका ''संधान'' के चतुर्थ अंक को प्रकाशित किया जा रहा है।

मैं समझता हूँ कि इस प्रकाशन से न केवल राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में सहायता मिलेगी अपितु अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी अभिव्यक्ति का अवसर भी प्राप्त होगा। आशा है यह पत्रिका विभागीय गरिमा के अनुरूप एक सफल और उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन होगा एतदर्थ मेरी ओर से शुभकामनाएं।

(राज कुमार)
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय महालेखाकार
(लेखापरीक्षा–I)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

सत्यमेव जयते

राम हित
महालेखाकार

संदेश

संधान के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर अपार हर्ष हो रहा है। राष्ट्रभाषा सदैव ही विचारों को व्यक्त करने का सर्वोत्तम माध्यम होती है।

भाषा सिर्फ मनोभावों की वाहिका ही नहीं होती, अपितु राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन होने के साथ ही सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता और अखंडता की एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है। किसी सुदृढ़ राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि राष्ट्र की अपनी भाषा कितनी व्यापक एवं समृद्ध है।

राजभाषा पत्रिका **संधान,** हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ ही नैसर्गिक रचनात्मकता को व्यक्त करने का सुअवसर प्रदान करती है।

संधान के सफल प्रकाशन पर रचनाकारों, सम्पादक मण्डल को असीम शुभकामनाएं।

राम हित
(महालेखाकार)

सत्यमेव जयते

कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
लखनऊ

राज कुमार
महानिदेशक

संरक्षक के आशीर्वचन

हिन्दी राजभाषा की विभागीय पत्रिका **संधान** के चतुर्थ अंक का प्रकाशन मेरे लिये अत्यंत हर्ष का विषय है। कोरोना महामारी के बावजूद भी **संधान** को प्रकाशित करने हेतु, सभी योगदानकर्ता एवं सम्पादक मंडल के सभी सदस्य बधाई एवं प्रशंसा के पात्र हैं।

संधान हिन्दी प्रयोग एवं रचनात्मकता को प्रोत्साहन देने के अपने उद्देश्यों को पूर्ण करती हुई अपने पथ पर अग्रसर है। **संधान** की आगामी यात्रा की सफलता के लिए शुभकामनाएं।

(राज कुमार)
महानिदेशक
संरक्षक संधान पत्रिका

प्रथम ऑडिट दिवस

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग के सभी सदस्यों के लिए यह अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि अब से प्रत्येक वर्ष **16 नवम्बर** को **ऑडिट दिवस** मनाया जायेगा। दिनांक 16 नवम्बर 2021 को देश में **प्रथम ऑडिट दिवस** मनाया गया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संबोधन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने **16 नवम्बर 2021** को प्रथम **ऑडिट दिवस** के अवसर पर देश को सम्बोधित किया। इस कार्यक्रम का आयोजन, नई दिल्ली स्थित भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय में किया गया, जहाँ प्रधानमंत्री ने भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा का अनावरण भी किया।

संबोधन के प्रारम्भ में प्रधानमंत्री ने संस्थानों की विशेषता को रेखांकित करते हुए कहा- ''संस्थान कुछ दशकों के बाद प्रासंगिकता खो देते हैं, मगर सी.ए.जी. एक विरासत है और हर पीढ़ी को इसे संजोना चाहिए। भारत में बहुत कम ऐसे संस्थान है, जो समय के साथ मजबूत, अधिक परिपक्व और अधिक प्रासंगिक बनें।'' पुराने समय में काम करने के तरीकों को याद करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी जी ने ये भी कहा कि ''एक समय था, जब ऑडिट के काम को संदेह और भय के साथ देखा जाता था। सी.ए.जी. बनाम सरकार, हमारे सिस्टम की सामान्य मानसिकता बन गई थी। कभी-कभी अधिकारी सोचते थे, कि सी.ए.जी. हर चीज में दोष देखता है। मगर आज मानसिकता बदल चुकी है और आज ऑडिट को, संस्थान व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।''

प्रधानमंत्री मोदी जी ने भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के काम करने के तरीकों का आम आदमी पर पड़ने वाले प्रभाव के संदर्भ में कहा कि ''सरकार के काम का आँकलन करते समय, सी.ए.जी. को एक बाहरी व्यक्ति के नज़रिए का फायदा मिलता है। आप जो कुछ भी कहते हैं, उसकी मदद से हम व्यवस्थित सुधार करते हैं और इसे सहयोग के रूप में देखते हैं।''

अभिलेखों की उपलब्धता की सुनिश्चितता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सरकारी विभागों से कहा कि कैग जो भी दस्तावेज, आंकड़े और फाइल मांगें, वे उसे उपलब्ध करवाए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि राजकोषीय घाटे और सरकारी व्यय पर आपकी चिंताओं को हमने सकारात्मक तरीके से लिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कैग को महामारी के समय में अपनाए गए बेहतरीन उपायों और क्रमबद्ध सीखों का अध्ययन करना चाहिए और वैज्ञानिक एवं सशक्त लेखा परीक्षण से व्यवस्था मजबूत और पारदर्शी होगी। प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि 'डाटा' ही सूचना है और आने वाले समय में हमारा इतिहास भी 'डाटा' के जरिए देखा और समझा जाएगा।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का संबोधन

इस अवसर पर नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मू ने कहा कि आज इस दिन को हमने प्रथम ऑडिट दिवस के तौर पर मनाने के लिए चुना है। इस दिन का महत्त्व इस बात से है कि गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1858 के तहत बंगाल, मद्रास एवं बंबई तीनों प्रेजिडेंसी के लेखा विभागों के विलय के बाद 16 नवंबर 1860 को प्रथम ऑडिटर जनरल ने कार्यभार ग्रहण किया था। हम इस दिन को हर साल ऑडिट दिवस के रूप में मनाएंगे। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

प्रधान महालेखाकार एवं महानिदेशक को पुरस्कार

प्रथम ऑडिट दिवस के अवसर पर तत्कालीन प्रधान महालेखाकार श्री जयंत सिन्हा व महानिदेशक श्री राजकुमार तथा सम्बंधित लेखापरीक्षा दल को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मू द्वारा लेखापरीक्षा में उनके विशिष्ट योगदान हेतु पुरस्कृत किया गया। महानिदेशक श्री राजकुमार जी द्वारा दिये गये इनपुट के आधार पर तत्कालीन प्रधान महालेखाकार श्री जयन्त सिन्हा के मार्गदर्शन में लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में एक हजार छः सौ करोड़ रुपये से अधिक की राजस्व लेखापरीक्षा आपत्ति का उल्लेख किया गया था।

शैलेन्द्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ

संपादक की कलम से...

संधान के चतुर्थ अंक का, मूर्तरूप में हाथों में होना निश्चित ही एक सुखद अनुभूति है, हिन्दी पथ पर **संधान** की उद्देश्यपूर्ण यात्रा को, सुगम और निर्बाध बनाने हेतु संपादक मण्डल, रचनाकारों और लेखकों का हृदय से आभार। पाठकों से मिला स्नेह एवं प्यार, **संधान** के संपादक मण्डल के लिए सर्वोत्तम उपहार है, जो **संधान** को बेहतर बनाने के लिए हमें प्रेरित करता है।

हमें खेद है कि कोरोना महामारी की दूसरी भयावह लहर के कारण **संधान** के इस अंक की अवधि अर्धवार्षिक न होकर, वार्षिक हो गयी है।

संधान परिवार के सभी सदस्यों से अनुरोध है कि **संधान** के आगामी अंकों हेतु, आप अपना सहयोग व स्नेह पूर्व की भाँति ही बनाए रखें।

धन्यवाद

जय हिंद, जय हिंदी।

(शैलेन्द्र कुमार शर्मा)
कार्यकारी संपादक

दुख से मुक्ति हमारे हाथ में

सुशील कुमार श्रीवास्तव
निदेशक, प्रशासन/अप्रत्यक्षकर
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

मनस्विद कहते हैं कि हर आदमी के भीतर मसीहा छिपा है। अगर कोई आदमी बीमार है, तो तुम्हारे मन में आकांक्षा उठती है उसकी सेवा करने की, उसको बीमारी के बाहर लाने की। अगर कोई आदमी दुखी है, तो तुम्हारे मन में आकांक्षा होती है, इसको इसके दुख के बाहर खींचना है, इसका उद्धार करें।

कुछ बुरी आकांक्षा नहीं। लेकिन परिणाम बड़े भयंकर हैं। पुरुष अक्सर ऐसी स्त्रियों के प्रेम में पड़ जाते हैं जो स्त्रियां दुखी हैं। क्योंकि पुरुषों को बड़ा आनन्द आता है, किसी को दुख से उबार रहे हैं। स्त्रियाँ ऐसे पुरुषों के जीवन में उलझ जाती हैं, जिनमें सुधार की गुंजाइश है। शराबी है पति, तो स्त्री को ज्यादा रस आता है। सुधारने का एक सुख है। एक उद्धार का अवसर मिला।

अब हम इसे थोड़ा समझें।

अगर तुमने एक स्त्री को इसलिए प्रेम किया कि वह बीमार थी, रुग्ण थी और तुम उसकी चिकित्सा करना चाहते थे, उसको दुख की सीमा के बाहर लाना चाहते थे, तो फिर वह दुख को छोड़ न सकेगी। क्योंकि दुख छोड़ने का अर्थ, तुम्हारा प्रेम भी खो जाना होगा। अगर एक स्त्री अपने पति के पीछे लगी है कि यह शराब छोड़ दे, और अगर यह शराब छोड़ने के कारण ही सारा प्रेम बना है, तो पति शराब न छोड़ सकेगा। क्योंकि शराब छोड़ने का मतलब हुआ, संबंध समाप्त हुआ।

मुझसे लोग पूछते हैं कि अगर हम बदल जाएंगे, तो हमारे संबंधों पर परिणाम तो न होगा? अगर हम ध्यान करेंगे, तो हमारे संबंध तो रूपांतरित न होंगे? मैं उनसे कहता हूँ सोच-समझकर करना। रूपांतरित होंगे। क्योंकि तुम्हारे सब संबंध तुम्हारे रोगों से भरे हैं। ध्यान एक को बदलेगा, तो दूसरे को भी बदलाहट होनी शुरू हो जाएगी। हमारे दुखों में भी हमारी पकड़ है। मजा खो जाएगा।

मैं दो शत्रुओं को जानता था। दोनों पुराने रिटायर्ड प्रोफेसर थे और दोनों का कुल धंधा इतना था, एक-दूसरे की निंदा। उनमें से एक से भी मिल जाओ तो दूसरे के संबंध में चर्चा सुननी पड़ती। उनमें से एक मर गया। काफी उम्र हो गयी थी, कोई अठहत्तर वर्ष। जिस दिन वह मरा, मैंने अपने एक मित्र को कहा कि अब दूसरा ज्यादा दिन जिंदा न रह सकेगा। तीन महीने बाद दूसरा भी मर गया। वह मित्र मेरे पास आया, उन्होंने कहा कि आपने यह कैसे कहा था? कि यह तो बिलकुल सीधी बात थी। उनका रस ही इतना था। अब उसके, दूसरे के जीवन में कोई रस ही न रहा। एक के मर जाने के बाद दूसरे को बात ही करने को कुछ न बची। सारी बात-उसकी निंदा! मित्रों में ही संबंध नहीं होते, दुश्मनों में भी बड़े गहरे नाते होते हैं।

जिस दिन गाँधी को गोली लगी, उस दिन जिन्ना अपने बगीचे में बैठा था। तब तक जिन्ना ने हर बार, हर तरह से कोशिश की थी उसके मित्रों ने, अनुयायियों ने, कि कुछ सुरक्षा की व्यवस्था की जाऐं लेकिन उसने सदा इनकार कर दिया। उसने कहा, मुझे कौन मारने वाला है? जिनके लिए मैंने अपना जीवन लगाया, देश दिलवाया, वे मुझे मारेंगे? यह कोई सवाल ही नहीं है। मुझे किसी तरह की सुरक्षा, किसी तरह के गार्ड की कोई जरूरत नहीं है। मकान पर पुलिस वाले भी नहीं थे जिन्ना के।

लेकिन जैसे ही खबर पहुँची रेडियो से और उसके सेक्रेटरी ने आकर कहा कि गाँधी को दिल्ली में गोली मार दी गयी, वह एकदम उदास हो गया, उठकर भीतर गया। सेक्रेटरी चकित हुआ, क्योंकि गाँधी की मृत्यु से जिन्ना को खुश होना चाहिए वे उदास हैं! वह भीतर गया और उसने कहा, आप उदास दिखते हैं! उन्होंने कहा, उदास दिखता हूँ जिंदगी एकदम खाली मालूम पड़ती है। इसी आदमी से तो सारा संघर्ष था।

और उसी दिन से जिन्ना के घर पर पहरा बैठ गया। क्योंकि जब गाँधी मारा जा सकता है, तो जिन्ना की क्या बिसात! लेकिन जिन्ना उससे ज्यादा दिन जिंदा नहीं रहा फिर। अगर गाँधी जिंदा रहते, जिन्ना भी जिंदा रहता। रस ही खो गया, जिंदगी का मजा ही चला गया। दुश्मन एक-दूसरे को जिलाते हैं।

तुम्हारे दुख में भी तुम्हारा निहित स्वार्थ होगा। इसीलिए लोग कहे चले जाते हैं कि दुख है, दुख है, फिर भी तुम किए चले जाते हो। कहीं कुछ रस होगा उसमें। तुम्हारे दुख में से भी कोई तरह की सुख की किरणें आ रही होंगी।

अगर तुम स्त्री हो और एक पति या प्रेमी तुम्हारे प्रेम में पड़ गया, क्योंकि तुम दुर्बल हो, कमजोर हो, बीमार हो, तो तुम स्वस्थ न हो सकोगी। क्योंकि स्वास्थ्य का अर्थ होगा, यह पति गया। यह फिर कोई और बीमार औरत खोजेगा, जिस पर यह दया कर सके, प्रेम कर सके, सहानुभूति कर सके, अस्पताल ले जा सके और जिसके आसपास यह मसीहा बन सके कि देखो, मैं इसको बचा रहा हूँ उद्धार कर रहा हूँ।

ऐसे लोग हैं जो वेश्याओं से शादी करते हैं। उद्धार करना है। शादी-वादी का कोई बड़ा मामला नहीं है। शादी से वेश्या का क्या

लेना-देना है। लेकिन वेश्या का उद्धार करना है। लेकिन उनकी बड़ी तकलीफ है। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जिन्होंने वेश्याओं से शादी की और शादी के बाद मुश्किल में पड़ गए, क्योंकि फिर वेश्या-वेश्या न रही। पहले उसका उद्धार कर लिया, आनन्द उद्धार करने में था। फिर वेश्या पत्नी हो गयी, बस आनन्द चला गया। वह दूसरी वेश्या के पीछे पड़ गया। अब वह पत्नी चिल्लाती है, रोती है कि तुमने मुझसे विवाह किया, मेरा उद्धार किया, अब तुम छोड़कर क्यों जाते हो? उसको भी समझ में नहीं आता कि मामला क्या है।

मामला बिलकुल सीधा है, गणित का है। जब तक वह वेश्या थी, तभी तक उनका रस था। जैसे ही वह वेश्या नहीं रही, रस खत्म हो गया। साधारण औरत हो गयी। ऐसी साधारण औरतें तो बहुत थीं। अब अगर उनका रस कायम रखना हो, तो उस पत्नी को वेश्या बने ही रहना चाहिए; तो वे उद्धार करते रहें, काम जारी रहे। दुख में हमारे निहित स्वार्थ हैं।

मुझसे लोग कहते हैं कि हम दुख से मुक्त होना चाहते हैं, लेकिन मैं गौर से देखता हूँ तो मुझे मुश्किल से कोई आदमी दिखायी पड़ता है, जो वस्तुतः दुख से मुक्त होना चाहे। कहते हैं वे, कहने में रस है। दुख से मुक्त होने में रस नहीं है, दुख से मुक्त होना चाहते हैं, यह दिखलाने में रस है-कि हम दुख से मुक्त होना चाहते हैं। इसका मजा ले रहे हैं। लेकिन दुख से तुम मुक्त होना चाहो तो तुम्हें कौन दुखी रख सकता है? कोई उपाय नहीं है इस संसार में किसी व्यक्ति को दुखी रखने का, अगर वह मुक्त होना चाहता है। लेकिन वह मुक्त होना नहीं चाहता। क्योंकि उसकी सारी सहानुभूति खो जाएगी।

तुम अपना निरीक्षण करो, छोटी सी बीमारी हो जाती है, तुम बड़ा करके बताते हो। तुम इसे ध्यान रखना। जरा सा सिरदर्द हो जाता है, तुम ऐसा समझते हो कि सारा पहाड़ टूट पड़ा, हिमालय तुम्हारे ऊपर टूट पड़ा। तुम इतना बढ़ा-चढ़ाकर क्यों बताते हो? क्योंकि जब तुम बढ़ा-चढ़ाकर बताते हो तो दूसरे की आँखें सहानुभूति से भर जाती हैं। तुम सहानुभूति की भिक्षा माँग रहे हो। लोग अपने दुख की चर्चा करते फिरते हैं, एक-दूसरे से कहते फिरते हैं, मैं बहुत दुखी हूँ। क्यों? दुख की चर्चा से क्या सार है? लोगों की आँखों में सहानुभूति आती है, प्रेम का थोड़ा धोखा हो जाता है? लगता है, लोगों को मुझ में रस है, मैं महत्वपूर्ण हूँ। लोग मेरे दुख से दुखी हैं। मेरे दुख से मुझे छुटकारा दिलाना चाहते हैं।

तुम जरा गौर करो, तुम अपने दुख की चर्चा एक सप्ताह के लिए बंद कर दो। तुम चकित होओगे कि दुख की चर्चा बंद करते ही लोगों की सहानुभूति खो गयी। सहानुभूति खोने में ऐसा लगेगा कि जीवन की कोई संपदा खोयी जा रही है। तुम चकित होओगे कि जो लोग तुम्हारे मित्र थे, वे बदलने लगे। क्योंकि उनका रस सहानुभूति दिखाने में था। वे ऐसे लोग चाहते थे-दीन-दुखी, जिनके ऊपर वे सहानुभूति दिखाएं, और उसका मजा लें। तुम्हारे संबंध बदल जाएंगे। तुम्हें नए मित्र बनाने पड़ेंगे। उनको नए बीमार खोजने पड़ेंगे।

तुम जरा सात दिन के लिए निरीक्षण करके देखो, मत करो दुख की चर्चा। तुम ऐसा करो, उलटा करो, सात दिन अपने सुखों की चर्चा करो। देखो, तुम्हारे दोस्त बदल जाएंगे। जो मिले उससे ही कहो कि अहा! कैसा आनंद आ रहा है! वह भी चौंकेगा कि अरे! कल तक सिर दर्द, पेट दर्द, कमर दर्द, यह, वह, पच्चीस बातें लाते थे!

मेरे पास लोग आते हैं, उनमें से नब्बे प्रतिशत झूठ होता है। मैं यह नहीं कहता कि वे झूठ जानकर बोलते हैं। ध्यान किया नहीं कि कमर में दर्द, कि सिर में दर्द, कि छाती में दर्द, कि पेट में दर्द, जैसे ध्यान से दर्द का कोई लेना-देना है! अगर मैं उनसे कहूं कि यह सब बकवास है, तो वे मुझसे नाराज होते हैं। मुझे कहना पड़ता है, कुंडलिनी जग रही है! वे बड़े प्रसन्न होते हैं। यही सुनने के लिए वे दर्द लेकर आए थे। कुंडलिनी जग रही है, अहा! वे कल और बड़ा दर्द बनाकर ले आएंगे। और ऐसा भी नहीं कि वे झूठ कह रहे हैं, ध्यान रखना, वे कल्पना इतनी प्रगाढ़ कर लेते हैं कि वह प्रतीत भी होती है कि है। बड़ा जाल है।

अगर मैं उनको उनके दर्द से मुक्त करूं, तो वे राजी नहीं हैं। क्योंकि दर्द में उनका निहित स्वार्थ है। रोज मैं देखता हूँ अगर मैं किसी को कह देता हूँ कि यह सब बकवास है, कुछ तुम्हें हो नहीं रहा, वहम है। वे मेरी तरफ ऐसे देखते हैं जैसे मैं दुश्मन हूँ उनसे मैंने कुछ छीन लिया है। सिर्फ दर्द ठीक नहीं हो रहा है, दर्द है नहीं, दर्द छीना, वे मेरी तरफ ऐसे देखते हैं कि मैं समझा नहीं, उनको कोई और गुरु तलाश करना पड़ेगा, जो कहे कि बिलकुल ठीक हो रहा है। अगर मैं कह देता हूँ कि बड़ी गहरी घटना घट रही है, तो दर्द एक तरफ, वे मुस्कुराने लगते हैं, प्रसन्न हो जाते हैं।

तो दर्द में तुम सुख ले रहे हो, इसलिए दर्द है। तो बुद्ध पुरुष कहते रहें कि पाप में दुख है, छोड़ो, तुम छोड़ोगे न। क्योंकि तुम्हें दुख में भी सुख है। और जब तक तुम वहाँ से न पकड़ोगे, तब तक बुद्ध-वचन तुम्हारे ऊपर ऐसे पड़ेंगे और निकल जाएंगे जैसे चिकने घड़े पर वर्षा होती है।

(ओशो के प्रवचनों से संकलित)

भगवान बुद्ध एक बार भ्रमण करते हुए एक ब्राह्मण के घर जा पहुँचे। रात हो चुकी थी और बुद्ध वहाँ ठहरना चाहते थे। जब ब्राह्मण को मालूम हुआ कि वह बुद्ध हैं तो उसने जी भरकर गालियाँ दीं, अपशब्द कहे और तुरंत निकल जाने को कहा।

बुद्ध देर तक सुनते रहे। जब ब्राह्मण ने बोलना बंद किया तो उन्होंने पूछा "हे, प्रिय साथी ! आपके यहाँ कोई अतिथि आते होंगे तो आप उनका सुंदर भोजन और मिष्ठान से स्वागत करते होंगे।" इसमें क्या शक- ब्राह्मण ने उत्तर दिया। और यदि किसी कारणवश मेहमान उसे स्वीकार न करे तो आप उन पकवानों को फेंक देते होंगे।

"फेंक क्यों देते हैं, हम स्वयं ग्रहण कर लेते" उसने विश्वासपूर्वक उत्तर दिया। "तो हम आपकी यह गालियों की भेंट स्वीकार नहीं करते, अपनी वस्तु आप ग्रहण करिए।" यह कहकर बुद्ध मुस्कुराते हुए वहाँ से चल पड़े।

भारतीय संस्कृति

मनमीत कुमार
उपनिदेशक/प्रत्यक्ष कर
कार्या-महानिदेशक,
ले.प.(के.), लखनऊ
शाखा-प्रयागराज

भारतीय संस्कृति में सब कुछ है जैसे विरासत के विचार, लोगों की जीवन शैली, मान्यताएँ, रीति-रिवाज, मूल्य, आदतें, परवरिश, विनम्रता, ज्ञान आदि। भारत विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है जहाँ लोग अपनी पुरातन मानव संस्कृति और परवरिश का अनुकरण करते हैं। संस्कृति, दूसरों से व्यवहार करने का, सौम्यता से चीजों पर प्रतिक्रिया करने का, मूल्यों के प्रति हमारी समझ का, न्याय, सिद्धांत और मान्यताओं को मानने का एक तरीका है। पुरानी पीढ़ी के लोग अपनी संस्कृति और मान्यताओं को नयी पीढ़ी को सौंपते हैं।

इसलिये यहाँ नयी पीढ़ी को संस्कृति और परंपराएँ पहले से ही उनके माता-पिता और दादा-दादी से मिली होती हैं। हम लोग सभी पहलुओं में भारतीय संस्कृति की झलक देख सकते हैं जैसे नृत्य, संगीत, कला, व्यवहार, सामाजिक नियम, भोजन, हस्तशिल्प, वेशभूषा आदि। भारत में विभिन्न मान्यताएँ और व्यवहार हैं जो यहाँ पर अलग-अलग संस्कृतियों को जन्म देते हैं। भारत में विभिन्न धर्मों की उत्पत्ति की जड़ें लगभग पाँच हजार वर्ष पहले से ही हैं। ऐसी मान्यता है कि यहाँ वेदों से हिन्दू धर्म का आरंभ हुआ है। हिन्दू धर्म के सभी पवित्र धर्मग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। ये भी माना जाता है कि जैन धर्म का अस्तित्व सिन्धु घाटी में भी था। बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भी भगवान गौतम बुद्ध की शिक्षा के बाद अपने देश में हुयी थी। इसाई धर्म को यहाँ अंग्रेज और फ्रांसीसी लेकर आये जिन्होंने लगभग 200 वर्षों तक यहाँ पर राज किया। इस तरह से विभिन्न धर्मों की उत्पत्ति, यहाँ प्राचीन समय से है या किसी तरह से यहाँ लायी गयी है। हालांकि, अपने रीति-रिवाज और मान्यताओं को बिना प्रभावित किये, सभी धर्मों के लोग शांतिपूर्ण तरीके से एक साथ रहते हैं।

कई सारे युग आये और गये, लेकिन कोई भी इतना प्रभावशाली नहीं हुआ कि वह हमारी वास्तविक संस्कृति को बदल सके। नाभिरज्जु के समान पुरानी पीढ़ी की संस्कृति, नयी पीढ़ी से आज भी जुड़ी हुयी है। हमारी राष्ट्रीय संस्कृति हमेशा हमें अच्छा व्यवहार करना, बड़ों का सम्मान करना, मजबूर, गरीब व जरूरतमंद लोगों की मदद करना सिखाती है।

हमारी धार्मिक संस्कृति है कि हम व्रत रखें, पूजा करें, गंगाजल अर्पण करें, सूर्य नमस्कार करें, परिवार के बड़े सदस्यों का पैर छुएँ, रोज ध्यान और योग करें तथा भूखे और अक्षम लोगों को अन्न-जल दें। हम बहुत खुशी के साथ अपने घर आये मेहमानों की सेवा करते हैं क्योंकि मेहमान भगवान का रूप होता है, इसी वजह से भारत में **''अतिथि देवो भवः''** का कथन बेहद प्रसिद्ध है। हमारी संस्कृति की मूल जड़ मानवता और आध्यात्म है।

वन्दे मातरम्

सदानंद कुमार चटर्जी
सेवानिवृत्त वरिष्ठ संप्रेक्षक
शाखा-प्रयागराज

बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय प्रख्यात उपन्यासकार, कवि, गद्यकार एवं पत्रकार थे। उन्होंने सन् 1875 में वन्दे मातरम् गीत की रचना की, जिसे सन् 1880 में प्रकाशित किया गया। वन्दे मातरम् गीत का स्वर-ताल राग गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने प्रदान किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर का बांग्ला साहित्यकारों में अनन्य स्थान है।

वन्दे मातरम् की यात्रा कोई सरल यात्रा न थी। वन्दे मातरम् भारतीय जागरण का, वह महामंत्र बना जिसने करोड़ों भारतवासियों को भारत माँ की सेवा, उसकी स्वतन्त्रता के लिए ललकारा और ये प्रेरणा दी कि अगर वन्दे मातरम् कहते हुए प्राण भी न्यौछावर करना पड़े तो प्राण देने में हिचकिचाहट न की जाए। वन्दे मातरम् ने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का सूत्रपात किया। अंग्रेजी सरकार ने वन्दे मातरम् का जयघोष करने पर कानूनी रूकावट लगा दी थी। बड़ी संख्या में महिलाएं, पुरुष, नौजवान, बुद्धिजीवी लोगों द्वारा वन्दे मातरम् का जयघोष करने पर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें जेल में बन्दी बना दिया था। वन्दे मातरम् का प्रचलन ऐसा चला कि सभी लोग मिलते-जुलते वन्दे मातरम् से नमस्कार करते।

पण्डित सुन्दर लाल एवं पत्रकार नित्यानन्द चटर्जी द्वारा प्रकाशित **कर्मयोगी पत्रिका** में वन्दे मातरम् की बड़ी चर्चा एवं प्रशंसा की गयी। यही गीत आगे चलकर स्वतन्त्रता संग्राम की लड़ाई में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। वन्दे मातरम् की ध्वनि देश के कोने-कोने में गूंज उठी। पुरुष, महिलाएं, नवयुवक, वकील, डाक्टर, साहित्यकार, पत्रकार, जब स्वतन्त्रता संग्राम के लिए आन्दोलन करते समय वन्दे मातरम् का जयघोष करते तो ब्रिटिश सरकार उन्हें प्रताड़ित करती एवं जेल की सलाखों के पीछे डाल देती। देश के मतवाले नौजवान, आन्दोलनकारी ब्रिटिश सरकार की गोलियों के शिकार होते और फाँसी के फन्दे पर जाते समय हँसते-हँसते वन्दे मातरम् कहते हुये फाँसी के तख्ते पर लटक जाते।

आज हमारे राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् को राष्ट्रगान के ही समकक्ष माना जाता है। बंकिम बाबू की लेखनी ने, जो कुछ देश को प्रदान किया, वह अनमोल है, जिसका मूल्यांकन करना असंभव है। बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनाकार थे, जिन्होंने हिन्दी साहित्य जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ी। आज भी भारत वर्ष की एक सौ तीस करोड़ जनता उन्हें नमन करती है। धन्य है भारत देश, जहाँ पर बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय जैसे ज्ञानी, त्यागी व साहित्यकार के रूप में बहुमुखी प्रतिभा ने जन्म लिया।

''जय भारत, जय हिन्द''

तृतीय अंक (ई-पत्रिका) से पुनः प्रकाशित

शख्सियत : देवमणि पांडेय

जन्म : 4 जून 1958 सुलतानपुर (उ.प्र.), **वर्तमान निवास स्थान :** मुंबई

शिक्षा : हिन्दी और संस्कृत में प्रथम श्रेणी एम.ए.।

लेखन विधा : गीत, गज़ल, कविताएं।

विशेष : दो ग़ज़लें वर्ष 2017 में जलगाँव विश्वविद्यालय के एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रम में शामिल।

प्रकाशित काव्यसंग्रह : 'दिल की बातें', 'खुशबू की लकीरें', 'अपना तो मिले कोई' और **'कहाँ मंजिलें कहाँ ठिकाना'।**

देश-विदेश में कई पुरस्कारों और सम्मान से अलंकृत देवमणि पांडेय जाने माने शायर और सिने गीतकार होने के साथ-साथ लोकप्रिय मंच संचालक भी हैं। शायर-सिने गीतकार देवमणि पांडेय के कैरियर की शुरूआत निर्देशक तिग्मांशु धूलिया की फिल्म **'हासिल'** से हुई। इसके बाद डॉक्टर चंद्रप्रकाश की फिल्म **'पिंजर'** में उनके लिखे गीत **'चरखा चलाती माँ'** को सन् 2003 के लिए **बेस्ट लिरिक ऑफ दि ईयर** अवार्ड से नवाजा गया। श्री देवमणि पांडेय ने **'कहाँ हो तुम'** और **'तारा'** (दि जर्नी ऑफ लव) आदि फिल्मों को भी अपने गीतों से सजाया है। उन्होंने सोनी चैनल के धारावाहिक **'एक रिश्ता साझेदारी का'** और स्टार प्लस के **'एक चाबी है पड़ोस में भी'** नामक सीरियल में अपनी कलम का जादू दिखाया। संगीत अल्बम **गुजारिश, तन्हा तन्हा** और **बेताबी** में भी उनके गीत बहुत पसंद किए गए। हिंदी-उर्दू की प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं में उनकी अनेक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। सांध्य दैनिक संझा, जनसत्ता में कई सालों तक साप्ताहिक स्तम्भ **साहित्यनामचा** का लेखन।

विशेष : (1) वर्ष 2012 में ताशकंद में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कवि सम्मेलन का संचालन।

(2) भोपाल (म.प्र.) के दुष्यंत कुमार संग्रहालय में 13 अगस्त 2012 को डेढ़ घंटे एकल काव्य पाठ।

प्रस्तुत है उनके द्वारा लिखी एक प्रसिद्ध कविता।

क्या-क्या हुआ गाँव से गायब

देवमणि पांडेय

सावन की पुरवइया गायब,
पोखर, ताल, तलइया गायब।

कट गए सारे पेड़ गाँव के,
कोयल और गौरइया गायब।

कच्चे घर तो पक्के बन गए,
हर घर से अँगनइया गायब।

सोहर, कजरी, फगुवा भूले,
बिरहा, नाच नचइया गायब।

गुमसुम बैठी है चौपाई,
दोहा और सवइया गायब।

नोट निकलते ए टी एम से,
पैसा, आना, पइया गायब।

दरवाजे पर कार खड़ी है,
बैल, भैंस और गइया गायब।

सुबह हुई तो चाय की चुस्की,
चना-चबेना, लइया गायब।

भाभी देख रही हैं रस्ता,
शहर गए थे, भइया गायब।

आँकड़े जानकारी नहीं हैं, जानकारी ज्ञान नहीं हैं, ज्ञान समझ नहीं है, समझ बुद्धिमानी नहीं है। - क्लिफोर्ड स्टोल

प्रभावी कार्य-संस्कृति में नेतृत्व का योगदान

बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्र.म.ले.(ले.प.-II)
उ.प्र., लखनऊ

कार्य-संस्कृति को विविध नियमों, सिद्धांतों, मानदंडों, मूल्यों एवं आदर्शों के सुविचारित ढंग से पल्लवित एवं पुष्पित समुच्चय के रूप में अभिहित किया जाता है। कोई भी संगठन, चाहे बड़ा हो या छोटा, निजी हो अथवा सरकारी, उसके निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति में, उस संगठन की कार्य-संस्कृति की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रभावी कार्य-संस्कृति, वस्तुतः संगठन के कार्यों के कुशल संपादन में संलग्न मानव शक्ति की दिग्दर्शक एवं ऊर्जा की अक्षय स्रोत मानी गयी है। लोकहितकारी नीतियों के निर्माण एवं उनके क्रियान्वयन के द्वारा श्रेष्ठ एवं सफल लोकतंत्र की ओर सतत अग्रसर, भारत जैसे विशाल एवं समन्वित विविधता वाले देश के लिए सरकारी एवं निजी, दोनों ही संगठनों हेतु प्रभावी एवं शुचितायुक्त कार्य-संस्कृति की अत्यधिक आवश्यकता है। संगठनों की कार्य-संस्कृतियों में श्रेष्ठ भारत के निर्माण हेतु अपेक्षित बहु-स्तरीय प्रयासों में प्रतिबद्धता तथा पारदर्शिता, समय की मांग है। विशेष कर, सरकारी संगठनों की कार्य-संस्कृतियों में, निर्धारित कार्यों को समय से, एवं निष्पक्ष तथा पारदर्शी ढंग से पूर्ण करते हुए जन-सेवा एवं राष्ट्र के नव-निर्माण हेतु अहम जिम्मेदारी का समावेश किया गया है।

विगत वर्षों में कतिपय सरकारी संगठनों की कार्य-संस्कृति की प्रभावकारिता पर कई दोषों ने ग्रहण लगा दिया, जिनमें जनहित पर स्व-हित को वरीयता, निर्धारित कर्तव्यों के प्रति उदासीनता, निर्धारित कार्य-संस्कृति से विपथन, कार्य संपादन में पारदर्शिता की कमी, प्राप्य पारिश्रमिक से इतर-अपेक्षाएं एवं येन-केन-प्रकारेण इनकी पूर्ति करना, तथा जन-सेवा के प्रति असंवेदनशीलता इत्यादि शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि कार्य-संस्कृति, सम्बंधित संगठन तथा उसकी मानव शक्ति को प्रभावित करती है और यह स्वयं भी उससे प्रभावित होती है। इसलिए, किसी संगठन की विद्यमान कार्य-संस्कृति में, उस संगठन के नेतृत्वकर्ता की वजह से समय-समय पर बदलाव होता है एवं कार्य संस्कृति का क्रियान्वयन भी अत्यंत प्रभावी बन जाता है। इसी क्रम में, यह कहना अनुचित नहीं होगा कि कार्य-संस्कृति एवं इसके प्रभावी क्रियान्वयन में समय-समय पर आये दोष, कहीं न कहीं, नेतृत्वकर्ता की दोषपूर्ण कार्य शैली एवं उसकी विफलता की द्योतक हैं। वहीं ऐसे भी दृष्टान्त मिलते हैं, जहाँ कि निष्प्राण संगठन, कुशल एवं प्रभावी नेतृत्व की संजीवनी से श्रेष्ठ लक्ष्य प्राप्त करने में समर्थ हो जाते हैं।

किसी संगठन एवं उसकी कार्य-संस्कृति की सफलता हेतु कुशल, शुचिता पूर्ण, निर्विवाद, सत्यनिष्ठ, निर्भय, संकल्पित, प्रतिबद्ध एवं प्रभावपूर्ण नेतृत्व की अनिवार्यता जगजाहिर है। इसी प्रकार, सरकारी संगठनों की कार्य-संस्कृति में आये दोषों को कुशल एवं प्रभावी नेतृत्व के द्वारा निर्मूल करते हुए लोकहित को सर्वोपरि मानकर, राष्ट्र के नव-निर्माण एवं श्रेष्ठ भारत के लक्ष्य की प्राप्ति में, निर्धारित कर्तव्यों के निर्वहन के द्वारा अमूल्य योगदान दिया जा सकता है। वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी का अप्रतिम योगदान है-कार्यों को डिजिटल एवं ऑनलाइन माध्यम से संपन्न करना। संगठन के कार्य के प्रत्येक क्षेत्र एवं स्तर पर डिजिटलीकरण एवं नवाचार के कारण, संगठन के कार्यों के संपादन में निरंतर गति एवं पारदर्शिता बढ़ रही है। इसकी वजह से संगठन के प्रत्येक स्तर पर, निर्धारित कर्तव्यों के निर्वहन में उदासीनता एवं विफलता का समुचित आँकलन करते हुए जवाबदेही के निर्धारण में भी सुगमता हो रही है। इसके अतिरिक्त, नेतृत्व कौशल एवं इसकी प्रभावकारिता में वृद्धि होने के साथ-साथ, संगठनों को लोकहितार्थ, प्रतिबद्ध एवं संवेदनशील बनाने हेतु पुनर्जीवित किया जा सकता है। इसी के साथ, आशा की जा सकती है कि आने वाले समय में प्रत्येक संगठन अपनी कुशल एवं प्रभावपूर्ण कार्य-संस्कृति को श्रेष्ठ नेतृत्व के द्वारा क्रियान्वित करेंगे एवं हर संभव स्तर पर, बहुमुखी विकास के चरम की ओर अग्रसर नव-भारत को अखिल विश्व पटल पर गौरवान्वित करेंगे।

- कोई भी ऐसा व्यक्ति एक अच्छा नेता नहीं बन सकता, जो सारा काम खुद करना चाहे और खुद सारे काम का श्रेय लेना चाहे।
- कोई भी भेड़ के नेतृत्व वाले शेरो की सेना से नहीं डरेगा बल्कि शेर की अगुवाई में भेड़ों की सेना से सब डरेंगे।
- नेतृत्व एक ऐसी कला है जिससे आप कोई भी काम बड़ी आसानी से किसी से भी करवा सकते हैं।
- पीछे से नेतृत्व करना और दूसरों को सामने रखना, खासकर तब जब आप अच्छा कर रहे होते हैं, नेतृत्व की सबसे बड़ी गुणवत्ता है।
- समय चीज़ों को नहीं बदलता बल्कि पहल और साहस के साथ किया गया नेतृत्व चीज़ों को बदलता है।
- एक नेता की गुणवत्ता उनके द्वारा निर्धारित मानकों से पता चलती है।
- सच्चा नेतृत्व दूसरों का सफलता के लिए मार्गदर्शन करना है, ये सुनिश्चित करें के हर कोई अपना सर्वश्रेष्ठ काम कर रहा है।

मैं फिर पूजी जाऊँगी

सुशील कुमार श्रीवास्तव
निदेशक,
प्रशासन/अप्रत्यक्षकर
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.),
लखनऊ

आने दो नवरात्रों को, मैं फिर पूजी जाऊंगी,
हाथ बढ़ा राखी बाँधूंगी, फिर मैं दीप जलाऊंगी।

कभी बना के राधा मुझको, झूला सबने झुला दिया,
कभी रूप सीता का धर के, अग्नि में फिर जाऊंगी।

उर्मिल कौशल्या बन के, बरसों राह निहारूँगी,
नहीं चला जो वश मेरा तो, चंडी मैं बन जाऊंगी।

मेरी 'न' को 'न' न समझा, न ही मेरी रूह को देखा,
किया विरोध जो मैंने तो, उसने मुहँ पर एसिड फेंका।

निर्लज्ज हो गयी धरा, माँ भी बिकी बजारों में,
भूख प्यास का खेल है सारा, इज़्ज़त वाली कारों में।

कौन यहाँ पहचाने किसको, तन का खेल हज़ारों में,
कल को मौका फिर आएगा, फूल चढ़ेंगे त्योहारों में।

क्या छोटे क्या बड़े कहेंगे, सबने बजारू बना दिया,
नहीं बनी गर बात तो सबने, मिलकर हमें जला दिया।

दूसरों की तो बात अलग थी, घर वालों ने भुला दिया,
सौदा करके राख़ का मेरी, सुबह को चूल्हा जला दिया।

देख लिया सारे चेहरों को, मैं फोटो बन जाऊंगी,
आने दो नवरात्रों को, मैं फिर पूजी जाऊंगी।

बचपन

स्वाति सिंह
पुत्री श्री अशोक नारायण सिंह
वरिष्ठ लेखाकार
कार्या-म.ले.(ले.एवं ह.) II, उ.प्र.,
शाखा-लखनऊ

लोगों की भीड़ देखकर माँ के आँचल में छिपता था,
रात के अंधेरों में रोशनी की तलाश करता था
वह बचपन मेरा भले मासूमियत में गुजर गया,
मगर अब लगता है,
वह डरपोक बच्चा ही कितना अच्छा था।

दादी की कहानियों में नींदे दिलवाई थी
पापा ने दिल की सारी ख्वाहिशें पूरी करवाई थी।
दुनियादारी तब भले ही समझ नहीं आती थी
मगर अब लगता है,
वह नासमझ बच्चे की नासमझी ही सबसे प्यारी थी।

शौक था माँ के हाथों से खाना खाने का,
माँ से रोज दिनभर की कहानियाँ सुनने का,
वो ज़िंदगी के तौर-तरीकों से भले ही अनजान था
मगर अब लगता है कि
समाज के जंजाल से अनजान
वो बच्चा कितना सच्चा था।

अब तो रोशनी में भी अंधेरों को ढूंढ़ता हूँ मैं
जिस माँ से कुछ छुपाता न था
अब उससे ही छिप छिप कर रोता हूँ मैं
बंदिशें उतनी ही है,
बचपन में ज़िंदगी जितनी बेखौफ जी है
बचपन में ज़िंदगी जितनी आज़ाद जी है।

दोषी कौन?

अतुलेश रंजन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा,
लखनऊ

यह कहानी एक सत्य घटना से प्रेरित है तथापि इसका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं है।

एक छोटे से शहर में स्थित भारत-सरकार के एक कार्यालय में एक कर्मचारी मोहन सिंह लगभग 20 वर्ष से अधिक समय से निष्ठापूर्वक अपनी सेवायें दे रहा था। एक दिन अचानक उसके चचेरे भाई राम सिंह का गोंडिया शहर (महाराष्ट्र) से फोन आया और चाचीजी की मृत्यु का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ। परन्तु कार्यालय में कार्य की अधिकता के कारण उसके उच्च अधिकारी ने उसे तत्समय 'मृत्यु समारोह' में शामिल न होने की सलाह एवं आज्ञा दी। मोहन ने भी निष्ठापूर्वक मन मसोसकर अपने चचेरे भाई को आने में असमर्थता बताते हुए सामाजिक दायित्व न निभाने के लिए क्षमा माँगी।

समय बीतता गया, कार्यालय एवं घर-परिवार के कार्यकलापों में व्यस्तता चलती रही, इसी बीच राम सिंह ने मोहन को बताया कि मई माह में उसकी माताजी की बरसी का कार्यक्रम करने की योजना है और आपको उसमें अवश्य सम्मिलित होना होगा, तदनुसार आप अपना कार्यक्रम बना लीजिये।

मोहन सिंह को भी मई माह का समय उचित प्रतीत हुआ क्योंकि उस समय बच्चों के भी ग्रीष्मकालीन अवकाश होते हैं एवं कार्यालय में भी सूचना देकर तीन माह पूर्व जाने के कार्यक्रम हेतु समय निकाला जा सकता है। अतः उसने अपने उच्च अधिकारी की सहमति से तीन माह पूर्व मई माह में एक सप्ताह का अवकाश स्वीकृत करवा लिया एवं परिवार सहित गोंडिया शहर के लिए सम्बंधित स्टेशनों से आने-जाने का आरक्षण करवा लिया।

परन्तु प्रस्थान के समय से एक दिन पूर्व अचानक कार्यालय के मुख्यालय से मोहन सिंह के उच्च अधिकारी के पास किसी कार्य की जाँच के आदेश आये (जो कि एक कल्पित व्यक्ति के शिकायत पत्र पर आधारित थे) एवं किसी एक कर्मचारी को सम्बंधित फाइलों के साथ सोमवार को मुख्यालय उपस्थित होकर जाँच करवाने के निर्देश दिए गए थे। उच्च अधिकारी को उस कार्य हेतु पूरे कार्यालय में मोहन सिंह ही सर्वोच्च विश्वसनीय एवं निष्ठावान लगा, अतः उसने मोहन सिंह को मुख्यालय जाने हेतु आग्रह के साथ आदेश दिया। क्योंकि अधिकारी को मोहन के अवकाश व गोंडिया के कार्यक्रम के बारे में याद था इसलिए उसने मोहन का अवकाश रद्द नहीं किया एवं इस बात की स्वतंत्रता दी कि वह अपना परिवारिक कार्यक्रम यथावत रखते हुए अवकाश स्थल से सीधे मुख्यालय, नियत समय पर पहुँचकर जाँच कार्य पूर्ण करवाए तथा जाँच कार्य पूर्ण होने के पश्चात बचे हुए अवकाश का उपयोग करते हुए अपने परिवार को लेकर वापस आ सकता है।

यहाँ फिर कर्मचारी की, कार्यालय के प्रति निष्ठा, उसके सामाजिक दायित्व के आड़े आ गई और इस तारतम्य में उसने तत्काल रविवार के दिन का नागपुर से मुख्यालय तक, किसी अन्य ट्रेन/प्लेन में आरक्षण न होने के कारण एकमात्र उपलब्ध विकल्प, निजी विमान में टिकट आरक्षित करवा लिया।

तत्पश्चात मोहन सिंह ने मुख्यालय ले जाने वाली जाँच से सम्बंधित फाइलों हेतु सम्बंधित अनुभाग से संपर्क किया, परन्तु यह क्या ये तो 7-8 फाइलें थी, लगभग 8 किलोग्राम से ऊपर के वजन की। मोहन का मस्तिष्क शून्य सा हो गया क्योंकि उसे अपने डॉक्टरों के निर्देश याद आ गए कि उसे जीवनभर 2-3 किलो से अधिक का सामान नहीं उठाना है और न ही किसी प्रकार का मानसिक या शारीरिक तनाव/दबाव लेना, क्योंकि यह आपकी दूसरी जिन्दगी है, बहुत संभल कर रहना होगा।

यहाँ उस घटना का जिक्र करना अनिवार्य होगा कि कुछ वर्षों पूर्व किसी दवा की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप मोहन की तबियत अचानक खराब हो गई थी और उदर के अन्दर किसी नस के फटने के कारण अत्यधिक रक्तस्राव (लगभग 90 से 95 प्रतिशत तक) हो गया था। उसके शरीर के मुख्य अंग- किडनी, यकृत, दिल व अन्य लगभग मृतप्राय हो गए थे, सिर्फ और सिर्फ मस्तिष्क ही कार्य कर रहा था, उसकी हालत देखकर डॉक्टरों के भी हाथ-पैर फूल गए थे। मरीज को ठीक करने का एकमात्र विकल्प गहन शल्यचिकित्सा ही था। अतः सभी डॉक्टर हिम्मत करके गहन शल्यचिकित्सा कार्य में व्यस्त हो गए, और 12 घंटे के अथक परिश्रम के पश्चात ऑपरेशन सफल हुआ, परन्तु यह भी दुःखद था कि अत्यधिक रक्तस्राव एवं आँतों में रक्त फैलने से संक्रमण होने के कारण बीच से आँतों का संक्रमित हिस्सा पूर्णतः काटकर अलग करना और आँतों के दोनों भागों को पुनः सिलकर जोड़ना पड़ा। सफल ऑपरेशन के बाद भी लगभग 3 दिनों तक मोहन को होश न आने के कारण डाक्टर्स व परिजन एवं मित्रजन सभी बहुत चिंतित थे, तभी 3 दिनों पश्चात रात्रि 9 बजे उसके शरीर में कुछ हलचल हुई अर्थात उसे हल्का होश आया जिससे सबने चैन की साँस ली।

उसके इस उपचार में लगभग 27 बोतल रक्त, 4 बोतल रक्त प्लाज्मा, अनेक बोतल ग्लूकोज एवं अन्य बहुत सी दवाइयाँ/इंजेक्शन प्रयोग में आये तथा 17 दिनों के पश्चात उसे अस्पताल से डिस्चार्ज किया गया। परन्तु लगता था कि मोहन का अच्छा समयकाल अभी नहीं आया था, क्योंकि ऑपरेशन के बाद भी बहुत सी जटिलतायें थी एवं लगभग 15 दिनों के बाद उसके 36 टांको से रक्तस्राव व मवाद आना शुरू हो गया और शरीर के अंदरूनी हिस्सों में भी संक्रमण बुरी तरह

बढ़ रहा था। 7-8 माह के अंतराल पर छोटी बड़ी अनेक सर्जरी होने के उपरांत भी हालत न सुधरने पर सभी हितैषियों की सलाह पर मोहन को एक बड़े शहर के अच्छे अस्पताल में इलाज के लिए जाना पड़ा तथा वहाँ पर 1.5 से 2 साल के अंतराल पर 4-5 मेजर सर्जरी करवानी पड़ी एवं मासिक 'मेडिकल फॉलोअप' किया गया, तब जाकर उसकी तबियत में सुधार हुआ और वह स्वस्थ हो सका, परन्तु डाक्टरों ने उसे निर्देश दिये कि यह आपकी दूसरी जिंदगी है अतः आपको बहुत परहेज से जीवन व्यतीत करना है अर्थात जीवन पर्यन्त शुद्ध व सादा घरेलु भोजन करना, 2-3 किलोग्राम से अधिक वजन का सामान न उठाना तथा मानसिक व शारीरिक तनाव न लेने से बचना इत्यादि। इसके अतिरिक्त आपकी मेडिकल केस हिस्ट्री के जानकार इस अस्पताल के डाक्टर रेड्डी व उनकी टीम ही हैं, अतः अभी मासिक/त्रैमासिक 'मेडिकल फॉलोअप' इसी अस्तपाल में करना होगा। यही सब बातें मोहन के दिमाग में चलचित्र की तरह घूम रही थीं, परन्तु वाह रे निष्ठा! उसने सब कुछ भूल कर सभी फाइलें उठाई और अपने वस्त्र व कुछ अन्य सामान हटाकर उनकी जगह बैग में सब फाइलें रखकर गन्तव्य की ओर प्रस्थान कर गया।

मोहन ने नियत समय पर मुख्यालय पहुँचकर जाँच-कार्य करवाना प्रारम्भ कर दिया, जो कि सोमवार से शुक्रवार सायंकाल 4 बजे तक चला, और जाँच में शिकायत झूठी पायी गयी एवं कार्यालय कार्य में कोई भी तथ्य गलत नहीं पाया गया। तत्पश्चात मोहन को जैसे ही जाने की अनुमति मिली उसने समय न गवांते हुए तुरंत ही मुख्यालय स्टेशन से गंतव्य स्थान हेतु टिकट बुक करवाने का प्रयास किया। परन्तु अथक प्रयास के पश्चात उसे एक निजी एयरलाइन्स में नागपुर स्टेशन तक की ही, सिर्फ एक इकॉनामी क्लास की सीट ही खाली दिखाई दी, उसने तुरंत सीट बुक कर दी। रात्रिकाल 9.30 बजे वह नागपुर एयरपोर्ट पहुँचा और वहाँ से रेलवे स्टेशन 11.45 बजे रात्री में पहुँच कर ट्रेन से भूखे-प्यासे ही गोंडिया शहर, मध्यरात्रि में लगभग 3.30 बजे पहुँच गया। और 4.30 घंटे बाद प्रातःकाल 8.00 बजे परिवार को लेकर गोंडिया से नागपुर होते हुए अपने कार्यालय जनपद पहुँच गया तथा कार्यालय में सोमवार को रिपोर्ट करके सभी फाइलें सम्बंधित अनुभाग के सुपुर्द कर दी।

अब आगे मोहन ने, अपने उसी उच्च अधिकारी द्वारा पूर्व में दिए गए आश्वासन के आधार पर अपना यात्रा भत्ता बिल- कार्यालय जनपद से गृह-जनपद वाया नागपुर, प्रस्तुत किया, परन्तु उच्च अधिकारी ने कार्यालय में किसी प्रकार का आरोप न लगे अथवा विवाद उत्पन्न न हो, कि उसने अपनी विशिष्ट विवेकाधिकार शक्ति का दुरुपयोग अपने विश्वासपात्र कर्मचारी के पक्ष में किया है, इस कारण नियमों के अनुरूप निर्णय लिया व नियमों का हवाला देते हुए, बिल में क्लेम की गई यात्रा भाड़ा धनराशि को कार्यालय जनपद से मुख्यालय आने/जाने तक ट्रेन भाड़े को सीमित कर बिल पारित कर भुगतान कर दिया, जिससे मोहन को लगभग रुपए 36 हजार लगभग का नुकसान हो गया। जिसे उसने स्वीकार कर लिया, परन्तु उस निष्ठावान कर्मचारी के मन में एक सवाल उत्पन्न हुआ कि इस नुकसान के लिए दोषी कौन?

उपरोक्त जाँच कार्य में उसका कोई सम्बन्ध न होने के बावजूद उसे मानसिक, शारीरिक व धनहानि की परेशानी क्यों हुई? और इस धनहानि की भरपाई कैसे होगी? हाँ, उसने इस पर गहन विचार किया एवं इसका रास्ता निकाल लिया कि उसे प्रत्येक तिमाही पर मेडिकल फॉलोअप के लिए अपने निवास शहर से हैदराबाद जाना पड़ता है और एक विजिट पर लगभग रुपए 9 से 10 हजार का खर्च होता है, तो यदि वह मेडिकल फॉलोअप की नियमित त्रैमासिक विजिट न करें तो उसके नुकसान कि भरपाई हो जाऐगी, फिर उसने वैसा ही किया परन्तु एहतियातन उसने डाक्टर रेड्डी से संपर्क कर, अपना हाल बता कर अपनी जरूरी दवाइयाँ जारी रक्खी, हालाँकि इसके लिए उसे अपने डाक्टर से डाँट खानी पड़ी और उसे निर्देश मिले कि बिना शारीरिक जाँच के दवाइयाँ, उसे अपने रिस्क पर दी जा रही हैं एवं कुछ अनिष्ट होने पर डॉक्टर की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। परन्तु मोहन ने प्रभु का स्मरण करते हुए अपनी संकल्पशक्ति को मजबूत किया और यदि छोटी-मोटी परेशानी आयी भी तो उसकी परवाह नहीं की, न ही परिवार वालों न ही अन्य किसी को बताया, तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने लगा।

अब प्रश्न यह उठता है कि उपरोक्त कहानी में वास्तव में दोषी कौन था?

मोहन सिंह - उसने तो पूर्व स्वीकृत अवकाश होने के उपरांत भी कार्यालय हित में निष्ठापूर्वक अपना कार्य किया।

उच्चअधिकारी - उसने विवाद से बचते हुए कार्यालय के हित में, विशिष्ट विवेकाधिकार शक्ति का प्रयोग न करते हुए, नियमों के अनुरूप निर्णय लिया।

मुख्यालय - उसने कार्यालय नियमों के अंतर्गत अपना कार्य किया।

कल्पित शिकायतकर्ता - उसने एक झूठी शिकायत से कार्यालय के समस्त कार्यतंत्र को परेशान किया और मोहन सिंह व्यक्तिगत रूप से परेशान हुआ। यही कल्पित व्यक्ति व उसकी झूठी शिकायत ही इस सारे प्रकरण हेतु जिम्मेदार है।

सार यह है कि हमें ऐसे प्रयास करने चाहिए जिससे झूठी शिकायतों एवं कल्पित मक्कार व्यक्तियों का तिरस्कार व बहिष्कार हो सके और समाज का कोई भी निर्दोष व्यक्ति अनावश्यक परेशान न हो।

अधिकांश मनुष्यों में न्याय के प्रति प्रेम इस भय के कारण होता है कि उन्हें अन्यायपूर्ण दंड न भुगतना पड़े। शक्तिरहित न्याय प्रभुत्वहीन होता है, न्यायरहित प्रभुत्व अत्याचारपूर्ण होता हैं। एक सीमा के आगे न्याय भी अन्यायपूर्ण बन जाता हैं। केवल न्याययुक्त व्यक्तियों के कार्य उनकी शाख में मधुर गंध देते है और फूल की तरह खिलते हैं। उदार होने के पहले न्यायपूर्ण बनिये, भले ही आसमान गिर पड़े, परन्तु न्याय किया जाना चाहिए। न्याय पक्ष, मित्रता और रिश्तेदारी को अस्वीकार करता हैं और इसलिए उसका प्रतिनिधित्व एक अंधे व्यक्ति के रूप में किया जाता हैं। परमात्मा की चक्की धीरे परन्तु निश्चित पीसती हैं।

आलोचना एवं साहित्य

आभा पांडे
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ
शाखा-प्रयागराज

आलोचना का अभिप्राय है ''सम्यक निरीक्षण'' अंग्रेजी में इसे क्रिटिसिज्म भी कहते हैं। सर्वप्रथम सर्जना का काम होता है फिर आलोचना होती है। आलोचना का कार्य किसी कृत के दोष की विवेचना करना ही नहीं होता है जैसा कि रामधारी सिंह दिनकर जी ने लिखा है कि लोग समझते हैं कि आलोचना सीखने की चीज है, गलत है। यह कार्य जन्मजात है जैसे किसी भी साहित्य का कृतित्व। वहीं डॉक्टर नगेंद्र आलोचना को ललित साहित्य का प्रमुख अंग भी मानते हैं। इस सन्दर्भ में उनका तर्क है कि कवि कथाकार और आलोचक की सर्जना क्षमता में मात्रा और साधन उपकरण का ही भेद अधिक है। प्रकृति का भेद उतना नहीं है, अपितु कविता, उपन्यास या नाटक की ही तरह आलोचना भी सर्जना ही है। जो अनुभूति कवि को, कविता सर्जना करते समय होती है उसी की अभिव्यक्ति आलोचक, अपनी आलोचना के माध्यम से करता है।

इस प्रकार केवल दंभ को अंगीकार कर किसी की आलोचना नहीं की जा सकती। मारक समीक्षाएं करके, किसी भी कृतिकार की उत्कृष्टता पर विराम नहीं लगाया जा सकता। यदि ऐसा कर पाना किसी भी आलोचक के लिए संभव होता तो आज कामायनी, राम की शक्ति पूजा, गोदान जैसी रचनाओं का महत्व ही खत्म हो गया होता।

आलोचना को प्रायः तीन चरणों देखा जाता है- विषय बोध, व्याख्या विश्लेषण और मूल्यांकन, अर्थात पहले अध्ययन फिर उसके मूल भाव पर विचार तदुपरान्त व्याख्या और विश्लेषण किया जाये तभी सार्थक आलोचना बन पायेगी एवं वही आलोचना पूर्ण होती है जो निष्पक्ष हो। टी.एस. इलियट ने एक जगह लिखा है कि आलोचक को व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों तथा विभिन्न धारणाओं से पृथक होना चाहिए।

हिन्दी आलोचना का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से होता है। **'कविवचन सुधा', 'आनन्द कादंबिनी', 'सार-सुधानिधि'** तत्कालीन पत्रिकाओं के माध्यम से भारतेन्दु, प्रेमधन, बालकृष्ण भट्ट आदि लेखकों ने संपादकीय लेख, पुस्तक परिचय, टिप्पणियों आदि के रूप में ही हिन्दी आलोचना के प्रथम चरण का आरम्भ किया, द्विवेदी युग में शुक्ल-पूर्व समीक्षा का पदार्पण हुआ। सरस्वती के माध्यम से परवर्ती आलोचको के लिए पृष्ठ भूमि बनी। मिश्र बन्धुओं और पदमसिंह शर्मा के बीच देव बिहारी द्वंद चला, जिससे हिंदी आलोचना में तुलना और खंडन-मंडन की प्रवृति विकसित हुई जिसमें भाव पक्ष और कला पक्ष के सूक्ष्म विवेचना को प्रोत्साहित किया।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के सर्वप्रथम मौलिक और प्रौढ़ आलोचक हैं तुलसी के बाद लोक मंगल का, जो सिद्धान्त उन्होंने प्रतिपादित किया, उसका समर्थन मार्क्सवादियों ने भी किया है जबकि कुछ आलोचकों ने तो **'कामायनी'** को भी पलायनवादी कृति घोषित किया है। डाक्टर नगेंद्र ने लिखा है कि रामचन्द्र शुक्ल जैसे आलोचक किसी भी आधुनिक भारतीय भाषा में नहीं है। शुक्ल जी ने तुलसी की महत्ता को स्थापित किया, तो महावीर जी ने कबीर के मर्म को उजागर किया दोनों की दृष्टि साहित्य के प्रति उदारवादी व वैज्ञानिक ही रही है। वे साहित्य को जीवन का प्रमुख अंग मानते हैं। इन दोनों की समीक्षा में किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह दिखायी नहीं देता है। वे साहित्य को सामान्य जन से अलग नहीं मानते हैं।

शुक्लोत्तर हिन्दी समीक्षा के क्षेत्र में आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी का महत्वपूर्ण स्थान है। वे हिन्दी समीक्षा के सौष्ठववादी धारा के प्रमुख माने जाते है। डॉ. नगेन्द्र ने जो भी आलोचना की है उसमें काव्यालोचना का प्रमुख स्थान है। उसमें छायावादी काव्य रचना प्रमुख है। छायावाद की आलोचना मुख्य रूप से शास्त्रीय, शोषवादी, मनोवैज्ञानिक समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक सैद्धांतिक शोधपरक विषयों की प्रमुखता नहीं रही है। डॉ. नगेन्द्र की (रससिद्धांत) में इनकी समीक्षात्मक प्रतिभा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसी क्रम में हिन्दी के शीर्षस्थ आलोचक गंगाप्रसाद पाण्डेय का नाम भी आधुनिक छायावादी आलोचको में प्रमुख स्थान रखता है। छायावाद के प्रमुख स्तंभों के संदर्भ में उनकी आलोचनात्मक पुस्तकों **'प्रसाद और कामायनी', 'महाप्राण निराला'** व **'महीयसी महादेवी'** को ही आधार बनाकर आधुनिक आलोचकों की आलोचना की है। इसी क्रम में शिवमंगल सुमन जी ने लिखा है 'अगर गंगाप्रसाद पाण्डेय की इन पुस्तकों का अध्ययन नहीं किया गया तो छायावाद की आलोचना संभव नहीं है।' डॉक्टर नामवर सिंह ने भी इस कथ्य को पूर्णतः स्वीकार किया है।

साहित्य और राजनीति के संबंध में डाक्टर सिंह ने लिखा है कि जागरूक कवि अपने कर्तव्य में सतर्कता के साथ राजनीतिक विषयों पर कविता न लिखते हुए भी अपनी प्रत्येक रचना को एक निश्चित राजनीतिक अर्थ दे देते हैं। समकालीन साहित्यक पहल पर, नए विचारों की उत्पत्ति के साथ, नारी एवं दलित केंद्रित साहित्य की रचनाओं में प्रमुख कार्य किया जा रहा है। इस प्रकार दलितों के सामाजिक उत्थान पर कई प्रकार की रचनाएं समाज के मध्य आई जिसकी आलोचनाएं भी की गई। इसी प्रकार नारी विमर्श की रचनाओं ने उस समय पर गहरा प्रहार भी किया जिस पर अभी तक साहित्यिक रचनाओं का पूर्ण वर्चस्व रहा है।

समकालीन हिंदी आलोचना अब अधिक जटिल और सर्वव्यापी हो गई है। कुछ आलोचकों की भाषा अनुवाद की भाषा लगती है। अब तो आलोचना में अंग्रेजी शब्दों का उपयोग भी होने लगा है। हमें तो आवश्यकता है रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास वर्मा, गंगा प्रसाद पांडे, विजय नारायण देव साही और नामवर सिंह की सहज संवेदनशील और अर्थपूर्ण भाषा की। वैसे भी समीक्षा का अर्थ पहेली बुझाना या रहस्यवाद पैदा करना नहीं है। यहाँ तो रामदेव जी का आदर्श होना चाहिए ''बात बोलेगी, हम नहीं''। भेद खोलेगी बात ही।

इंतज़ार

पंकज मोहन जायसवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्या-निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, लखनऊ

अरे लक्ष्मी आज मन कुछ अजीब-सा हो रहा है - शुक्ला जी ने सिगरेट के धुएं को हवा में छोड़ते हुये अपनी पत्नी से कहा। शुक्ला जी को लोग आर.एन. शुक्ला के नाम से जानते थे हालांकि उनका नाम रामनाथ शुक्ला था जो कि सिर्फ सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होता था। शुक्ला जी भेल जैसी नवरत्न कंपनी से रिटायर्ड थे और दिल्ली के एक पॉश इलाके में तीन कमरों के फ्लैट में सपत्नीक रहते थे। हाथों की सलवटों और चेहरे की झुर्रियों से ये अनुमान लगाना कठिन न था कि शुक्ला जी ने अब तक सत्तर बसंत देख लिए होंगे।

जिंदगी के इस पड़ाव पर आने के बाद भी दो चीजों का साथ शुक्ला जी ने नहीं छोड़ा था या यूँ कह लीजिए कि इन्हीं दो चीजों ने शुक्ला जी का साथ नहीं छोड़ा था। एक तो इनकी धर्मपत्नी लक्ष्मी थीं और दूसरी इनकी युवावस्था से साथी सिगरेट थी। सिगरेट से गहरी दोस्ती का कारण ये था कि शुक्ला जी हकीकत में विश्वास करते थे, कल्पनाओं और कहानियों में उन्हें ज्यादा दिलचस्पी न थी। इंजीनियरिंग के विद्यार्थी होने के समय जब उन्हें ज्यादा मानसिक तनाव होता था तो वे एक सिगरेट सुलगा लेते थे और अपनी परेशानियों को एक पल में धुएं में उड़ता हुआ देखते थे। बस तभी से अपनी परेशानियों और समस्याओं को धुएं में उड़ाना उनकी जिंदगी का हिस्सा बन गया। अब इसे संयोग कहें या कुछ और, न परेशानियों ने शुक्ला जी का साथ छोड़ा और न शुक्ला जी ने सिगरेट का। अपनी पत्नी के कैंसर के इलाज से लेकर, अपने पैर के फ्रैक्चर का ऑपरेशन कराने के समय, अगर किसी ने पूरी शिद्दत से शुक्ला जी का साथ दिया था तो वो सिगरेट और उनकी पत्नी ही थीं। हालांकि आज सिगरेट के कश से जब उनकी बेचैनी का समाधान न हुआ, तो उन्होंने अपनी पत्नी को आवाज लगाई थी। जिस उम्र में श्रीमती शुक्ला के हाथ में पोते पोतियों को होना चाहिए उस उम्र में वो अपने पति के लिए अपने हाथो में गरम-गरम चाय लेकर हाजिर थीं। 'क्या हुआ ऐसी कौन सी बात है जो मन अजीब हो रहा आपका? श्रीमती शुक्ला ने चाय का प्याला शुक्ला जी के हाथ में थमाते हुये पूछा। ''पता नहीं, हमारा बेटा मेरी अर्थी को कंधा देने आएगा या वो भी तुम्हें ही उठाना पड़ेगा''। शुक्ला जी की ये बात सुनकर श्रीमती शुक्ला की आँख से आँसू बहने लगे। खैर मौके की नजाकत को देखते हुये शुक्ला जी पूरी ताकत से, श्रीमती शुक्ला को अपनी बाहों में भरकर बोले - मुझे पूरा भरोसा है कि वो जरूर आएगा।

खैर अभी एक ही हफ्ता बीता था कि पता चला शुक्ला जी ने सिगरेट और पत्नी दोनों का साथ छोड़ दिया है। दुनिया का साथ और दुनिया ने उनका साथ तो पहले ही छोड़ दिया था। कुछ मोहल्ले वालों ने मिलकर हिन्दू रीति रिवाज से उनका अंतिम संस्कार कर दिया। लोगों की बातों से पता चला कि उनका इकलौता लड़का, जो दिल्ली से कुछ दूरी पर स्थित नोएडा में एक मल्टीनेशनल कंपनी में जॉब करता था और अपनी पत्नी व दस साल के बेटे के साथ, नोएडा में ही आलीशान फ्लैट में रहता था। लोगों की बातों से, ये भी पता चला की उसे अपने पिता कि मौत का गम है पर कंपनी के जरूरी काम के चलते, मौके पर वो नहीं आ सका। खैर, श्रीमती शुक्ला को अब भी इंतजार था- पता नहीं, अपनी मौत का या अपने बेटे का?''

कार्यालयीन अंग्रेजी-हिन्दी शब्दावली

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी रूपांतरण	अंग्रेजी शब्द	हिन्दी रूपांतरण
Over-assesment	अधिनिर्धारण	Due diligence	सम्यक तत्परता/सजगता
Chief Executive Officer	मुख्य कार्यपालक अधिकारी	Supra	पूर्वोक्त
Functionality	कार्यात्मकता	Infra	निम्नलिखित
Functional efficiency	कार्यात्मक दक्षता	Yardstick	मापदण्ड
Benchmark	मानदण्ड/कसौटी		
Interaction with the auditee personnel	लेखापरीक्षिती कार्मिकों के साथ वार्तालाप		

प्रस्तुतिः बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालयः प्र.म.ले. (लेखापरीक्षा-II), उ.प्र., लखनऊ

प्रकृति से छेड़छाड़

प्रकृति से छेड़छाड़ ये, मानव के क्रियाकलाप,
डायनामाइट आज, कल मानव करेगा संताप।

विस्फोट कर जो आज, पत्थर उछाल रहे हो,
कल करोगे मिट्टी के, खिसकने का अनुताप।

जब पैरों तले न होगी, मिट्टी न ठोस धरातल,
सिर्फ हाथ आयेगा, करने को एक पश्चाताप।

विकास के नाम पर, कर रहे धरती को छलनी,
जननी कहकर तुम, कैसे करते हो ये घोर पाप।

एक विनाश सर्वनाश की, क्यों हो रही तैयारी,
क्यों ले रहे हो, भविष्य अनुजों हेतु अभिशाप।

कल कैसे पाओगे जल, नदी भी गयी जो सूख,
शिव को बुला कौन भगीरथ, दूर करेगा श्राप।

लीना दरियाल 'सत्यम'
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक,
लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
लखनऊ

ज़िंदगी जीने को है

ज़िंदगी जीने को है, जी इसे जीने वाले,
हम भी तो तुझे, रोज़ नहीं मिलने वाले।

क्यों नाराजगी जाहिर करें, किसी से भला,
कौन हमेशा के लिए, हम हैं ठहरने वाले।

चल कर लेते हैं, कुछ नादानियां हम भी,
रोज कहाँ मिलेंगे, यूँ मरते हुए हँसने वाले।

जख्म जो मिले वो, फूल बन जायेंगे,
न मिलेंगे गुलिशतां में, यूँ महकने वाले।

ताबीर खुद 'सत्यम', लिखना जानती है,
ख़्वाब उसके क्या, पढ़ेंगे पढ़ने वाले।

कश्तियाँ उन्ही की, डूबती हैं 'सत्यम',
नहीं होते जो, तूफ़ां में संभलने वाले।

बदलना पड़ेगा

बदलता समय है, अब बदलना पड़ेगा,
प्रगति के चरम पर, खुद चलना पड़ेगा।
आत्म-गौरव बढ़ाने का पल आ गया है,
शक्ति-सामर्थ्य को, अब समझना पड़ेगा।।

भुजाओं में है दम किसके, रोके जो राहें,
करम का धरम सब, हम खिलकर निबाहें।
ओज-संकल्प मन में, फिर भरना पड़ेगा,
कंटकाकीर्ण-पथ पर भी चलना पड़ेगा।।

सद्चिंतन-सुविचारों की स्व-धारा बहेगी,
आदित्य-रश्मियाँ, पग-पग इशारा बनेंगी।
जुगनुओं की रोशनी, कब टिकी है धरा पर,
चाँद-सूरज सा बनकर, अब दमकना पड़ेगा।।

दुर्बलता-निर्भरता, हो रही सब रसातल,
आत्मनिर्भरता बनेगी, अब नूतन धरातल।
पौरुष की धमक से, जग धमकना पड़ेगा,
जहाँ के चमन में, नित चमकना पड़ेगा।।

बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्र.म.ले.(ले.प.-II)
उ.प्र., लखनऊ

राष्ट्र-सेवा का अवसर मिले, जिस तरह से,
निज कर्म-पथ पर, फिर बढ़े उस तरह से।
संग सुचिन्तन-सुकर्मों के रहना पड़ेगा,
वेदनाएं भी आयें, विहस सहना पड़ेगा।।

धराधाम-मंजर, फिर सब अभिराम होंगे,
स्व-विजय के प्रवर्तक, हम अविराम होंगें।
प्रबल डंका, हिन्दोस्तां का बजाना पड़ेगा,
सुविजय-हिन्द मस्तक सजाना पड़ेगा।।

मगन हो गगन, सुमन-अभिन्दन करेगा,
मुदित-मन, अखिल विश्व क्रंदन करेगा।
हिन्दोस्तां का सामर्थ्य, दिखलाना पड़ेगा,
"सर्वे भवन्तु सुखिनः", निभाना पड़ेगा।।

बदलता समय है, अब बदलना पड़ेगा।
प्रगति के चरम पर, खुद चलना पड़ेगा।।
आत्म-गौरव बढ़ाने का पल आ गया है,
शक्ति-सामर्थ्य को, अब समझना पड़ेगा।।

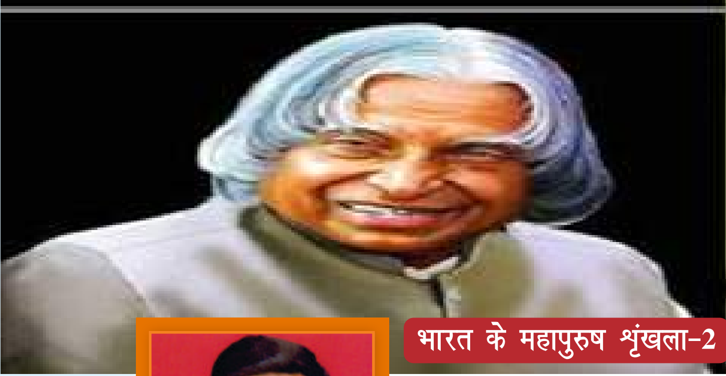

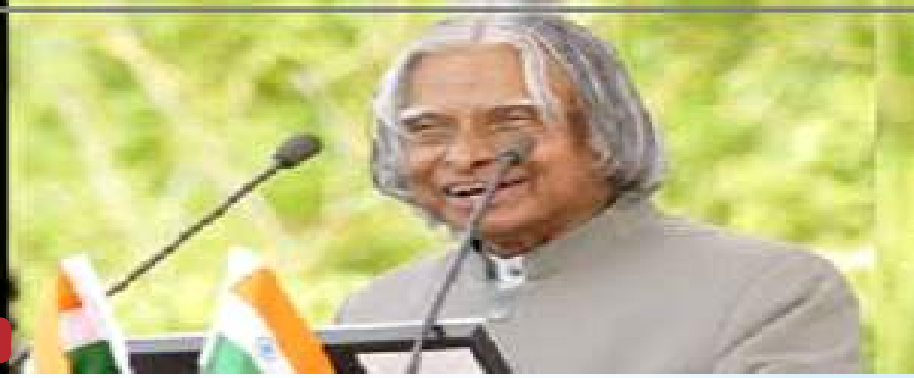

भारत के महापुरुष शृंखला-2

शून्य से शिखर तक

राम जनम राय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

कौन जानता था कि सड़क व गलियों में घूम-घूमकर अखबार बेचने वाला एक बालक देश के शीर्ष पद पर स्थापित हो जाएगा। हाँ, आपने सही पहचाना, मैं उसी बालक यानि अब्दुल कलाम की बात कर रहा हूँ, जिसे कुछ नहीं समझ में आया तो बुरे दौर से गुजर रहे परिवार को सहारा देने हेतु सड़कों और गलियों में अखबार बेचना शुरू कर दिया। यह इनके अदम्य साहस और जुझारूपन को दर्शाता है। इन्होंने परिवार की आर्थिक स्थिति को कभी अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया और दुनिया को दिखा दिया कि मन में लगन हो और कुछ कर गुजरने की चाहत हो तो कोई भी कठिनाई, चाहे कितनी भी बड़ी हो, को पार कर मंजिल तक कैसे पहुँचा जा सकता है।

डॉ. ए.पी.जे. (अवुल पकिर जैनुलाब्दीन) अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को धनुषकोडी, रामेश्वरम में एक तमिल मुस्लिम परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम जैनुलाब्दीन था, जो एक नाविक तथा एक स्थानीय मस्जिद के इमाम थे। उनकी माता का नाम असीम्मा था और वह एक गृहिणी थी। अपने पाँच भाई-बहनों में सबसे छोटे कलाम सदैव अपने परिवार के करीब रहे और हमेशा उनकी मदद करते थे, हालांकि वह पूरी जिदगी अविवाहित रहे। उनके पिता के पास फेरी थी तथा उनके परिवार का पेशा मुख्यतः श्रीलंका से माल ले आना तथा ले जाना था। इसके अलावा, हिन्दू तीर्थयात्रियों को रामेश्वरम से धनुषकोडी, जिससे होकर रामसेतु का मार्ग जाता है, की यात्रा करवाना भी था। परंतु, पाम्बन पुल के बन जाने के बाद, इनके परिवार का काम काफी प्रभावित हुआ तथा उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय होती चली गयी।

डॉक्टर कलाम सदैव देश के युवाओं से जुड़े रहे तथा उनका कहना था कि उन्हें देश के युवा व विद्यार्थियों से बात करना सबसे अच्छा लगता है। युवाओं व विद्यार्थियों के प्रति उनका लगाव और छात्रों में उनकी प्रसिद्धि के कारण ही 2015 में उनकी जयंती को संयुक्त राष्ट्र ने **'विश्व छात्र दिवस'** के रूप में मनाए जाने की मान्यता दी। अपनी लगन और प्रतिभा के कारण वर्ष 2002 में भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए। वह 2002 से 2007 तक भारत के राष्ट्रपति रहे। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को पीपुल्स प्रेसिडेंट के रूप में भी जाना जाता था। हालांकि, 21 में से 20 लोगों की दया याचिकाओं का फैसला करने की निष्क्रियता के लिए उन्हें एक राष्ट्रपति रूप में आलोचित भी होना पड़ा था, जिसमें कश्मीरी आतंकवादी अफ़जल गुरु भी शामिल था, जिन्हें दिसंबर 2001 में संसद हमलों के लिए दोषी पाया गया था। क्या आप जानते हैं कि 1998 में कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. सोमा राजू के साथ अब्दुल कलाम जी ने एक कम लागत वाली कोरोनरी स्टेंट विकसित की थी? जिसे बाद में **"कलाम-राजू स्टेंट"** नाम दिया गया था। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में इन दोनों लोगों ने स्वास्थ्य देखभाल के लिए टैबलेट पीसी भी डिजाइन किया, जिसे **"कलाम-राजू टैबलेट"** नाम दिया गया था।

डॉक्टर कलाम पाँच वक्त के नमाज़ी होने के साथ-साथ, दूसरे धर्मों को भी उचित सम्मान व आदर देते थे। "श्रीमद्‌भगवद्‌गीता" में रुचि के चलते उन्होंने न केवल संस्कृत भाषा सीखा बल्कि सम्पूर्ण गीता का अध्ययन भी किया। इसके अलावा, उन्होंने अपनी पुस्तक **"ट्रांसडेंस माई स्प्रिचुअल एक्सपीरिएंसेज विथ प्रमुख स्वामीजी"** में हिन्दू धर्म के एक अलग पंथ "स्वामीनारायण" से 14 वर्षों तक जुड़े रहे तथा उस दौरान प्राप्त प्रेरणा को अपने पुस्तक में वर्णित किया। उन्होंने अपना दृष्टिकोण उक्त पुस्तक में भी व्यक्त किया कि कैसे विज्ञान और अध्यात्मिकता के संलयन से समाज का विकास हो सकता है।

उन्हें 1997 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान **"भारत रत्न"** सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। भारत के राष्ट्रपति बनने से पहले, उन्होंने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के साथ एयरोस्पेस इंजीनियर के रूप में काम किया था। देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम, प्रक्षेपण यान और बैलिस्टिक मिसाइल प्रौद्योगिकी विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए उन्हें **'मिसाइल मैन ऑफ इंडिया'** नाम की उपाधि दी गई। इसके अलावा, 1998 में, उन्होंने भारत के पोखरण-II परमाणु परीक्षणों में महत्वपूर्ण योगदान भी दिया था। उन्होंने इसरो में भारत के पहले स्वदेशी सैटेलाइट लॉन्च वाहन (एस.एल.वी.) के एक प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में भी काम किया था।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामः पुरस्कार और उपलब्धियाँ

डॉक्टर कलाम के पुरस्कारों और उपलब्धियों की सूची, इतनी लंबी है कि यहाँ छोटे से लेख में उन्हें पिरोना संभव नहीं है। डॉ. कलाम लगभग 40 विश्वविद्यालयों से मानद डॉक्टरेट के प्राप्तकर्ता थे। यद्यपि, कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं :

- 1981 में पद्‌म भूषण

- 1990 में पद्‌म विभूषण
- 1997 में भारत रत्न
- 1998 में वीर सावरकर पुरस्कार
- 2000 में रामानुजन पुरस्कार (अलवरस रिसर्च सेंटर, चेन्नई)
- 2007 में किंग चार्ल्स द्वितीय मेडल (ब्रिटेन रॉयल सोसाइटी)
- 2008 में डॉक्टर ऑफ इंजीनियरिंग (ऑनोरिस कौसा) (नान्यांग तकनीकी विश्वविद्यालय, सिंगापुर)
- 2009 में हूवर मेडल (ए.एस.एम.ई. फाउंडेशन, अमेरिका)
- 2010 में डॉक्टर ऑफ इंजीनियरिंग (वाटरलू विश्वविद्यालय)
- 2011 में मानद सदस्य (आई.ई.ई.ई.)
- 2013 में वॉन ब्रौन पुरस्कार (राष्ट्रीय अंतरिक्ष सोसाइटी)
- 2014 में डॉक्टर ऑफ साइंस (एडिनबर्ग विश्वविद्यालय, ब्रिटेन)

दिनांक 27 जुलाई 2015 को शिलांग, मेघालय में डॉ. कलाम की मृत्यु के बाद, तमिलनाडु सरकार द्वारा उनके जन्म दिवस (15 अक्टूबर) को राज्य भर में **युवा पुनर्जागरण दिवस** के रूप में मनाने की घोषणा की गई। इसके अलावा, राज्य सरकार ने उनके नाम पर **डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पुरस्कार** की स्थापना की। इस पुरस्कार के तहत 8 ग्राम का स्वर्ण पदक और 5 लाख रुपये नगद दिया जाता है। यह पुरस्कार उन लोगों को दिया जाता है, जो वैज्ञानिक विकास, मानविकी और छात्रों के कल्याण को बढ़ावा देने का काम करते हैं।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा लिखी गई प्रमुख पुस्तकें

- इंडिया 2020: ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम (1998)
- विंग्स ऑफ फायर: एन ऑटोबायोग्राफी (1999)
- इगनाइटेड माइंड्स: अनलीजिंग द पॉवर विदिन इंडिया (2002)
- द ल्यूमिनस स्पार्क्स: ए बायोग्राफी इन वर्स एंड कलर्स (2004)
- मिशन ऑफ इंडिया: ए विजन ऑफ इंडियन यूथ (2005)
- बियॉन्ड 2020: ए विजन फॉर टुमोरोज इंडिया (2014)
- गवर्नेंस फॉर ग्रोथ इन इंडिया (2014)
- यू आर बोर्न टू ब्लॉसम: टेक माई जर्नी बियोंड (सह-लेखक: अरूण तिवारी) (2011)
- द साइंटिफिक इंडियन: ए ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी गाइड टू द वर्ल्ड अराउंड अस (सह-लेखक: वाई. एस. राजन) (2011)
- टारगेट 3 बिलियन (सह-लेखक: श्रीजन पाल सिंह) (2011)

डॉक्टर कलाम द्वारा कहे कुछ कथन जो हमेशा प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे

- सपने वे नहीं जो हम सोते हुये देखते है, सपने वे है जो हमें सोने नहीं देते।
- शिखर तक पहुँचने के लिए ताकत चाहिए होती है, चाहे वह माउन्ट एवरेस्ट का शिखर हो या आपका पेशा।
- अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो पहले सूरज की तरह जलना सीखो।
- अंग्रेजी आवश्यक है क्योंकि वर्तमान में विज्ञान के मूल काम अंग्रेजी में हैं। मेरा विश्वास है कि अगले दो दशक में विज्ञान के मूल काम हमारी भाषाओं में आने शुरू हो जायेंगे, तब हम जापानियों की तरह आगे बढ़ सकेंगे।
- अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुन्दर-मन वाले लोगों का देश बनाना है तो, मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते हैं: पिता, माता और गुरु।
- आइये हम अपने आज का बलिदान कर दें ताकि हमारे बच्चों का कल बेहतर हो सके।
- आकाश की तरफ देखिये, हम अकेले नहीं हैं, सारा ब्रह्माण्ड हमारे लिए अनुकूल है और जो सपने देखते हैं और मेहनत करते हैं उन्हें प्रतिफल देने की साजिश करता है।
- इंसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है, क्योंकि सफलता का आनंद उठाने कि लिए ये ज़रूरी हैं।
- इंतज़ार करने वालो को सिर्फ उतना ही मिलता है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते है।
- एक अच्छी पुस्तक हज़ार दोस्तों के बराबर होती है जबकि एक अच्छा दोस्त एक पुस्तकालय के बराबर होता है।
- जीवन में कठिनाइयाँ हमें बर्बाद करने नहीं आती है, बल्कि यह हमारी छुपी हुई सामर्थ्य और शक्तियों को बाहर निकलने में हमारी मदद करती है, कठिनाइयों को यह जान लेने दो कि आप उससे भी ज्यादा कठिन हो।
- आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर आप अपनी आदतें बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देगी।
- आप अपने कार्य से प्यार करें, अपनी कम्पनी से नहीं, क्योंकि आप नहीं जानते कि कब आपकी कम्पनी आपको प्यार करना बंदकर दे।
- अपनी पहली सफलता के बाद विश्राम मत करो क्योंकि अगर आप दूसरी बार में असफल हो गए तो बहुत से होंठ यह कहने के इंतज़ार में होंगे कि आपकी पहली सफलता केवल एक तुक्का थी।
- यदि आप अपनी ड्यूटी को सैल्यूट करोगे तो आपको किसी भी व्यक्ति को सैल्यूट करने की जरूरत नहीं पड़ेगी लेकिन यदि आप अपनी ड्यूटी को पोल्यूट करेंगे तो आपको हर किसी को सैल्यूट करना पड़ेगा।
- जब हमारे हस्ताक्षर, ऑटोग्राफ में बदल जाए तो यह सफलता की निशानी है।
- सफलता की कहानियां मत पढ़ो उससे आपको केवल एक सन्देश मिलेगा। असफलता की कहानियां पढ़ो उससे आपको सफल होने के कुछ आइडियाज (विचार) मिलेंगे।
- मैं एक हैंडसम इंसान नहीं हूँ लेकिन मैं अपना हैंड उस किसी भी व्यक्ति को दे सकता हूँ जिसको मदद की जरूरत है। सुंदरता हृदय में होती है, चेहरे में नहीं।
- एक मूर्ख जीनियस बन सकता है यदि वह समझता है कि वह मूर्ख है लेकिन एक जीनियस, मूर्ख बन सकता है यदि वह समझता है कि वह जीनियस है।
- बारिश के दौरान सारे पक्षी आश्रय की तलाश करते हैं, लेकिन बाज़ बादलों के ऊपर उड़कर बारिश से ही दूर हो जाता है। समस्याएं साधारण होती है, लेकिन आपका दृष्टिकोण, इनमें अन्तर पैदा करता है।

- जिंदगी और समय, विश्व के दो सबसे बड़े अध्यापक हैं। ज़िंदगी हमें समय का सही उपयोग करना सिखाती है जबकि समय हमें ज़िंदगी की उपयोगिता बताता है।
- मेरा यह सन्देश विशेष रूप से युवाओं के लिए है। उनमें अलग सोच रखने का साहस, नये रास्तों पर चलने का साहस, आविष्कार करने का साहस होना चाहिए। उन्हें समस्याओं से लड़ना और उनसे जीतना आना चाहिए। ये सभी महान गुण हैं और युवाओं को इन गुणों को अपनाना चाहिए।
- जब तक भारत दुनिया में अपने कदमों पर खड़ा नहीं है, तब तक हमें कोई आदर नहीं करेगा। इस दुनिया में डर के लिए कोई जगह नहीं है। केवल ताकत ही ताकत का सम्मान करती है।
- हमें युवाओं को नौकरी चाहने वालो की अपेक्षा नौकरी देने वाला बनाना होगा।
- जब कोई राष्ट्र हथियार युक्त देशों से घिरा हो, तो उसे भी हथियार युक्त होना पड़ेगा।

हाल ही में, केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री प्रकाश जावडेकर ने 9 फरवरी 2020 को नई दिल्ली में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की बायोपिक का फर्स्ट लुक जारी किया है। **ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : द मिसाइल मैन** के नाम से एक फिल्म का निर्माण हो रहा है, जो जल्द ही भारत के सिनेमा घरों में प्रदर्शित की जाएगी। इसके पूर्व भी डॉ. कलाम से प्रभावित होकर एक बच्चा अपना नाम 'कलाम' रख लेता है, जिसपर आधारित एक फिल्म "आई एम कलाम" (2011) प्रदर्शित की जा चुकी है।

'कलाम तुझे सलाम'

कोरोना

बनी पाण्डेय
पुत्री आभा पाण्डेय
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.),
लखनऊ, शाखा-प्रयागराज

कोरोना ने सिखा दिया,
कम संसाधनों में जीना,
जनजीवन, प्रकृति, व्यवहार,
सुधारों वरना पड़े विष पीना।

कितनों के घर बार छूटे,
देह दुलार नेह भी छीना,
देवदूत बन, की हिफाजत,
एक कर दिया खून पसीना।

अपनी संस्कृति को पहचानो,
स्वास्थ्य-सुरक्षा, तौर-तरीका,
सब देशों में चमका भारत,
बनाकर कोराना का टीका।

विनय कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

हौसला

उलझनों और कश्मकश में
उम्मीद की ढाल लिये बैठा हूँ,
ऐ ज़िन्दगी तेरी हर चाल के लिए
मैं दो चाल लिये बैठा हूँ।

उलझने हैं बहुत
मगर सुलझा लिया करता हूँ,
मिलेगी कामयाबी
हौसला कमाल लिए बैठा हूँ।

क्यूँ नुमाइश करूँ
अपने माथे पर शिकन की,
ज़िगर में हौसला और
चेहरे पर मुस्कान लिये बैठा हूँ।

और जब लड़ना हो
खुद को खुद से ही,
तब कभी हार कर भी
जीत के लिये तैयार बैठा हूँ।

चल मान लिया
दो चार दिन नहीं मेरे मुताबिक,
गिरेबान में अपने
सुनहरा साल लिये बैठा हूँ।

ये गहराईयाँ, ये लहरे, ये तूफां
तुम्हें मुझे क्या फिक्र,
मैं कश्तियाँ और दोस्त
बेमिसाल लिये बैठा हूँ।

इम्यूनिटी

शैलेन्द्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.),
लखनऊ

कोरोना जब से आया है,
बहुत कुछ गड़बड़ाया है।
जिंदगी जीने के तौर तरीके बदल गए,
चेहरों के मेक-अप, मास्क में ढल गए।
बदल गया लोगों का खान पान भी,
चटखारों से दूर हो गयी है जबान भी।
मिठाई की दुकानों पर खूब बना है माल,
पर बिक्री का ऐसा है हाल।
कि दुल्हन की तरह सजी मिठाईयाँ,
पूछती हैं कब बजेंगी शहनाईयाँ।
कब ग्राहक दूल्हे राजा आएंगे,
और मुझे ले जाएंगे।
दुकानदार भी जैसे सो रहा है,
या अंदर ही अंदर रो रहा है।

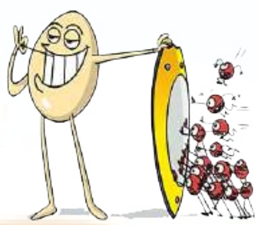

जब एक दिन मैं गया
ऐसी ही एक दुकान पर,
तो दुकानदार मुझसे बोला
मुझे लक्ष्मीपति विष्णु मानकर।
भाई साहब सब ताज़ा है, क्या चाहिये,
कुछ भी, गुलाबजामुन, रसगुल्ला ले जाइये।
आज आप मेरे पहले ग्राहक हैं
तो आपको 25% छूट मिलेगी,
हो सकता है आपके हाथों बिक्री से
मेरी सेलगाड़ी तेज़ी से चलेगी।
आजकल बिक्री लगभग बंद है,
आप जैसे ग्राहक चंद हैं।
ये कहते कहते भरी हो गयी उसकी आवाज,
तो मैंने भी सहानुभूति से उसे बताया इलाज़।
देखो आजकल कोरोना का दौर है,
और हर कही इम्यूनिटी का शोर है।

हर कोई कोरोना को हराना चाहता है,
इसलिए अपनी इम्यूनिटी बढ़ाना चाहता है।
अतः तुम भी बदल लो अपनी मिठाईयों के नाम,
फिर देखना कैसे बिक्री बढ़ती है सुबहो शाम।
इमरती को इम्यूनिटी इमरती बुलाओ,
काजू कतली पर गिलोय कतली का लबेल चिपकाओ।
राजभोग, अब तुलसी राजभोग कहलाएगा,
मोतीचूर का लड्डू अब अश्वगंधा लड्डू हो जाएगा।

लस्सी को काढ़ायुक्त लस्सी बोलो,
और 'इम्यूनिटी माता' की जय बोलकर
सुबह अपनी दुकान खोलो।

टिक्की खिलाने वाला कारीगर
अब काली मिर्च टिक्की खिलाएगा,
पानी के बताशों के पानी में भी
काढ़ा मिलाया जाएगा।
'इम्यूनिटी स्वीट कोर्नर' होगा दुकान का नाम,
और देखना बढ़ जाएँगे तुम्हारे दाम।
फिर देखना तुम्हारी सेलगाड़ी दौड़ेगी
शताब्दी की रफ्तार से,
और मुझको 80% छूट देना
प्यार से, आभार से।

दुकानदार बोला- भाई साहब
आपका सुझाव तो उत्तम है,
पर जैसा आप कह रहे हैं
उसके होने का चान्स कम है।
गिलोय, अश्वगंधा इन सबके मिलाने से
बिगड़ जाएगा मिठाइयों का स्वाद,
और मैं तो हो जाऊँगा, रहा-सहा भी बर्बाद।

मैंने कहा- पगले
गर बदलना चाहता है अपने हाल को,
तो समझ जमाने की आज की चाल को।
आजकल शुगर, शुगर फ्री होती है श्रीमान,
और इंसानियत फ्री, होता है इंसान।
नेताओं में नैतिकता होती है कहीं,
अब तो पॉज़िटिव भी पॉज़िटिव रहा नहीं।

आजकल तो सिर्फ पैकिंग व लेबलिंग का खेल सारा है,
भ्रष्टाचारमुक्त भारत केवल एक नारा है।
इसलिए तुम्हें केवल मिठाइयों के बदलने हैं नाम,
और बढ़ा देने हैं उनके कुछ दाम।
बस, इसी से जनता की इम्यूनिटी बढ़ जाएगी,
और तुम्हारी किस्मत रंग लाएगी।
आजकल, जनता को भी दिखावट, नारे,
पैकिंग व लेबलिंग ही भाते हैं,
और जो ये सब नहीं करते,
वो जमाने से पिछड़ जाते हैं।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
आजादी का अमृत महोत्सव
75
आज़ादी का अमृत महोत्सव
स्वच्छता ही सेवा
75
75
आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी का अमृत महोत्सव

15 अगस्त 2022 को देश की आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण होने जा रहे है। इसी बात को ध्यान में रखते हुये 75वीं वर्षगांठ से लगभग 75 सप्ताह पूर्व, दांडी मार्च की 91वीं वर्षगाँठ पर अर्थात् 12 मार्च 2021 से सम्पूर्ण देश में **आज़ादी का अमृत महोत्सव** मनाया जा रहा है। आज़ादी के अमृत महोत्सव में देश के प्रत्येक राज्य द्वारा देश की अदम्य भावना को प्रदर्शित करने वाले विभिन्न साँस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। ये कार्यक्रम 15 अगस्त 2023 तक जारी रहेंगे।

हम सभी जानते हैं कि 12 मार्च 1930 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने दाँडी मार्च के द्वारा नमक सत्याग्रह की शुरूआत की थी। 12 मार्च 2021 को नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात के 'साबरमती आश्रम' अहमदाबाद से अमृत महोत्सव की शुरूआत 75 किमी. की पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर की।

देश की 75वीं वर्षगाँठ का अर्थ, 75 वर्ष पर विचार, 75 वर्ष की उपलब्धियाँ, 75 वर्ष के कार्य और 75 वर्ष पर संकल्प शामिल हैं, जो स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।

प्रधानमंत्री मोदी जी के अनुसार **आज़ादी का अमृत महोत्सव** यानी आज़ादी की ऊर्जा का अमृत। **आज़ादी का अमृत महोत्सव** यानी स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत। **आज़ादी का अमृत महोत्सव** यानी नए विचारों का अमृत। नए संकल्पों का अमृत। **आज़ादी का अमृत महोत्सव** यानी आत्मनिर्भरता का अमृत।

इसी क्रम में संधान पत्रिका का चतुर्थ अंक **आज़ादी के अमृत महोत्सव** को समर्पित किया गया है। जिसमें 'आज़ादी के 75 वर्षों के 75 विकास सोपान' एवं 'आज़ाद भारत की 75 विभूतियों' का स्मरण किया गया है।

आज़ादी के 75 वर्षों के 75 विकास सोपान

1. भारत की प्रथम औद्योगिक नीति – 1948
2. भारतीय संविधान लागू – 1949
3. भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण – 1949
4. भारत गणराज्य बना – 1950
5. योजना आयोग का गठन – 1950
6. दिल्ली में प्रथम एशियाई खेल – 1951
7. रेलवे नेटवर्क का राष्ट्रीयकरण – 1951
8. भारत की पहली पंचवर्षीय योजना – 1951
9. भारत में प्रथम आम चुनाव – 1952
10. सामुदायिक विकास कार्यक्रम – 1952
11. प्रथम राज्य पुनर्गठन आयोग – 1953
12. भाषायी आधार पर आंध्र प्रदेश पहला राज्य बना – 1953
13. 'इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया' का 'स्टेट बैंक ऑफ इंडिया' नाम से अधिग्रहण – 1955
14. भारतीय जीवन बीमा निगम का अधिग्रहण – 1956
15. प्रथम भारतीय न्यूक्लियर रियेक्टर 'अप्सरा' का निर्माण – 1956
16. भारत ने दशमलव प्रणाली को अपनाया – 1957
17. 'रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन' का गठन – 1958
18. राजस्थान में नागौर में पहली ग्राम सभा का गठन – 1959
19. बाम्बे राज्य से टूटकर गुजरात और महाराष्ट्र राज्य बने – 1960
20. गोवा पुर्तगाली शासन से स्वतंत्र – 1961
21. हरियाणा राज्य बना – 1966
22. हरित क्रांति का प्रारम्भ – 1966
23. चौदह बैंकों का राष्ट्रीयकरण – 1969
24. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की स्थापना – 1969
25. वर्गीज़ कुरियन द्वारा श्वेत क्रांति की शुरुआत – 1970
26. हिमाचल प्रदेश को राज्य का दर्जा – 1971
27. बाघ को राष्ट्रीय पशु का दर्जा – 1972
28. आसाम, मेघालय, त्रिपुरा का पूर्ण राज्य का दर्जा – 1972
29. प्रथम परमाणु परीक्षण – 1974
30. भारत के प्रथम उपग्रह 'आर्यभट्ट' का प्रक्षेपण – 1975
31. सिक्कम 22वाँ राज्य बना – 1975
32. छः बैंकों का राष्ट्रीयकरण – 1980
33. नाबार्ड का गठन – 1982
34. भारत ने पहली बार क्रिकेट विश्वकप जीता – 1983
35. राकेश शर्मा अंतरिक्ष में गये – 1984
36. प्रथम भारतीय महिला बछेंद्री पाल द्वारा माउंट एवरेस्ट पर विजय – 1984

आज़ादी के 75 वर्षों के 75 विकास सोपान

37. गंगा कार्य योजना का प्रारम्भ –1985
38. दल-बदल कानून पारित –1985
39. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम पारित –1986
40. भारत में प्रथम परखनली शिशु –1986
41. मिजोरम, अरूणाचल प्रदेश, गोवा भारत के राज्य बने –1987
42. मतदान की आयु 21 से 18 वर्ष –1988
43. भारतीय प्रतिभूति विनिमय बोर्ड (सेबी) का गठन –1988
44. उदारीकरण, निजीकरण व भूमंडलीकरण को स्वीकृति –1991
45. पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा मिला –1993
46. पंचायत चुनावों में महिला आरक्षण की शुरुआत हुई –1993
47. पंचायती राज अधिनियम लागू –1994
48. भारत विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बना –1995
49. दूसरा परमाणु परीक्षण –1998
50. किसान क्रेडिट कार्ड योजना –1998
51. इलेक्ट्रॉनिक मतदान मशीन (ई.वी.एम.) का प्रारम्भ –1999
52. उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़ को राज्य का दर्जा –2000
53. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना –2000
54. सर्वशिक्षा अभियान का प्रारम्भ –2001
55. प्रथम भारतीय मिसाइल अग्नि का सफल परीक्षण –2002
56. सूचना का अधिकार अधिनियम –2005
57. भारत निर्माण योजना –2005
58. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (वर्तमान मनरेगा) –2006
59. भारत ने प्रथम टी-20 क्रिकेट विश्वकप जीता –2007
60. चंद्रयान प्रथम का सफल प्रक्षेपण –2008
61. अभिनव बिंद्रा को ओलंपिक स्वर्णपदक –2008
62. शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित –2009
63. संगीतकार ए.आर. रहमान को आस्कर पुरस्कार –2009
64. राष्ट्रमंडल खेल (19वें) दिल्ली में सम्पन्न –2010
65. भारत ने दूसरी बार क्रिकेट विश्वकप जीता –2011
66. मंगलयान का प्रक्षेपण –2013
67. नीति आयोग का गठन –2015
68. पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक –2016
69. वस्तु एवं सेवाकर (जी.एस.टी.) का प्रारम्भ –2017
70. 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' (182 मीटर) की स्थापना –2018
71. अनुछेद 370 निष्प्रभावी –2019
72. दो नए केंद्रशासित प्रदेशों जम्मू एवं कश्मीर तथा लद्दाख का पुनर्गठन –2019
73. नीरज चोपड़ा को एथलेटिक्स में ओलंपिक स्वर्णपदक –2021
74. ऑडिट दिवस (16 नवम्बर) की शुरुआत हुई –2021
75. 100 करोड़ कोरोना टीकाकरण लक्ष्य की प्राप्ति –2021

(उपरोक्त 75 विकास सोपानों की सूची को अनंतिम समझा जाए, इसका चयन सम्पादक मंडल द्वारा किया गया है।)

आज़ाद भारत की 75 विभूतियाँ

भारत की आज़ादी की कहानी स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान का वर्णन किये बिना, कभी भी पूरी नहीं हो सकती। सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आज़ाद, सरदार भगत सिंह, राजगुरू, रामप्रसाद बिस्मिल, असफ़ाक उल्ला खाँ, रानी लक्ष्मीबाई आदि के बलिदान के बगैर, स्वतंत्रता का सपना, केवल सपना ही रह जाता। स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जैसे संत हमारे सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक मूल्यों के संरक्षक रहें हैं। हमारा साहित्य मुंशी प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, रविन्द्र नाथ टैगोर, बकिंम चन्द्र चटर्जी आदि का जिक्र किये बगैर अधूरा ही रहेगा। दादा साहेब धुंडीराज गोविन्द फाल्के हमारे हिन्दी सिनेमा जगत के आधार स्तम्भ रहे हैं। परन्तु, यहाँ पर हम केवल उन्हीं 75 विभूतियों का स्मरण कर रहें हैं, जो आज़ाद भारत के नागरिक रहें हैं और जिन्होंने आज़ादी के प्राप्ति के बाद, विभिन्न क्षेत्रों में आज़ादी के अर्थों को संवारा है, सजाया है और उन्हें ऊँचाई देने में अपनी अहम भूमिका का निर्वहन किया है।

यद्यपि, यह सूची सम्पादक मंडल ने अपने अल्प-ज्ञान से उपर्युक्त मानदंडों पर चयनित की है, तथापि इस सूची को अंतिम न समझा जाय। इसके अतिरिक्त भी अन्य बहुत से नागरिक है जो अपने-अपने क्षेत्रों में आज़ाद भारत के उत्थान व निर्माण में अपना योगदान दे रहे है।

आज़ाद भारत की 75 विभूतियाँ

महात्मा गाँधी (1869-1948)

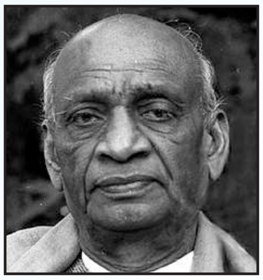
सरदार वल्लभ भाई पटेल (1875-1950)

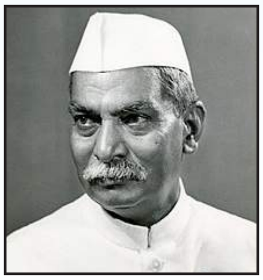
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (1884-1963)

गोविन्द बल्लभ पंत (1887-1961)

पंडित जवाहरलाल नेहरू (1889-1964)

डॉ. भीमराव अम्बेडकर (1891-1956)

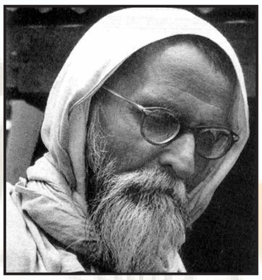
विनोबा भावे (1895-1982)

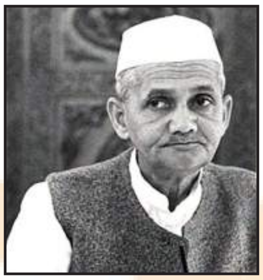
लाल बहादुर शास्त्री (1904-1966)

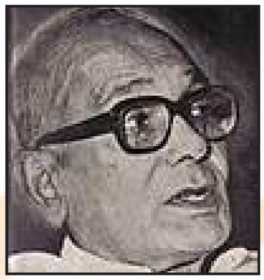
डॉ. राममनोहर लोहिया (1910-1967)

इंदिरा गाँधी (1917-1984)

अटल बिहारी वाजपेयी (1924-2018)

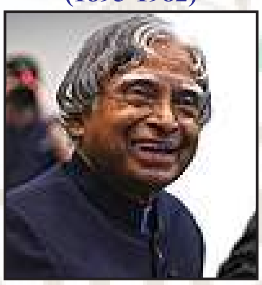
डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (1931-2015)

मनमोहन सिंह (1932)

नरेंद्र दामोदर दास मोदी (1950)

डॉ. सी.वी. रमन (1888-1970)

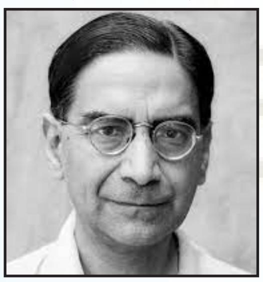
पी.सी. महालनोविस (1893-1972)

मेघनाथ साहा (1893-1956)

सतेन्द्र नाथ बोस (1894-1974)

शान्ति स्वरूप भटनागर (1894-1955)

डॉ. यशपाल (1903-1976)

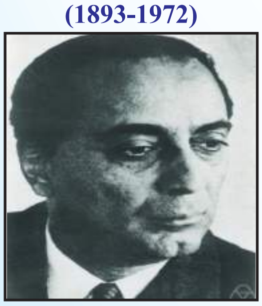
होमी जहाँगीर भाभा (1909-1966)

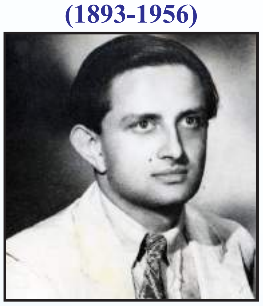
विक्रम साराभाई (1919-1971)

एम.एस. स्वामीनाथन (1925)

ई. श्रीधरन (1932)

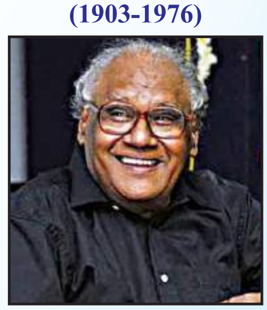
सी.एन.आर. राव (1934)

उद्योग, संगीत एवं अभिनय

आज़ाद भारत की 75 विभूतियाँ

घनश्याम दास बिड़ला
(1894-1983)

गूजरमल मोदी
(1902-1976)

जे.आर.डी. टाटा
(1904-1993)

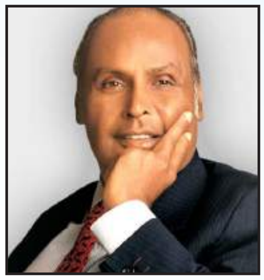
धीरूभाई अम्बानी
(1932-2002)

राहुल बजाज
(1938)

अजीम प्रेमजी
(1945)

गौतम अडाणी
(1962)

बेगम अख़्तर
(1914-1974)

उस्ताद बिसमिल्ला खान
(1916-2006)

एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी
(1916-2004)

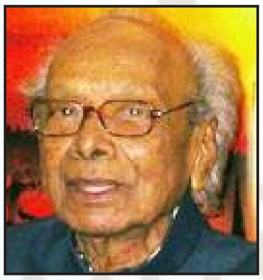
नौशाद
(1919-2006)

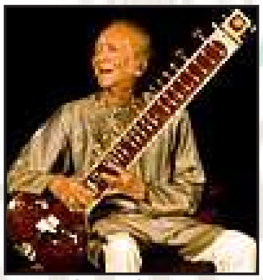
पंडित रविशंकर
(1920-2012)

सत्यजीत रे
(1921-1992)

पंडित भीमसेन जोशी
(1922-2011)

राज कपूर
(1924-1988)

मोहम्मद रफी
(1924-1980)

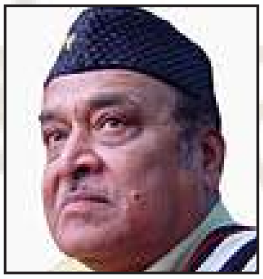
डॉ. भूपेन हजारिका
(1926-2011)

किशोर कुमार
(1929-1987)

लता मंगेशकर
(1929)

उस्ताद अमजद अली खान
(1935)

हरिप्रसाद चौरसिया
(1938)

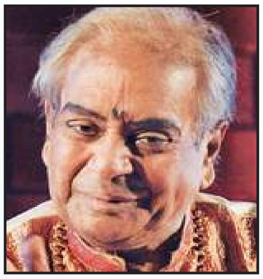
बिरजू महाराज
(1938)

अमिताभ बच्चन
(1942)

शोभना नारायण
(1950)

ए.आर. रहमान
(1967)

आज़ाद भारत की 75 विभूतियाँ

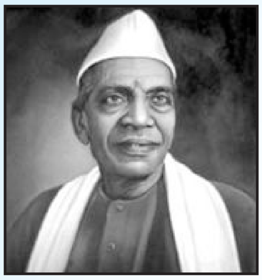
मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964)

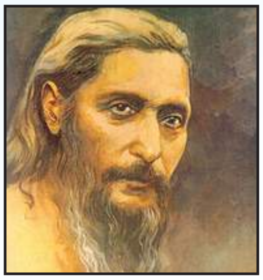
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (1896-1961)

हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907-1979)

महादेवी वर्मा (1907-1987)

रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908-1974)

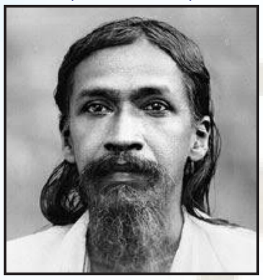
महर्षि अरविन्द (1872-1950)

मदर टैरेसा (1910-1997)

अब्दुल हमीद (1933-1965)

कैलाश सत्यार्थी (1954)

योगगुरु रामदेव (1965)

मेजर ध्यानचंद (1905-1979)

मिल्खा सिंह (1929-2021)

सुनील गावस्कर (1949)

कपिल देव (1959)

गीत सेठी (1961)

पी.टी. ऊषा (1964)

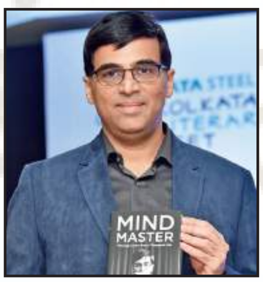

विश्वनाथन आनंद (1969)

सचिन तेंदुलकर (1973)

अभिनव बिन्द्रा (1982)

एम.सी. मैरीकोम (1982)

मिताली राज (1982)

महेन्द्र सिंह धोनी (1986)

साइना नेहवाल (1990)

पी.वी. सिंधु (1995)

नीरज चौपड़ा (1997)

आज़ादी के अमृत वचन

- हमारी आज़ादी की सुरक्षा करना सिर्फ सैनिकों का ही कार्य नहीं है, बल्कि हमारे पूरे देश को मजबूत होना पड़ेगा।
- जब तक कि आप सामाजिक स्वतंत्रता को हांसिल नहीं कर लेते, कानून आपको जो भी स्वतंत्रता देता है, वह आपके किसी काम की नहीं – **भगत सिंह**
- किसी भी कीमत पर आज़ादी का मोल नहीं लगाया जा सकता। आज़ादी जीवन है, भला जीने के लिए कोई क्या मूल्य नहीं चुकाएगा।
- मानवता को उन सभी नैतिक जड़ों तक हमें वापस ले जाना चाहिए, जहाँ से अनुशासन और स्वतंत्रता का जन्म होता है।
- वास्तव में हीरो वही होता है जो आज़ादी के साथ मिली नयी जिम्मेदारियों को बखूबी समझता है।
- हमारी शिक्षा ही स्वतंत्रता के सुनहरे दरवाजे की चाबी है।
- स्वतंत्रता पर उन्ही लोगों का असली अधिकार होता है जिनके अन्दर इसका बचाव करने का दुर्लभ साहस होता है।
- स्वतंत्र का अर्थ सिर्फ अपनी जंजीरों को उतार देना नहीं होता, बल्कि इस तरह से अपने जीवन को जीना होता है कि औरों का सम्मान बढ़े और उन्हें भी स्वतंत्रता हो।
- हमारी जिम्मेदारी स्वतंत्रता की सही कीमत है।
- आज़ादी हमें कभी भी दी नहीं जाती बल्कि इसको हमें जीतना पड़ता है।
- हर एक इंसान में स्वतंत्रता बिना शिक्षा व ज्ञान के बचाकर सुरक्षित नहीं रखी जा सकती।
- तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा – **सुभाष चंद्र बोस**
- दुनिया में तो बस दो तरीके की स्वतंत्रता प्राप्त हैं, एक झूठ जिसमें इंसान वह करने के लिए आज़ाद है जो वह स्वयं चाहता है, और दूसरा सच जिसमें इंसान वो करने के लिए स्वतंत्र है, जो उसे नियमतः करना चाहिए।
- जब भी हम कुछ नया करने के अधिकार को खो देते हैं तब हम स्वतंत्र होने का अपना विशेषाधिकार को भी खो देते हैं।
- स्वतंत्रता का अर्थ राज करना नहीं बल्कि विकास करना होता हैं।
- अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाना आज़ादी की पहली सीढ़ी हैं।
- हम आज़ाद देश है, हमें अपनी आज़ादी की ज़िम्मेदारियों को समझना चाहिए।

अनाम वैरागी–
सिवनहवा बाबा

चन्द्रजीत यादव
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या–महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

कृषकाय शरीर, मुखमंडल पर ओज, शून्य में विलीन आँखें। एक कंबल ओढ़े जमीन पर लेटा एक सन्यासी। न कोई आराध्य, न कोई आराधना। न कोई भजन, न कोई कीर्तन, न कोई प्रवचन, न कोई उपदेश, न ही कोई आशीष वचन। सदा मौन साधे, एक अनाम साधक, साधक नहीं, वैरागी। क्योंकि साधना करते तो किसी ने उन्हें देखा ही नहीं। न कोई पूजा-पाठ, न कोई आडंबर, न कोई मंदिर, न कोई मूर्ति, बस एक अहाता, जिसमें दस बीस गायें और उनकी देख-रेख करते चार-पाँच सेवादार। प्रसिद्धि ऐसी, कि दर्शनार्थियों की लंबी कतार। आजमगढ़ जनपद मुख्यालय से कोई पंद्रह किलोमीटर दूर, बिलारियागंज के पास एक आश्रम, जिसमें प्रतिदिन भंडारा चलता रहता है। सभी आगन्तुकों और दर्शनार्थियों को प्रसाद के नाम पर भरपेट भोजन कराया जाता है।

दस दिसम्बर को एक परिचित के आग्रह पर मुझे भी उस महात्मा एवं उत्कट वैरागी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ जाने से पहले ही मुझे बताया गया कि लोग अपनी कामनाएँ लेकर, बाबा के दर्शन को जाते हैं। पर जिन लोगों पर बाबा की नजर पड़ती है बस उन्हें ही उनकी कृपा प्राप्त होती है। शून्य में विलीन आँखें कभी कभार किसी दर्शनार्थी पर टिक जाती हैं। मैं उन भाग्यशाली लोगों में था जिसे बाबा की कृपा प्राप्त हुई। ऐसा मेरे साथ गए लोगों का मत था, क्योंकि बाबा मेरी तरफ दो मिनट तक देखते रहे। पर मुझे ऐसा नहीं लगा कि वे मुझे सांकेतिक रूप में ही सही, पर कोई आशीर्वाद दे रहे हों। बल्कि मुझे ऐसा लगा कि उनकी प्रश्नवाचक नजरें मुझसे कुछ पूछ रहीं हों। जैसे क्या माँगने आए हो? मनुष्य, क्यों कुछ न कुछ पाने कि चाह में यहाँ-वहाँ भटकता है? मुझे ऐसा लगा कि वे मुझसे कह रहे हों कि जो तुम्हें मिला है उसी में संतुष्ट रह। तुम्हें, तुम्हारे प्रारब्ध से अधिक पहले ही मिल चुका है। और शायद उनकी प्रश्नवाचक नजरें ठीक ही तो कह रहीं थीं। मनुष्य सदा ही किसी न किसी इच्छावश ही तो किसी मंदिर, मस्जिद, चर्च अथवा गुरुद्वारे जाता है। कोई धन की कामना से, कोई पद एवं प्रतिष्ठा की कामना से तो कोई मोक्ष की कामना से। उन महात्मा के दर्शन करने भी तो लोग किसी न किसी कामना से ही जाते हैं। कोई अपने दुख एवं दरिद्रता से निजात पाने की उम्मीद में, तो कोई पद एवं प्रतिष्ठा पाने की लालसा में। बाबा की एक आह के साथ फिर शून्य में विलीन नेत्र। ऐसा लगा कुछ लोगों के कष्टों को स्वयं में आत्मसात कर लिया हो।

कहा जाता है कि सबसे पहले ग्रामीणों ने उन्हें साठ के दशक में पीपल के पेड़ के नीचे, जो आज भी उस आश्रम में विद्यमान है, अर्ध-विक्षिप्त अवस्था में देखा था। पर जब भी लोग उनके पास आने की कोशिश करते, वे गन्ने आदि के खेतों में छिप जाया करते थे। लोगों के बहुत खोजने पर भी नहीं मिलते थे। कुछ लोगों का ऐसा मानना है कि वे अध्यात्मिक शक्तियों के द्वारा अदृश्य हो जाया करते थे। बाद में कुछ निश्छल चरवाहों के साथ उठने बैठने लगे। उनकी आध्यात्मिक शक्तियों का पता भी नहीं चला होता, अगर कुछ चरवाहे बारिश से बचने के लिए उस पीपल के पेड़ के नीचे भागकर नहीं जाते, जिसके नीचे वे लेटे अथवा बैठे रहते थे। लोगों का ऐसा कहना था कि जब चरवाहे उस पीपल के पेड़ के पास भागकर गए तो चारो ओर घोर बारिश हो रही थी, सिवाय उस पीपल के पेड़ के। बताते हैं कि उस पेड़ के नीचे एक बूंद भी नहीं पड़ी। इस घटना के बाद लोग उनके दर्शन को आने लगे, कुछ निःस्वार्थ, पर अधिकतर लोग किसी न किसी कामनावश। बाबा कुछ ही लोगों के सिर पर हाथ रखते थे। शायद उन पर, जो लोग बिना किसी कामना के उनके पास आते थे। अधिक भीड़ होने पर वे खेतों में भाग जाते थे और अदृश्य हो जाया करते थे। सदा खेतों एवं मैदानों में रहने के कारण, लोग उन्हें सिवनहवा बाबा के नाम से जानने लगे।

पास के गाँव के एक बुजुर्ग ने बताया कि जब बाबा की प्रसिद्धि चारों तरफ फैल गई, तो सत्तर के दशक में एक परिवार, शायद जिस परिवार से उनका संबंध था, उन्हें लेने आए थे। कहते हैं कि वे लोग कार से आए थे और बाबा को घर ले जाना चाहते थे, पर बाबा ने घर जाने से मना कर दिया था। बताते हैं, जब उन लोगों के द्वारा जबर्दस्ती बाबा को कार में बैठाया गया, तो बाबा के कार में बैठे रहने तक कार स्टार्ट ही नहीं होती थी। जैसे ही, वे कार से उतर जाते, कार स्टार्ट हो जाती थी। थककर परिवार उन्हें छोड़कर चला गया। पर, बाबा के

वैराग्य के रहस्य से पर्दा उठ गया। उन्होंने बताया कि बाबा पहले किसी सत्र न्यायालय में जज थे। वकीलों ने झूठे सबूत और गवाहों की मदद से किसी निर्दोष को, बाबा की अदालत से सजा दिलवा दी थी। पर फैसला देने के बाद, उस निर्दोष व्यक्ति की कातर नजरों को देख, बाबा को तुरंत ही पता लग गया कि उन्होंने एक निर्दोष को सजा दे दी और उस एक घटना के कारण उन्होंने अपने पद से त्याग-पत्र दे दिया था और उस भूल के प्रायश्चित हेतु वैराग्य धारण कर लिया था। अनजाने की गई भूल के प्रायश्चित ने उन्हें एक सिद्ध पुरुष और महात्मा बना दिया है।

अब मेरा संशय समाप्त हो गया था। अपनी ओर प्रश्नवाचक नजरों से देखने का आशय मुझे स्पष्ट हो गया था। मेरे लिए शायद उनका आदेश था कि किसी सिद्ध महात्मा के पास किसी कामना या आशा से मत जा। कोई तुम्हें कुछ नहीं दे सकता है, मैं भी नहीं। मनुष्य को अपने कर्मों का फल ही मिलता है। जा और जाकर, अपने पापों का प्रायश्चित कर। चाहे वो पाप जानबूझ कर किया हो या अनजाने में। भगवान तुम्हारे हर अपराध क्षमा कर देंगे। संभवतः, यही बातें वे हर दर्शनार्थी से कह रहे हों।

अंत में, हम सभी लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। भूख लगी होने के कारण अथवा बाबा की अध्यात्मिक शक्ति के प्रभाव के कारण पूरी-सब्जी का ऐसा स्वाद, मैंने जीवन में पहली बार चखा। उस अद्‌भुत प्रसाद को ग्रहण करके ऐसा लगा, जैसे बाबा का यही आशीर्वाद था कि जाओ, जब तक मेरा आशीर्वाद है कभी भूखे नहीं रहोगे। शायद आदेश भी कि अगर कोई भूखा व्यक्ति तुम्हारे दरवाजे पर आए, तो उसे भर पेट भोजन अवश्य करा देना। यही ईश्वर की सच्ची आराधना है।

टिप्पणी - बाबा के बारे में बताई गई बातों का, कोई प्रामाणिक स्रोत नहीं है। लेख, स्थानीय लोगों तथा सेवादारों की बातचीत एवं किवदंतियों पर आधारित है।

कोरोना ने बदली जीवन शैली

आदर्श पाण्डेय
लेखापरीक्षक
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.),
लखनऊ, शाखा-प्रयागराज

नमस्ते से शुरुआत

भारतीय संस्कृति में हाथ जोड़कर नमस्ते से अभिवादन करने की परंपरा है। कोरोना महामारी जब फैली तो स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने हाथ मिलाने की आदत से परहेज करने की सलाह दी, जिससे इस बीमारी के संक्रमण को फैलने से रोका जा सके। सोशल मीडिया में भी #डॉन्टशेकहैन्ड और #नमस्ते जैसे हैशटैग वायरल हुए।

साफ-सफाई बरतने की आदत

कोरोना संक्रमण के दर से हमारी साफ-सफाई की आदतों में काफी सुधार आया। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना से बचने के लिए दिनभर समय-समय पर हाथ धोते रहने की सलाह दी। यह अब हमारी आदत में शामिल हो गया है।

'वर्क फ्रॉम होम' संस्कृति

कोरोना संकट के दौरान एक बड़ा बदलाव कार्यालयी संस्कृति में भी हुआ। संक्रमण पर लगाम लगाने के लिए घर से कार्य करने की सुविधा दी जा रही है। आर्किटेक्ट विशेषज्ञों की माने तो, आने वाले समय में हमारे कार्यस्थलों की संरचना भी बदल सकती है।

रसोई में तैयार हो रहे नए शेफ

इन दिनों लोग होटल या रेस्तरां जाने से या बाहर का खाने से परहेज कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में घर के रसोई में ही लगातार प्रयोग हो रहे हैं। इन्टरनेट पर ऑनलाइन रेसिपी खूब तलाश की जा रही है। यह अभ्यास, खासकर छात्रों और युवाओं को भविष्य के लिए तैयार करने वाले हैं। आज, जबकि महिलाएं रसोई से निकलकर पुरुषों के साथ कदमताल करते हुए हर तरह के कार्य कर रही हैं तो इन दिनों पुरुष भी महिला के साथ रसोई में सहभागी हो रहे हैं।

'डिजिटल फ्रेंडली' हुए हम

इस डिजिटल युग में हम काफी हद तक अद्यतन हुए हैं। लोग रोकड़ की जगह पेटीएम, फोनपे आदि के जरिये यू.पी.आई. लेन-देन कर रहे हैं। शॉपिंग, बैंकिंग, पढ़ाई-लिखाई से लेकर ऑफिस के काम तक ऑनलाइन हो रहे हैं। इन्टरनेट पर आरती की तलाश में 73 फीसदी की बढ़ोतरी बताती है कि लोगों द्वारा भगवान के दर्शन और उनकी प्रार्थना करने का तरीका भी ऑनलाइन हो चला है।

धूम्रपान की आदत

धूम्रपान व्यक्ति के प्रतिरक्षा-तंत्र को कमजोर करता है और शोधकर्ताओं के मुताबिक धूम्रपान करने वाले लोगों को भी कोरोना संक्रमण का ज्यादा खतरा है। ऐसे में बहुत सारे लोग अब धूम्रपान की आदत छोड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

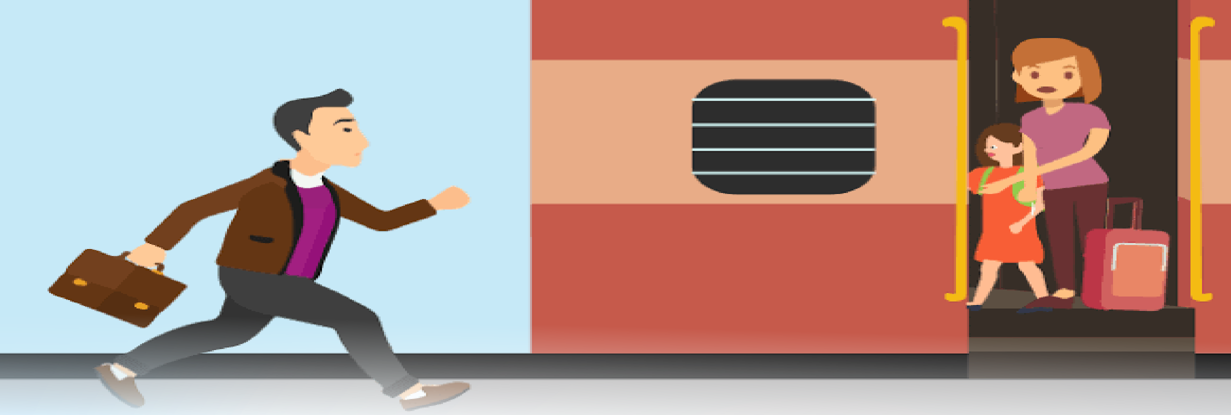

एक अविस्मरणीय यात्रा वृतांत

अर्जुन राम
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

यात्रा का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है। हम में से हर एक को कभी न कभी अलग-अलग कारणों से यात्राएँ करनी पड़ती हैं। कभी पढ़ाई के लिए, कभी नौकरी के सिलसिले में, कभी किसी रिश्तेदार के बेटे/बेटी के वैवाहिक समारोह में, तो कभी अस्पताल में भर्ती किसी नजदीकी को देखने के लिए यात्रा करनी पड़ती है। कभी दुःख में, तो कभी सुख में यात्रा करनी पड़ती है।

सरकारी नौकरी करने वाले लोग, एल.टी.सी. सुविधा का लाभ उठाते हुए दर्शनीय स्थलों की यात्राएँ करते हैं। आमतौर पर, यात्राएँ सुखद और सामान्य होती हैं, लेकिन कभी-कभी यात्रा के दौरान कुछ ऐसी विषम परिस्थिति बन जाती है जहाँ व्यक्ति अजीब-सी दुविधा में पड़ जाता है जहाँ उसे निर्णय करना मुश्किल हो जाता है कि यात्रा आगे जारी रखे अथवा बीच में ही खत्म करके वापस लौट जाए।

ऐसी ही एक परिस्थिति, हमारी एक यात्रा के दौरान उत्पन्न हो गई थी, जिसका वृतांत यहाँ प्रस्तुत है-

वर्ष 2014 की बात है, जब मैं सपरिवार लक्षद्वीप की एल.टी.सी. पर जा रहा था। लक्षद्वीप जाने के लिए, केरल के कोच्चि शहर में स्थित वेलिंगडन आईलैण्ड से क्रूज शिप पर सवार होना था। शिप से अगले पाँच दिन लक्षद्वीप के विभिन्न द्वीप समूहों के भ्रमण का कार्यक्रम था।

यात्रा कार्यक्रम कुछ इस प्रकार था कि 28 दिसंबर 2014 को लखनऊ से नई दिल्ली तक, ट्रेन से जाना था, वहाँ से 29 दिसंबर को 'त्रिवेन्द्रम राजधानी एक्सप्रेस' ट्रेन में एर्णाकुलम तक आरक्षण कराया था। त्रिवेन्द्रम राजधानी एक्सप्रेस, सुबह पौने ग्यारह बजे हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से छूटती है तथा तीसरे दिन एर्णाकुलम पहुँचती है। एर्णाकुलम को ही कोच्चि अथवा कोचीन कहा जाता है। उसकी अगली सुबह नौ बजे वेलिंगडन आईलैण्ड से क्रूज शिप पकड़ना था, जिसकी अग्रिम बुकिंग करीब छः माह पहले कर ली थी।

लखनऊ से दिल्ली जाने के लिए, यूँ तो बहुत सी रेलगाड़ियाँ हैं, जिनमें 'लखनऊ मेल' प्रमुख ट्रेन है जो रात करीब साढ़े दस बजे लखनऊ से चलकर, अगली सुबह करीब साढ़े सात बजे नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँचा देती है। हमारे कार्यक्रम के अनुसार से ये ट्रेन उपयुक्त थी क्योंकि 'त्रिवेन्द्रम राजधानी एक्सप्रेस', हजरत निजामुद्दीन स्टेशन से तीन घंटे बाद थी। तभी कार्यालय के एक अति जागरूक सहकर्मी मित्र ने सलाह दी, ''जाड़े के दिन हैं, कोहरे की वजह से लखनऊ मेल अगर दो-तीन घंटे लेट हो गई, तो राजधानी एक्सप्रेस छूट जाएगी, लिहाजा थोड़ा मार्जिन लेकर चलिए। शाम साढ़े तीन बजे लखनऊ स्वर्ण शताब्दी एक्सप्रेस चलती है, जो उसी दिन रात साढ़े नौ बजे आपको गाजियाबाद पहुँचा देगी, रात में गाजियाबाद होटल में ठहर लीजिएगा, अगली सुबह-सबेरे गाजियाबाद से टैक्सी लेकर सीधे निजामुद्दीन स्टेशन पहुँच जाइयेगा, गाजियाबाद से निजामुद्दीन स्टेशन पास भी पड़ेगा''। मित्र का आँकलन था कि शताब्दी एक्सप्रेस लखनऊ से दोपहर बाद साढ़े तीन बजे रवाना होती है, उस समय कोहरा शुरू नहीं होता है, अगर ट्रेन कोहरे की वजह से लेट हो भी गई, तो ज्यादा से ज्यादा दो-तीन घण्टे लेट होगी, फिर भी राजधानी एक्सप्रेस पकड़ने के लिए कई घण्टे का समय रहेगा। तभी कुछ और सलाहकार साथियों ने भी ''हमेशा मार्जिन लेकर चलना चाहिए'' वाली सलाह पर मुहर लगा दी। अतएव, मैंने लखनऊ मेल का आरक्षण निरस्त कराकर शताब्दी एक्सप्रेस से अपने परिवार का आरक्षण करवा लिया। गाजियाबाद में एक होटल में कमरा बुक करवाया, साथ ही एक टैक्सी बुक करवायी जो रात साढ़े नौ बजे गाजियाबाद स्टेशन से लेकर हमें होटल और फिर अगली सुबह आठ-नौ बजे होटल से लेकर निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन छोड़ दे।

यात्रा वाले दिन दोपहर एक बजे से ही इन्टरनेट पर शताब्दी एक्सप्रेस का शेड्यूल देख रहे थे, पहले 'समय पर चलेगी' दिख रहा था, फिर दो घण्टे देरी से चलेगी, उसके बाद चार घण्टे दिखाने लगा। सामान पैक करके घर पर बैठे थे, अंततः शाम पाँच बजे कैब लेकर स्टेशन पहुँच गए, प्रतीक्षालय में शताब्दी से जाने वाले और भी यात्री मिल गए, उनमें से कुछ लोगों ने सूचना दी कि जो ट्रेन सुबह दिल्ली से चलकर दोपहर साढ़े बारह बजे लखनऊ पहुँचती थी अभी तो वही नहीं आई है और वही ट्रेन लखनऊ से साढ़े तीन बजे चलती है। जब रात आठ बजे तक भी दिल्ली से आने वाली ट्रेन नहीं आई तो चिंताएँ बढ़ने लगीं। अगले दिन सुबह वाली राजधानी एक्सप्रेस छूट जाने की शंकाएँ घेरने लगीं। उससे बड़ी चिन्ता ये थी कि यदि अब शिप की बुकिंग निरस्त करवाएँगे तो कुछ भी 'रिफंड' नहीं मिलेगा। फिर परिवार के सदस्यों ने ढांढस बँधाया कि अक्सर रेलगाड़ियाँ 'कवर' कर लेती हैं। आखिरकार, रात साढ़े ग्यारह बजे दिल्ली से आने वाली ट्रेन लखनऊ पहुँची, करीब आधा-पौना घंटा ट्रेन की सफाई में लगा और रात साढ़े बारह बजे शताब्दी एक्सप्रेस लखनऊ से दिल्ली के लिए रवाना हुई। अगले दिन सुबह आठ बजे आँख खुली तो खिड़की से बाहर झाँकने पर

घना कोहरा नजर आ रहा था, अगल-बगल के सहयात्रियों के चेहरों पर मायूसी छाई हुई थी, ट्रेन के स्टाफ से पूछने पर पता चला कि अभी तो टूंडला भी नहीं पहुंचे हैं। टूंडला से गाजियाबाद करीब चार घण्टे का सफर था। मैंने सुबह आठ बजे अपने उन्हीं सहकर्मी मित्र को फोन किया जो आराम से सो रहे थे, उनसे कहा कि हमारी एल.टी.सी. चौपट करके आराम से सो रहे हैं, अच्छा खासा 'लखनऊ मेल' से जा रहे थे और पता चला कि उस दिन 'लखनऊ मेल' थोड़ा सा लेट थी और सुबह आठ बजे नई दिल्ली स्टेशन पहुँच गयी थी।

अब तो यह तय था कि 'त्रिवेन्द्रम राजधानी एक्सप्रेस' तो सौ प्रतिशत छूट ही जाएगी, आगे कोच्चि से शिप भी छूट जायेगा। महीनों से लक्षद्वीप घूमने का स्वप्न देख रहे, मेरे परिवार की आशाओं पर तुषारापात होता स्पष्ट नजर आ रहा था। ट्रेन टूंडला स्टेशन के आउटर पर खड़ी थी। अब हम लोग इस प्रस्ताव पर विचार कर रहे थे कि अब एल.टी.सी. तो हो नहीं पाएगी, गाजियाबाद तक जाने का भी कोई औचित्य नहीं है, ट्रेन टूंडला स्टेशन के प्लेटफार्म पर पहुँचेगी तो वहीं उतर जाएंगे और लखनऊ वापस चले जाएंगे। क्षीण होती आकांक्षाओं के बीच खिन्न मन से मैं मोबाइल पर इन्टरनेट चलाकर दिल्ली से केरल जाने वाली शाम की किसी ट्रेन की तलाश करने लगा, ये जानते हुए भी कि ऐसी कोई ट्रेन नहीं है क्योंकि दिसंबर महीने में दक्षिण की ओर जाने वाली ट्रेनों में तीन-चार महीने पहले ही टिकट बुक हो जाते हैं। फिर भी ''शायद कोई सीट मिल जाए'' सोचकर खोजबीन कर ही रहा था कि दिल्ली से त्रिवेन्द्रम के लिए एक स्पेशल ट्रेन नजर आई जिसकी घोषणा संभवतः उसी दिन हुई थी, और उसमें 40-50 सीटें बची हुई थीं।

मेरे मन में फिर से आशा जगने लगी। मैंने पुनः अपने उन्हीं मित्र को फोन किया, वे अभी तक नींद में ही थे, उनसे कहा कि एक स्पेशल ट्रेन आज ही घोषणा हुई है, उसमें कुछ सीटें बची हुई हैं, हमारे लिए चार सीटें बुक कर दें। क्योंकि ट्रेन में नेटवर्क बहुत कम था और मोबाइल से टिकट बुक कर पाना संभव नहीं था। मित्र ने आधे घण्टे में हमारी टिकटें बुक कर दीं, ये स्पेशल ट्रेन उसी दिन रात साढ़े नौ बजे हजरत निजामुद्दीन स्टेशन से त्रिवेन्द्रम के लिए चलने वाली थी। मैंने नोटिस किया कि ट्रेन में कुछ और भी लोग थे जिनकी हमारी ही तरह दिल्ली से आगे जाने वाली ट्रेन छूट गई थी, मेरी बातचीत सुनकर कुछ और लोगों ने भी अपने दोस्तों को फोन करके उसी ट्रेन में टिकट बुक करवाए। एक घण्टे के अंदर सारी टिकटें बुक हो चुकी थी। शताब्दी एक्सप्रेस दोपहर एक बजे गाजियाबाद पहुँची, होटल पिछली रात से ही बुक था, हमने होटल पहुँचकर थोड़ा आराम किया और ये तय हुआ कि शाम छः बजे तक होटल से निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के लिए चल देंगे। गाजियाबाद से निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन का रास्ता कार से बमुश्किल एक घण्टे का है। टैक्सी वाला ठीक छः बजे होटल से हमें लेकर निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के रास्ते पर निकल चुका था, इस बार हम एक घण्टे के सफर के लिए तीन घण्टे का मार्जिन लेकर चल रहे थे। अभी चार-पाँच किमी ही चले होंगे कि सड़क पर आगे लंबा जाम लगा था, पूछने पर पता चला कुछ किलोमीटर आगे सड़क पर कोई व्यवधान था उसी की वजह से ये जाम था। गाड़ियाँ रेंग-रेंग कर चल रहीं थीं, सात बज गए, फिर साढ़े सात हुए और आठ बजे तक हमारी गाड़ी मुश्किल से दो किमी ही खिसक पायी थी।

एक बार फिर से लगने लगा कि ये ट्रेन भी छूट जाएगी, परिजन एक दूसरे की तरफ बेबस नजरों से देख रहे थे। मन में भाव आने लगा कि शायद लक्षद्वीप घूमना हमारी किस्मत में ही नहीं है। कछुए की रफ्तार से आगे बढ़ते ट्रैफिक के बीच नौ बजे हमारी कार उस स्थान पर पहुँची जहाँ पर व्यवधान था। उसके आगे सड़क क्लियर थी परंतु ट्रेन छूटने में मात्र तीस मिनट शेष थे। बेतहाशा चलाते हुए ड्राईवर ने ट्रेन छूटने के सात-आठ मिनट पहले स्टेशन के बाहर पहुँचा दिया। हम लोग सामान लेकर स्टेशन कि सीढ़ियों पर दौड़ रहे थे, दूसरे लोगों से त्रिवेन्द्रम जाने वाली स्पेशल ट्रेन का प्लेटफॉर्म पूछने लगे, पर स्पेशल ट्रेन होने की वजह से लोगों को उस ट्रेन के प्लेटफॉर्म की जानकारी भी नहीं थी। तभी किसी यात्री ने बताया एक स्पेशल ट्रेन तीन नंबर प्लेटफॉर्म पर खड़ी है, दौड़ते भागते प्लेटफॉर्म पर पहुँचे, तब तक ट्रेन धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी थी। ट्रेन का जो भी डिब्बा सामने था, उसमें लोगों की मदद से सामान ट्रेन में चढ़ाकर किसी तरह हाँफते हुए ट्रेन के अंदर दाखिल हुए। तब तक ट्रेन अच्छी खासी स्पीड पकड़ चुकी थी। ट्रेन के अंदर वाले यात्रियों ने हमें डांटते हुए कहा ''ट्रेन पकड़ने के लिए हमेशा थोड़ा मार्जिन लेकर चला कीजिए''। परन्तु उन्हें क्या पता था कि इस 'मार्जिन' की धारणा के चलते ही हमारा घूमने का कार्यक्रम चौपट होते-होते बचा है।

बहरहाल, अंदर ही अंदर अपने कोच में पहुँचे, हमारी चारों सीट एक ही केबिन में थीं। सामान सीट के नीचे लगाकर आराम से बैठे। अब भी यकीन नहीं हो रहा था कि हम एल.टी.सी. यात्रा पर जा पा रहे हैं। आगे की यात्रा बेहद सुखद और रोमांचक रही।

उसके बाद के वर्षों में कई और यात्राएँ एल.टी.सी. पर या निजी तौर पर कीं, परन्तु अनिश्चितताओं और आशंकाओं से भरी इस यात्रा के अनुभव भुलाए नहीं भूलते हैं।

यात्रा मन का विस्तार करती है और खालीपन को भर देती है। - **शेडा सावेज**

मुझे अब तक की सबसे अच्छी शिक्षा यात्रा के माध्यम से मिली। - **लिसा लिंग**

जहाँ भी जायें, अपने पूरे दिल से जायें। - **कन्फ़्यूशियस**

वास्तविक खोज-यात्रा नए परिदृश्यों की तलाश में नहीं, बल्कि नई दृष्टि में है। - **मार्सेल प्राउस्ट**

आपका रोमांच आपको एक साथ करीब ले आये, तब भी जब वो आपको घर से बहुत दूर ले जाये। - **ट्रेंटन ली स्टीवर्ट**

यात्रा एक ही समय में खो जाने और पा लेने का सबसे अच्छा तरीका। - **अज्ञात**

दुनिया एक किताब है और जो लोग यात्रा नहीं करते, वे सिर्फ़ एक पृष्ठ पढ़ते हैं। - **संत आगस्टीन**

चींटा और गिरगिट

प्रभा शंकर तिवारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ
शाखा-प्रयागराज

मैं इलाहाबाद शहर के, जिस स्थान पर निवास करता हूँ वहाँ सुबह की सैर के लिए दो स्थान सुविधाजनक है- एक परेड ग्राउंड और दूसरा कम्पनीबाग मुझे व्यक्तिगत रूप से परेड ग्राउंड ज्यादा पसंद है। इसमें दो कारण है पहला कि यह अलोपी मन्दिर से नजदीक है और दूसरा ज्यादा पेड़-पौधे न होने के कारण वातावरण में ज्यादा नमी नहीं रहती है और हरियाली छिटकी हुई रहती है जो आँखों को सुख देती है। गंगा और यमुना का किनारा होने के कारण खुली हवा इस पार से उस पार निर्बाध होकर छोटे बड़े पेड़ों के चमकीले हरे पत्तों से खेलती हुई, कभी ऊपर, कभी नीचे बहती रहती है। परेड के इन पाँचों मैदान पर खड़े होकर निर्वाध रूप से कम से कम डेढ़ किमी के आर-पार देखा जा सकता है।

कभी-कभी मुझे परेड ग्राउंड के इन पाँचों मैदानों के अलावा, यही से दो दिशाओं में जाने का मौका मिल जाता है। खासकर के जब अवकाश का दिन होता है-

पहला- 508, आर्मी बेस के बाउड्रीवाल के बायी तरफ से होते हुए संगम की तरफ जहाँ शंकर विमान मण्डपम् तथा लेटे हुए बांध वाले हनुमान जी विराजमान रहते हैं। जब भी मैं इस रास्ते से गुजरता हूँ तब पाकड़-पीपल के बड़े-बड़े हरे भरे पेड़ों के बारे में सोचता हूँ कि जब-जब अर्द्धकुम्भ या कुम्भ का विश्व समुदाय उमड़ता होगा तो इन्हें काल के पन्नों पर हस्ताक्षर करने का सौभाग्य प्राप्त होता होगा। ये वृक्ष बड़े गर्व से एक-एक घटना की कहानी फुर्सत के समय में अपनी नयी पीढ़ी को सुनाते होंगे।

दूसरा- उस बाउंड्रीवाल के दाहिने तरफ से होते हुए यमुना के किनारे बने सरस्वती घाट की तरफ जहाँ नाविक के चबूतरे पर विराजमान छोटे हनुमान जी, मजार, संकट हरन को छोटा मन्दिर, मिन्टो पार्क तथा यमुना किनारे स्थित मनकामेश्वर का पवित्र मन्दिर, जिसकी घंटियों का नाद, यमुना और फिर गंगा जल में घुलकर बंगाल की खाड़ी तक सुनाई पड़ता है।

आज सुबह 8 बजे जब मैं घूमने के लिए तैयार हुआ तो आलस्य के कारण साइकिल को साथ ले लिया। नाविक के चबूतरे वाले हनुमान जी को प्रणाम किया तथा आगे मिन्टो पार्क की तरफ बढ़ गया। जबकि ज्यादातर वही रूक कर योगासन तथा अभ्यास कर वापस घर लौट आता हूँ। मिन्टो पार्क के गेट के बाहर अंकुरित चना बेचने वाले के पास अपने साथी को ताला लगा कर अन्दर घुस गया। मैं करीब तीन महीने बाद इस पार्क में आया था। मैं अन्दर की हरियाली देखकर दंग रह गया। हमेशा सूखा-सूखा सा रहने वाला पार्क अपने हरियाली को पाकर फूला नहीं समा रहा था। तीन माह पूर्व जब इस पार्क में आया था तो यहाँ के सूखे-सूखे से आँवले के पेड़ ललचायी नजरों से मुझे देख रहे थे। लेकिन आज तो पूरा दृश्य ही बदल गया था। आँवले के पेड़ बड़े घने तथा हरे हो चुके थे। पूरा मैदान पानी की बूदों से तथा हरे घासों से भर चुका था। तेज धूप की किरणें इन टहनियों से छन-छन कर पानी की बूदों को चूमने के लिए वेताब थे जबकि आँवला के पेड़ इन बूदों पर अपना हक मानकर इन किरणों को नीचे उतरने ही नहीं दे रहे थे। गजब का संघर्ष चल रहा था। टहनियों और हरी घासों के बीच जो खाली जगहें थी वहाँ अंधेरी और उजली तारों से कुछ बुना जा रहा था। मैं नहीं जानता क्या था। प्रकृति को समझना आसान नहीं था। लेकिन एक बात तो तय था कि मैं अकेला महसूस कर रहा था क्योंकि वे आँवला के वृक्ष आज मुझे नहीं देख रहे थे।

मैं आधे घंटे तक पार्क में घूमता रहा अकेले। थककर तथा एकाकीपन से ऊबकर कटहल के वृक्ष के पास बने चबूतरे पर बैठ गया। पूरे पार्क में नमी भरी पड़ी थी। मैं यमुना नदी की तरफ मुँह करके बैठा था। बायीं तरफ चौड़े पत्ते वाले ताड़ का पेड़ था जिसके तने से लिपटी हुई सूखी पत्तियाँ थी जबकि उपरी भाग में हलके हरे रंगों वाली चौड़ी-चौड़ी पत्तियाँ थी जिनके किनारे नुकीले थे। मेरे लिए यह समझना आसान नहीं था कि ताड़ का पेड़ उन सूखी पत्तियों को नहीं छोड़ रहा था या वे सूखी पत्तियाँ अपने हरे पेड़ से अलग नहीं होना चाह रही थी। जीवन के मोह या अपनों के मोह में एक अजीब सा संघर्ष दिख रहा था। न तो कोई हार रहा था और नहीं कोई जीत रहा था।

मेरे दाहिने तरफ पाम का एक लम्बा सा पेड़ था जो अपने को सबसे ऊँचा समझ रहा था तथा ब्रिटिश राज्य में स्थापित अशोक स्तम्भ से अपनी तुलना कर रहा था। पाम का पेड़ कभी अपने सफेद-भूरी तथा लम्बे तने को निहारता तो कभी पीली पड़ चुकी सफेद संगमरमर से बनी अशोक स्तम्भ को तरेर रहा था तथा समझ रहा था कि समय किसी का नहीं होता, कल तुम्हारा था और आज हमारा है तथा कल किसी और का होगा। पाम के तने का निचला हिस्सा जो जमीन से सटा हुआ था इसमें चारों ओर कही हरी घास थी तो कही पर खाली गीली जमीन थी जिस पर कुछ भी नहीं उगा था।

जमीन से एक फिट ऊपर पाम के पेड़ के तने पर एक गिरगिट ऊपर की ओर मुँह करके अगले दोनों हाथों से अपने गर्दन एवं सिर को हिला रहा था। उसका रंग पाम के तने की तरह स्लेटी भूरा था। दो मिनट तक हिलने के बाद वह शांत हो गया। उसके शांत होने के पश्चात मेरा ध्यान नीचे भीगी हुई जमीन पर गया जहाँ एक मोटा सा काला चीटा धूप की किरणों से चमक रहा था।

गजब की शांति, लगन तथा लक्ष्य प्राप्ति का भाव उसमें झलक रहा था। उसे देखकर जीवन के लिए प्रयत्न करने की प्रेरणा प्राप्त हो

रही थी। उसी शांत भाव से आगे बढ़ता हुआ वह चीटा छोटी-छोटी दूब के घासों में खो गया। मुझे ऐसा लग रहा था कि कही वह गिरगिट इस बेचारे चीटें को खा न लें इसलिए ताली बजाकर उसे मैं भगा दूँ। मेरे मन में दो विचार आए। पहला यह कि प्रकृति के नियमों से छेड़-छाड़ नहीं करना चाहिए तथा दूसरा कि गिरगिट ऊपर की ओर देख रहा था और चींटा तो नीचे था। मेरे मन में उधेड़ भुन चल रहा था। अचानक वह चीटा उसी भाव से बिना भविष्य की चिंता करते हुए अपने लक्ष्य पर आगे बढ़ता हुआ उन दूब की घासों से बाहर निकला। वह सीधी तथा सरल रेखा में चल रहा था। उन घासों से जहाँ वह अभी-अभी निकला था तथा अगली घासों की बीच लगभग ग्यारह इंच का फासला था। गिरगिट स्थिर भाव से ऊपर देख रहा था लेकिन चीटें का सरल और सीधा मार्ग उसे नहीं भा रहा था। जब चीटा लगभग दस इंच का फासला तय कर चुका था कि पलक झपकते ही गिरगिट नीचे उतरा तथा अगले क्षण उसे अपने पेट में डाल चुका था। उस चीटे की कहानी ब्रह्माण्ड के सबसे खूबसूरत ग्रह पर समाप्त हो चुकी थी। शेष था तो उस चीटे का अपने कर्तव्य के प्रति लगन, ब्रह्माण्ड के प्रति उसका संदेश और काल। प्रकृति के अनसुलझें द्वद के बीच मुझे याद आ रहे थे-सुकरात, ईसा मसीह और महात्मा गाँधी।

राजेश कुमार-प्रथम
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-प्र.म.ले.(ले.प.-II)
उ.प्र., लखनऊ

जीवन है अनमोल

जीवन है अनमोल, धरती है गोल,
संतुलन रखती धरा, तू भी संतुलित बोल।

जब भी डग मग हुई धरा,
हुआ विनाश अपार।
जब भी जिव्हा हुई असंतुलित,
हुआ मात्र संहार।
सभी को समाहित करती धरा,
न करती कोई भेद।
पर जाने क्यूं इंसां,
करता जाति, धर्म, रंग भेद।
जीवन है अनमोल, धरती है गोल।

आपसी झगड़ो को हम, यूँ ही सुलझा देते है,
मसलो को नहीं हवा हम देते है।
अगर हम है, सच्चे राष्ट्र भक्त,
तो बैर भावों को करें ध्वस्त।
कभी-कभार जब जाने अनजाने
विवाद कोई होता है,
तो विनाश को टालने हेतु
करते हम समझौता है।
जीवन है अनमोल, धरती है गोल।

न विवाद हो, न विनाश हो
न हो कोई गुटबाजी,
शांति हेतु प्रयास करें हम
सब मिलकर राजी-राजी।
रखें जिव्हा पर नियंत्रण
न हो धरती डाँवाडोल।
जीवन है अनमोल, धरती है गोल।

वक्त-गतिमान

न जाने किस मुहूर्त का, इंतजार करता है इन्सान।
वक्त पर ही वक्त की, नहीं कर पाता पहचान।।

गुजरता वक्त, जैसे चिड़ियाँ चुग गई खेत-खलिहान।
ये वक्त है साहिब, मत करो, इस वक्त का अपमान।।

न जाने किस मुहूर्त का, इंतजार करता है इन्सान।
उठो और पकड़ो इसे, क्योंकि वक्त है गतिमान।।

जिसने वक्त को, वक्त पर पकड़ा, बना धनवान।
चहुँ दिशा में गूँजा, उसका यश और गुणगान।।

आज ही शुभ मुहुर्त, कर ले वक्त पर पहचान।
न जाने किस मुहुर्त का, इंतजार करता है इन्सान।।

स्वर्ग प्रवेश-परीक्षा

सत्य प्रकाश
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ
शाखा-प्रयागराज

मानव, प्रकृति के हाथ का खिलौना है तथा स्वर्ग और नर्क यहीं होते हैं, ऐसा सुना और समझा है, परन्तु धर्म वाचकों ने ऐसा कहा कि स्वर्ग में जानें पर ऐसे ऐसे सुख मिलते हैं कि बस पूछिये ही मत। अतः स्वर्ग देखने की लालसा, मन में जागृत होना स्वभाविक ही था। अपनी इस लालसा की पूर्ति के लिये, मन में तरह-तरह की योजनाओं ने जन्म लेना प्रारम्भ कर दिया। समस्या ये थी कि स्वर्ग की प्राप्ति के लिये मरना भी जरुरी होता है और ऐसा सोच लेने से ही योजना समाप्ति की ओर बढ़ जाती थी। इसलिये, अब मन बिना मरे स्वर्ग पहुँचने के प्रयास में लग गया। कई कार्य योजनाओं पर विचार चलने लगा, पर हर बार किसी न किसी रूप में, मृत्यु ही सामने आ कर रास्ता रोक कर खड़ी हो जाती थी। एक दिन अचानक और अनायास ही रास्ता मिल गया। वो क्या था और कैसा था? ये अभी बताना उचित नहीं होगा, बल्कि समय के साथ स्वतः ही ज्ञात हो जायेगा। योजना के अनुरुप, मैं स्वर्ग के द्वार पर खड़ा था और हमसे प्रवेश हेतु फार्म भरवाया जा रहा था। जन्म, मृत्यु और विवाह की तिथियों के साथ, जीवन में किये गये कार्यों के विषय में जानकारी माँगी गयी थी। कितने वर्ष का वैवाहिक जीवन रहा और माता-पिता के साथ किया गया व्यवहार, निर्णायक पहलू प्रतीत हो रहा था।

प्रथम पटल (काउन्टर) पर बैठे अधिकारी ने बताया कि प्रारम्भ में 100 अधिलाभ अंक (बोनस) दिये जा रहे हैं और आगे के काउन्टरों पर जाँच कराते हुए आगे बढ़ना है तथा अपने अंकों को अद्यतन (अपडेट) कराते रहना है। अन्तिम काउन्टर पर बोनस अंकों के अद्यतन हो जाने के पश्चात, प्रवेश के लिये निर्धारित बोनस अंक के बराबर या अधिक होने के पश्चात ही, स्वर्ग में प्रवेश सम्भव हो सकेगा।

पहले काउन्टर पर पहुँचते ही मुझे बताया गया कि आपने गर्भ में प्रवेश के साथ ही, अपनी जननी के लिये समस्याएं पैदा करनी शुरू कर दी थी। यहाँ तक कि आपने माँ के पेट में, अपनें पैरों से मारने की कोशिश भी की। जन्म के समय, माँ को मिली पीड़ा के बाद तो, उसके लिये दूसरा जन्म मिलने जैसा था। यद्यपि इन घटनाओं से, माँ को प्रसन्नता ही मिली होगी, फिर भी उसको मिली परेशानी के कारण पाँच अंक काटे जाते हैं।

पंचानवें अंकों के साथ, मैं दूसरे काउन्टर पर पहुँचा। ये मेरे बचपन के जीवन का काउन्टर था। वहाँ का लिपिक कुछ ज्यादा ही कड़क था, उसने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा और मेरी पत्रावली पलटने लगा फिर बोला आपने तो बचपन में बहुत शरारतें की थी, घर की बहुत सारी वस्तुओं को नुकसान पहुँचाने के पाँच अंक कट, पढ़ाई के समय भी आपने अपने माँ-बाप की नहीं सुनी और उनके लाख कहने के बावजूद, ढंग से पढ़ाई नहीं की, इसके पाँच अंक कट। कई बार तो, घर से बिना बताए ही दोस्तों के साथ दूर तक चले गये, जिससे माँ-बाप को बहुत परेशानी हुई, उसके भी पाँच अंक कट। रातों को देर तक बाहर रहना, आपकी आदतों में शामिल हो गया था। माँ देर रात तक जागकर, आपके लौट आने का इन्तजार को मजबूर थी। वो खुद बिना खाना खाए आपको खिलाने के लिये देर रात तक जागती थी। आपने उसकी परेशानी पर कभी अमल नहीं किया, इसके 10 अंक कट।

अब सत्तर अंकों के साथ, मैं आगे बढ़ा। स्वर्ग में प्रवेश के लिये न्यूनतम अंक कितने चाहिए थे? ये पता करना भी मुश्किल था। अगला काउन्टर युवावस्था के लेखा-जोखा वाला था। यहाँ भी मुझे ऊपर से नीचे तक, सन्देह की दृष्टि से देखा गया। मेरा खाता देखकर बताया गया कि मैंने कभी भी आदर्श आचरण नहीं किया, सड़कों पर इधर-उधर घूमना मेरी आदतों में शामिल हो गया था, बड़ों को सम्मान न देना मेरे लिये साधारण सी बात थी। रुपया कमाने के लिये, मैंने किसी भी हद तक उतर जाने से परहेज नहीं किया, मैंने पैसे के आगे, अपने सगे सम्बन्धियों का भी ध्यान नहीं रखा। वह आगे बोला कि कई बार तो आपने अपने माँ-बाप की भी अवहेलना कर डाली। सुधार की उम्मीद में माँ-बाप ने आपकी शादी कर दी, परन्तु शादी के बाद भी आपकी आदतों में कोई सुधार नहीं हुआ, बल्कि आप और भी हठी हो गये। आपने, अपनी धर्मपत्नी पर अवांछित प्रतिबन्ध लगाये। अपनी मनमानी से पत्नी एवं उसके परिवार के सदस्यों के लिये परेशानी का सबब बने रहे। इन सब के लिये आपके 20 अंक कम किये जाते हैं।

अब मेरे पास केवल पचास अंक शेष थे और अभी स्वर्ग के प्रवेश द्वार से पहले, एक काउन्टर और भी बचा था। ये काउन्टर आध्यात्मिक जीवन का काउन्टर था। इस काउन्टर से मुझे थोड़ी उम्मीद सी जगती दिखी परन्तु वहाँ पहुँचने पर मेरी सारी उम्मीदों पर एकाएक पानी फिर गया जब मुझे पता चला कि प्रवेश के लिये निर्धारित न्यूनतम अहर्ता (क्वालीफाइंग) अंक 50 ही हैं। एक भी अंक कटने का मतलब, स्वर्ग के लिये अयोग्य घोषित हो जाना। बगल में ही नर्क का भी द्वार था और उसका द्वारपाल, मुझे बड़ी ही लालच भरी निगाहों से देख रहा था। उसके इस प्रकार से देखने से बड़ा डर सा लगने लगा। अब तो स्वर्ग का

भूत सिर से उतरने लगा था और किसी तरह नर्क से बच सकूं, यही बात दिमाग में कौंध रही थी। घबराहट लगातार बढ़ती जा रही थी। स्वर्ग के सारे लुभावने सुखों की जगह, नर्क की भयावह यातनायें, जो तथाकथित धर्मवाचकों द्वारा बताई गयी थीं, दिखाई देने लगी। मुझे कोड़े, हण्टर, भाले, चाबुक दिखाई देने लगे। तभी सामने बैठा लिपिक बोला- मान्यवर, आपका आध्यात्मिक जीवन तो बड़ा ही स्वार्थपूर्ण रहा है। (अब तो कढ़ाई में गरम तेल भी दिखने लगा।) आपने तो कभी भी परहित का कोइ भी कार्य नहीं किया और जीवन भर सिर्फ अपने लाभ के बारे में ही सोचा और कार्य किया। आपने कभी भी, किसी जरूरतमन्द की न तो मदद ही की और न ही मदद करने के बारे में विचार ही किया, जबकि आपको ऐसे कई अवसर मिले, जब आप चाहते तो ऐसा कर सकते थे। आपने तो भगवान के साथ भी, स्वार्थपूर्ण व्यवहार किया। आपने बिना स्वार्थ के उनके सामने भी सर नहीं झुकाया। सर झुकाने के पहले आपने हर बार शर्तें रखी। आपने अपनी हर मनोकामना की पूर्ति के लिये भगवान को रिश्वत देने की कोशिश की, जबकि ईश्वर को तो सिर्फ आपकी भक्ति ही चाहिये थी। आपने तो अपने माँ-बाप को भी स्वार्थ की आग में जलाने की कोशिश की। जब तक वे आपके लिये धन का स्रोत बने रहे, तभी तक आपने उनकी सेवा की और जब वे आपके ऊपर निर्भर हो गये, तो आपने उनके साथ असम्मानजनक व्यवहार प्रारम्भ कर दिया था। इतना सब बोलने के बाद वो रूक गया, शायद कुल कितने अंक काटे जाने हैं, इस बारे में सोचने लगा था। मुझे इस चुप्पी से इतना डर लगा कि पूरा बदन पसीने से भीग गया। मेरा पूरा जीवन वृत्तान्त, मेरी आँखों के सामने नाच रहा था। मन में ऐसा लग रहा था कि काश भगवान एक अवसर प्रदान कर देते तो मैं कम से कम अपना अन्तिम सोपान तो सुधार लेता। अभी वह कुछ बोलने ही जा रहा था कि इन सब कर्मों की वजह से आपके अंक कटेंगें, तभी जैसे जमीन हिलने लगी, किसी के पुकारने की आवाज सुनाई देने लगी और मेरी आँखें खुल गयी। मैंने खुद को जीवित और स्वस्थ पाया। ये मेरी माँ की पुकार थी, ऐसा लगा कि जैसे एक बार फिर मुझे नया जीवन मिल गया हो। मेरी, स्वयं को जागृत कर देने वाली नींद अब टूट चुकी थी। मैं, अपने स्वप्न से तो बाहर आ गया था, परन्तु अपराध-बोध से बाहर निकल पाने के लिये अभी भी प्रयासरत हूँ।

प्रयागराज गाथा

रविंद्र कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक,
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ
शाखा-प्रयागराज

ब्रह्मा का वरदान है ये, बाबा विश्वनाथ की छाँव है,
पठन-पाठन पी.सी.एस. निर्माण की धरती प्रयाग है।

यहाँ तपस्वी ऋषि भरद्वाज ने रामायण थी गाई,
परशुराम और विश्वामित्र की तपस्थली कहलाई।
आदि भवानी, पवन तनय हनुमत निकेतन मंदिर यहाँ,
गंगा नदी किनारे मनकामेश्वर मंदिर है जहाँ।
पतित पावनी माँ गंगा यमुना का अविरल बहाव है,
पठन-पाठन पी.सी.एस. निर्माण की धरती प्रयाग है।

वाल्मिकि ऋषि ने संगम तट पर यज्ञ किया,
और लव-कुश ने यज्ञ अश्व था बाँध लिया।
गंगा नदी में तीर मिले यहाँ, मंदिर त्रिशुल भी घूम रहा
लेटे हनुमान जी का मंदिर सोमतीर्थ कहलाता है,
यहीं जानकी थी कुंड समायी, जिसमें सीता-माता है।

देव-देवियों, ऋषि-मुनियों का युग-युग रहा प्रभाव है,
पठन-पाठन पी.सी.एस. निर्माण की धरती प्रयाग है।

धरती हँडिया यहीं पर स्थित लाक्षग्रह है अनुपम,
योग-साधना, कुंडलिनी योग से निर्मित सुन्दरतम।
फाफामऊ है गाँव यहीं पर, जहाँ पर पांडव ठहरे,
नवाबगंज में पडिला महादेव मंदिर, जहाँ खग विचरे।
इलाहाबाद अब है प्रयागराज
सनातन संस्कृति का न कोई प्रतिकार,
कुम्भ मेला, अनुपम, सहस्त्र गुण गाते इतिहासकार।
लोक कलाएं अनुपम मिलती, हर शहर हर गाँव है,
पठन-पाठन पी.सी.एस. निर्माण की धरती प्रयाग है।

1857 की क्रांति में, वीर जवानों ने जंग लड़ी,
जब गोरे आये लड़ने, मुँह की खानी उन्हें पड़ी।
बाद में छल से पकड़ लिया, फाँसी का फंदा झूल गए,
धन्य कंपनी वीर भूमि, जहाँ चंद्रशेखर आज़ाद हुए।
याद दिलाती कुर्बानी, पिस्तौल और मूँछों पर ताव है,
पठन-पाठन पी.सी.एस. निर्माण की धरती प्रयाग है।

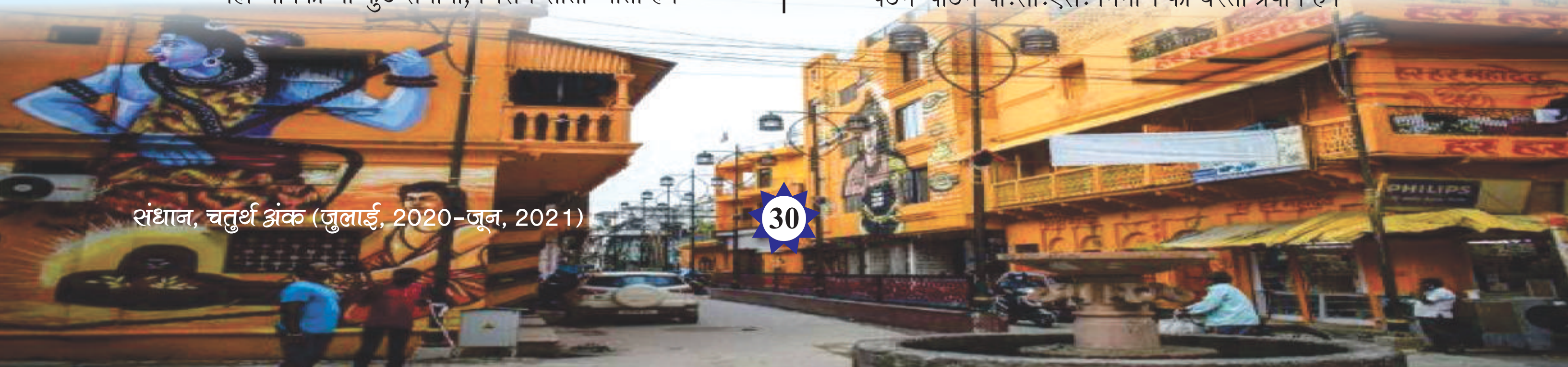

संस्मरण

बी.एन.पी.एल.-ब्याह नहीं, पहले लैटर्स

संजीव कुमार श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.),
लखनऊ

दोस्तों, यह शीर्षक पढ़ने में आपको अटपटा तो जरुर लग रहा होगा, परतु यह सत्य व वास्तविक घटना है और बी.एन.पी.एल. की ही वजह से मेरे विवाह पर ग्रहण लग गया था।

चलिये, पहले आपको यह बताते हैं कि बी.एन.पी.एल. क्या है? फिर अपनी कहानी पर आते हैं। बी.एन.पी.एल. यानी ''बुक नाउ पे लेटर'', यह डाक विभाग की एक योजना है, जिसमें कार्यालय के डाक अनुभाग द्वारा निर्धारित प्रक्रिया पूरी कर, प्रेषित की जाने वाली डाक तैयार की जाती है, जिसे डाककर्मी प्रतिदिन हमारे कार्यालय आकर एकत्र कर ले जाता है तथा उसकी पावती उसी समय कार्यालय में दे जाता है और भेजी जाने वाली डाक पर, आने वाले व्यय का बिल डाक विभाग द्वारा आगामी माह में उपलब्ध करा दिया जाता है और उसका भुगतान डाक अनुभाग द्वारा सत्यापन के पश्चात् कार्यालय द्वारा कर दिया जाता है। बी.एन.पी.एल. योजना को लगभग बीस वर्ष पूर्व हमारे कार्यालय के तत्कालीन वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन) के दिशा-निर्देश व मार्गदर्शन में, मेरे द्वारा ही लखनऊ कार्यालय में शुरू कराया गया था।

यह प्रसंग उस समय का है जब मुझे विभाग में आये हुए लगभग दो वर्ष ही हुए थे, मेरी तैनाती प्राप्ति एवं प्रेषण अनुभाग (डाक अनुभाग) में थी तथा कार्यालय द्वारा प्रेषित की जाने वाली डाक बी.एन.पी.एल. योजना के माध्यम से प्रेषित की जाती थीं, जिससे अनुभाग का कार्य बहुत ही सुगम हो गया था परन्तु असली मुसीबत तब शुरू हुई, जब फरवरी 2002 में निर्धारित अपने विवाह हेतु मेरे द्वारा अवकाश स्वीकृति हेतु श्री नियमपाल जी (तत्कालीन अनुभाग अधिकारी) को प्रार्थना पत्र दिया गया, जिसे उनके द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया। उनका तर्क था कि इस बी.एन.पी.एल. योजना के कार्य की जानकारी, तुम्हारे अतिरिक्त अन्य किसी को नहीं है और तुम्हारे अवकाश पर जाने से अनुभाग का कार्य बाधित होगा। मेरे बहुत अनुरोध करने पर भी जब श्री नियमपाल जी नहीं माने और अवकाश स्वीकृत नहीं किया, तो मुझे लगने लगा कि मेरे विवाह पर बी.एन.पी.एल. रूपी ग्रहण लग गया है जिससे उबरने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था क्योंकि विभाग में मैं नया था और कोई पूर्व परिचित कार्यालय में नहीं था जो इस ग्रहण से उबरने का कोई रास्ता सुझाता।

खैर, बड़े सोच-विचार के बाद मैं, श्री कड़क त्रिपाठी, (तत्कालीन वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, प्रशासन) के पास अवकाश प्रार्थना-पत्र ले कर पहुँचा। अवकाश प्रार्थना-पत्र हाथ में देखते ही, बिना मेरी बात सुने त्रिपाठी जी नाराज हो उठे और डाँटते हुए कहने लगे कि काम पर ध्यान दो, कोई अवकाश स्वीकृत नहीं होगा। उनकी बात सुनकर, मुझे लगने लगा कि वास्तव में विवाह पर लगे ग्रहण से उबरना असम्भव है, फिर भी हिम्मत जुटाकर, जब मैंने उन्हें अपने विवाह हेतु अवकाश की बात बताई, तो त्रिपाठी सर द्वारा अनुभाग अधिकारी से अवकाश स्वीकृत कराने का निर्देश दिया गया। मैंने त्रिपाठी सर को अवगत कराया कि श्री नियमपाल जी द्वारा मेरा अवकाश अस्वीकृत कर दिया गया है अतः मैं आपके पास आया हूँ। यह सुनते ही त्रिपाठी सर आपे से बाहर हो गये और नियमपाल जी को अपने कक्ष में तलब कर लिया। नियमपाल जी के आते ही, त्रिपाठी सर लगभग चीखते हुए बोले- ''क्या तुम इसकी जगह शादी में फेरे लोगे, अवकाश स्वीकृत करो'' और तब जाकर, विवाह हेतु मेरा अवकाश स्वीकृत हुआ।

इस प्रकार त्रिपाठी सर की मदद से मैं विवाह पर लगे बी.एन.पी. एल. रूपी ग्रहण से बाहर निकल सका।

और अंत में हृदय से श्री नियमपाल जी का भी धन्यवाद, जिनके चलते मेरा विवाह नियत समय पर सम्पन्न हो पाया, अन्यथा मैं केवल आठ घंटे का सरकारी नौकर ही रह जाता।

दामाद अपनी सास से : आपकी बेटी में कोई बात ढंग की नहीं है।
सास : हाँ, बेटा मालूम है तभी तो कोई ढंग का लड़का नहीं मिला।
😂😂😂😂😂

दुकानदार : मैंने आपको दुकान की एक-एक चप्पल दिखा दी, अब तो एक भी बाकी नहीं है।
महिला : वो सामने वाले डिब्बे में क्या है?
दुकानदार : बहन, रहम कर थोड़ा, उसमें मेरा लंच है।😂😂

संजना तीसरी बार ड्राइविंग लाइसेंस का इंटरव्यू देने पहुँची
ऑफिसर : अगर एक तरफ आपके पति हो और दूसरी तरफ आपका भाई हो तो आप क्या मारोगी ?
संजना : पति
ऑफिसर : अरे मैडम, आपको तीसरी बार बता रहा हूँ कि आप ब्रेक मारोगी 😂😂😂😂😂

स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत

शुभम वर्मा
आशुलिपिक
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

"स्वच्छता" यह एक शब्द भर नहीं है, इस एक शब्द पर हमारे जीवन का बहुत कुछ निर्भर करता है। स्वच्छता के अन्तर्गत बहुत सारे अभियान भी हमारे देश में चलाये जाते हैं, इन्हीं में से एक बहुत महत्वपूर्ण अभियान है **"स्वच्छ भारत अभियान या स्वच्छ भारत मिशन"**। इस अभियान की शुरूआत **2 अक्टूबर 2014** को भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्रपिता "महात्मा गाँधी" की जयन्ती पर की थी, क्योंकि गाँधी जी ने स्वच्छता पर ध्यान देने के लिए देशवासियों पर विशेष जोर दिया था। 2 अक्टूबर 2014 से पहले भी देश में स्कूल/कॉलेजों में, प्रत्येक वर्ष 2 अक्टूबर को "श्रम दिवस" के रूप में मनाया जाता रहा है, इसके तहत स्कूल के बच्चें/ अध्यापक, इस दिन स्कूल तथा स्कूल के आस-पास की सफाई करते हैं। वैसे भी हम सभी का परम कर्तव्य है कि हम अपने आस-पास को स्वच्छ रखें। महात्मा गाँधी ने कहा था- **'जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैं, वह सबसे पहले अपने आप में लागू करें'**। अर्थात अगर आप अपने शहर, देश, वातावरण को स्वच्छ देखना चाहते हैं, तो आपको अपने घर आस-पास से पहल करनी होगी। अगर हम समाज में बदलाव देखना चाहते हैं तो सर्वप्रथम हमें स्वयं में बदलाव लाना होगा। हर कोई दूसरों की राह ताकता रहता है और पहले आप-पहले आप के चक्कर में कुछ नहीं हो पाता है। यह भी एक विडम्बना है कि हमारी सरकार को हमारे नगर, घर और आस-पास में साफ-सफाई के लिए अभियान चलाना पड़ रहा है, जबकि इसकी जिम्मेदारी खुद हमारी होनी चाहिए। यह आदत हमें बदलनी होगी, यह न केवल हमारे लिए, बल्कि, पूरे शहर, पूरे देश के लिए भी जरूरी है।

ये बेहद जरूरी है कि भारत के हर घर में शौचालय हो, साथ ही खुले में शौच जैसी प्रवृत्ति/सोच को खत्म करने की आवश्यकता है। इसके लिए सरकार ने अपने कदम आगे बढ़ाये है और हर घर में शौचालय बनाने में मदद कर रही है, और इसकी पूरी लागत सरकार के द्वारा निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती है। नगर निगम या स्थानीय प्रशासन कचड़े का पुनर्चक्रण करें और वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबन्धन को लागू करें। खुद के स्वास्थ्य के प्रति भारत के लोगों की सोच और स्वभाव में परिवर्तन लाना होगा और साफ-सफाई की प्रक्रिया का कड़ाई से पालन कराना होगा। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में जागरूकता लाने के लिए कुछ विशेष पहल करनी होगी। इसके साथ ही साथ हमें अपने आस-पास पौधे लगाना चाहिए। स्वच्छता की स्थिति में पर्यावरणीय स्थिति भी स्वच्छ व स्वस्थ रहेगी। जलावरण, वातावरण, मृदावरण आदि पर विपरीत असर पहुँचा है। पर्यावरण हमारी रक्षा तभी करेगा जब हम अपने पास-पड़ोस की स्वच्छता पर ध्यान देगें। पूरी दुनिया पिछले कुछ समय से कोरोना वायरस से जूझ रही है, तो ऐसे समय में और भी जरूरी हो जाता है कि हम सब साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें। जिससे बाकी बीमारियों समेत कोरोना भी आपसे दूर ही रहे। आस-पास कचरे के सड़ने से घातक बीमारियाँ हो सकती हैं। कूड़ा न केवल हमारे स्वास्थ्य को, बल्कि हमारे पर्यावरण को भी नुकसान पहुँचाता है। प्लास्टिक, काँच, धातु जैसे फिर से उपयोग में लाए जा सकने वाले पदार्थों को, शुरू में ही कूड़े से अलग कर लेना चाहिए। स्वच्छता और पर्यावरण का प्रत्यक्ष सम्बन्ध है।

विविध रासायनिक उद्योगों, यातायात, जंगलों की कटाई, प्लास्टिक के अविवेकपूर्ण उपयोग, प्रदूषित जल, प्रदूषण आदि के कारण पर्यावरणीय अंसतुलन पैदा हुआ है। जिसका सीधा प्रभाव जन-जीवन पर पड़ रहा है। स्वच्छता के अभाव में, अपने आप ही गन्दी बस्तियाँ पैदा होने लगी है। आज गंदे निवास (स्लम) महानगरों की प्रमुख समस्या है। गाँवों में खुले में शौच क्रिया, खुली जलनिकास व्यवस्था और अशुद्ध जल पर्यावरण को हानि पहुँचाते हैं। गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने के लिए, स्वच्छता की आदत को आत्मसात करना एक सबसे महत्वपूर्ण कदम है। यहाँ तक कि पशु भी जब बैठते है तो उस जगह को साफ कर लेते है।

एक स्वच्छ समाज, आज के समय में देश की प्रमुख आवश्यकता है। एक गंदा वातावरण नकारात्मक ऊर्जा को प्रेरित करता है और ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता को भी कम करता है। इसीलिए हमारे पर्यावरण को साफ रखना महत्वपूर्ण है ताकि राष्ट्र को विकसित करने में मदद मिल सके। साथ ही हमारे कार्यस्थल को साफ रखना भी आवश्यक है क्योंकि इससे काम करने वाले लोगों में एक अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, कोई भी ऐसे व्यक्ति से सम्बन्ध नहीं रखेगा, जो दुर्गंध

और नकारात्मक ऊर्जा पैदा करता है। हमेशा अपने घर को साफ रखें। अपने शौचालय और रसोई को रोगाणुमुक्त रखें। देश के शहरों या नगरों में जो गंदगी या कचरे का अवांछित दृश्य दिखाई देता है, उसमें 90 प्रतिशत योगदान प्लास्टिक थैलियों का होता है। प्लास्टिक को नष्ट होने में वर्षों लग जाते हैं, अतः प्लास्टिक का प्रयोग न करें।

स्वच्छ भारत अभियान के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक कौन है? आम लोगों में सफाई का जनजागरण या नेताओं आदि महत्वपूर्ण व्यक्तियों द्वारा कभी-कभी झाडू हाथ में लेना? ये बातें भी जरूरी है, पर एक बार कचरा घर से बाहर या सड़क पर आ गया तो सफाई का सबसे बड़ा कारक है- सफाई कर्मचारी। उसका स्थान और कोई नहीं ले सकता है। वह सफाई व्यवस्था की रीढ़ है। अगर हम स्वच्छ भारत अभियान को पूर्ण सफल बनाना चाहते हैं तो हमें स्वच्छता सैनिकों को भी सम्मानजनक जीवनस्तर उपलब्ध कराना होगा।

स्वच्छता कोई काम नहीं है जो पैसे कमाने के लिए किया जाए बल्कि, ये एक अच्छी आदत है जिसे हमें अच्छे स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन के लिए अपनाना चाहिये। स्वच्छता पुण्य का काम है जिसे जीवन का स्तर बढ़ाने के लिये, एक बड़ी जिम्मेदारी के रूप में हर व्यक्ति को इसका अनुकरण करना चाहिये। स्वच्छता हमें मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से स्वस्थ रखती है। सभी के साथ मिलकर उठाया गया कदम एक स्वस्थ जीवन और लम्बी आयु के लिए भी बहुत जरूरी होता है। धरती पर हमेशा के लिए जीवन को संभव बनाने के लिए पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों को साफ बनाए रखना अति आवश्यक है। अपने भविष्य को चमकदार और स्वस्थ बनाने के लिए हमें हमेशा खुद का और अपने आसपास के पर्यावरण का ख्याल रखना चाहिये।

स्वच्छता के बहुत सारे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभ हमारे जीवन और पर्यावरण में दिखने के मिलते है। जैसे नियमित रूप से स्नान और हाथ धोने जैसे सरल कार्य, आपको आपकी त्वचा पर वायरस और बैक्टीरिया के कारण सर्दी, फ्लू और संक्रमण के संक्रमण को रोक सकते हैं। जब आप नियमित रूप से साफ-सफाई करते है, तो न केवल आप उन बैक्टीरिया और वायरस को फैलने से रोक सकते है, बल्कि अपने आपको तमाम गम्भीर बीमारियों से भी बचा सकते है। व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखने से आपके सामाजिक जीवन में भी लाभ होगा। उदाहरण के लिए जब आप नौकरी के साक्षात्कार में अच्छी तरह से तैयार होते है, अच्छी तरह से तैयारी दिखाते हैं तो आप एक सक्षम पेशेवर की तरह दिखते हैं। यदि स्कूल या कार्यस्थल में की स्वच्छता में गिरावट आती है, तो यह आपकी क्षमताओं और आपके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर सवाल उठा सकता है। सार्वजनिक स्थान पर कूड़ा डालने से उसके आस-पास तमाम तरह का संक्रमण फैलता है, जिससे गम्भीर बीमारियाँ पैदा होती है, और कोई भी बीमारी न केवल शरीर के लिए हानिकारक होती है, अपितु खर्च भी बढ़ा देती है। गंदे पानी व भोजन के सेवन से पीलिया, टाइफाइड, हैजा जैसी खतरनाक बीमारियाँ फैलती हैं। गंदे परिवेश में मच्छर पनपतें हैं जो मलेरिया, डेगूं, चिकनगुनिया जैसी जानलेवा बीमारियाँ फैलाते हैं। व्यर्थ की बीमारियों को बढ़ाने से अच्छा है कि हम स्वच्छता संबंधी नियमों का पालन करें, जो सदैव अपने विकास के साथ दूसरों का भी भला करता है। स्वच्छता से जहाँ शरीर स्वस्थ रहता है, वहीं स्वच्छता तन और मन दोनों की खुशी के लिए आवश्यक है। वर्तमान में कोरोना जैसी महामारी ने यह बात सिद्ध भी कर दी है कि स्वच्छता हम सबकी प्राथमिकता में होना चाहिए। जीवन में स्वच्छता से तात्पर्य स्वस्थ होने की अवस्था से भी है।

कहा भी गया है कि जहाँ स्वच्छता होती है वहीं ईश्वर का वास होता है। स्वच्छता को अपनाकर ही हम बीमारियों को खत्म कर सकते है। हमारी भारतीय संस्कृति में भी से यह मान्यता है कि जहाँ पर सफाई होती है वहाँ पर लक्ष्मी का वास होता है। हमारे भारतीय धर्मग्रन्थों में साफ-सफाई और स्वच्छता के बारे में बहुत से निर्देश दिए गए है। जहाँ पर चारों तरफ कूड़ा-कचड़ा फैला होता है और नालियों में गंदा जल और सड़ती हुई वस्तुएं पड़ी रहती हैं, वहाँ से गुजरने वाले लोगों को तमाम मुश्किलों का सामना करना होता है। वहाँ की गंदगी से जल, थल, वायु आदि पर बहुत ही विपरीत प्रभाव होता है। इसलिए-

हम सभी का एक ही नारा,
साफ-सुथरा हो देश हमारा।
स्वच्छता अपनाएँ,
बीमारियाँ भगाएँ।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि देश में स्वच्छता रखना केवल सरकार का ही नहीं, अपितु सभी नागरिकों का कर्तव्य होना चाहिए। देशवासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक होना चाहिए। समाज के सभी सदस्यों को आस-पास की सफाई में अपना योगदान देना चाहिए। नदियों, तालाबों, झीलों और झरनों के पानी में गंदगी को जाने से रोकने के लिए सभी को अपना योगदान देना चाहिए। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। शिक्षा से ही मनुष्य, खुद स्वच्छता की ओर प्रवृत्त हो जाता है। स्वच्छता उत्तम स्वास्थ्य का मूल है। स्वच्छता हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए। स्वच्छता सम्बंधी आदतों से हम स्वस्थ जीवन जी सकते है। जब हमारा पूरा परिवेश साफ रहेगा तो देश भी साफ रहेगा और इस प्रकार एक छोटी सी कोशिश मात्र से हम पूरे देश को साफ कर सकते हैं। हमें बच्चों को प्रारम्भ से ही स्वच्छता संबंधी जानकारी देनी चाहिए और इसे उनकी आदतों में शामिल कराना चाहिए क्योंकि वे देश के भविष्य हैं। सरकार द्वारा चलाए गए तमाम अभियानों में हम सब बढ़-चढ़कर हिस्सा लें, जिससे हम और हमारा देश स्वस्थ रह सके। इससे हमारे देश की वैश्विक स्तर पर पहचान होगी, पूरे विश्व में हमारे देश का मस्तक ऊँचा हो, ताकि सरकार व गाँधी जी का स्वच्छता का सपना साकार हो सके। इसके लिए हम सब एक जिम्मेदार नागरिक बने और देश के विकास में अपना योगदान दें। स्वच्छता अपनाएं और देश को आगे बढ़ाएँ और स्वस्थ भारत, स्वच्छ भारत का सपना साकार करें।

स्वच्छता अभियान से जागरूकता लाए,
साफ-सफाई में मिलकर हाथ बढ़ायें।

संजूः आज तो फेसबुक ने बचा लिया। **राहुल :** कैसे ? क्या हुआ ? **संजू :** आज बीवी का बर्थडे था। 😂😂😂😂😂

राष्ट्र-निर्माण और बुद्धि-शुद्धि

प्रभाकर दुबे
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ

शुद्ध अर्थात निर्मल, पवित्र, विकार रहित, कपट रहित, स्वार्थ से परे, सीधा, सरल, बोद्धगम्य और साधुता से पूर्ण। बुद्धि का उपर्युक्त विशेषण से युक्त होना, उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करता है। इसके विपरीत, बुद्धिमान होने के बावजूद भी, व्यक्ति निरंतर ह्रास की तरफ अग्रसर होते देखे गये हैं। जीवन में आए दिन इसके उदाहरण मिलते हैं और इसके दुष्परिणाम भी देखने को मिलते हैं। रावण बुद्धिमान कम नहीं था, पर उसकी बुद्धि शुद्ध नहीं थी, उसमें नाना प्रकार के विकार घर कर गए थे, फलस्वरूप अच्छे कुल में उत्पन्न होने के बावजूद भी राक्षसी प्रवृत्ति के कारण उसे राक्षस की संज्ञा दी गई और उसका ज्ञान, उसका सामर्थ्य और उसकी पूजा-अर्चना भी अंत में उसके काम नहीं आई। ओसामा बिन लादेन अभियांत्रिकी में स्नातक था तथा बगदादी किसी विश्वविद्यालय में शिक्षक था लेकिन इन दोनों का अंत अच्छा नहीं हुआ, कारण कि दोनों सन्मार्ग से भटके हुए पथिक थे, जो बुद्धिमान तो थे पर इनकी बुद्धि भी कुत्सित विचारों से प्रभावित थी, इसलिए दोनों ने ही विध्वंस का मार्ग अपना लिया था, परिणामतः इनके कार्यों से जन-धन की भरपूर हानि हुई और अंततः दोनों का दुःखद अंत हुआ।

रावण का अस्तित्व पौराणिक तथ्यों पर आधारित है एवं इसको प्रमाणिक मान लेने में कुछ लोगों को कठिनाई हो सकती है परन्तु अन्य दोनों ही उदाहरण हाल फिलहाल के हैं तथा उनके कृत्यों से तबाही का मंजर देखा जा चुका है। इस प्रकार के लोग और उनके द्वारा किए गए कार्य रचनात्मक एवं विवेकपूर्ण न होने के कारण, हमेशा विनाशकारी ही होते हैं। यह तो मात्र चंद उदाहरण हैं, जो समझने के लिए हैं पर इस तरह की मनोवृत्ति के लोगों से दुनिया भरी पड़ी है। हर जगह, हर समाज में, इस प्रकार के लोग देखने को मिल ही जाते हैं। जब इस प्रकार की सोच रखने वाले उच्च पदों पर पहुँच जाते हैं तो, जो नुकसान होता है उसकी भरपाई आसानी से नहीं होती। चूंकि सामान्य जन उच्च पदस्थ लोगों का स्वभाविक तौर पर अनुकरण करते हैं, इसलिए अक्सर यह देखा गया है कि इस प्रकार के लोग समाज में व्याप्त मूल्यों को बदलने की भूमिका निभाते हैं और पूरे वातावरण का इनसे प्रभावित होना स्वाभाविक है। कुछ घटनाएं मस्तिष्क को झकझोर देती हैं और मानवता को कलंकित भी करती हैं। ईश्वर ने जल, थल और नभ में अनेक जीव-जंतु उत्पन्न किए, जो जलचर, थलचर और नभचर के रूप में जाने जाते हैं और सभी में कुछ मूलभूत गुण समान दिए हैं, जिसके कारण सभी जीव-जंतु, अपना जीवन-यापन कर सकें। यह सर्वविदित है कि मनुष्य में भी आहार, निद्रा, भय एवं मैथुन, पशुओं के समान ही पाया जाता है। प्रकृति-प्रदत्त मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति सभी करते हैं परंतु इन सभी में मनुष्य अधिक बुद्धिमान, इसलिए है कि उसके पास विवेक और सोचने की शक्ति, अन्य की तुलना में कहीं बहुत अधिक है। उन्नति के शिखर पर पहुँचने और नए-नए कीर्तिमान स्थापित करने का कारण भी यही है और मनुष्य से अपेक्षाएं भी बहुत हैं। इसलिए, विवेक का प्रयोग कर उचित-अनुचित का ध्यान रखना चाहिए।

उपर्युक्त बात सभी पढ़े लिखे लोग जानते और समझते हैं और इस दिशा में सार्थक पहल की आवश्यकता भी महसूस करते हैं, कारण कि जो सामाजिक व्यवस्था विकसित होगी, उसी में सभी को रहना होगा और उसी के साथ, तादात्म्य भी स्थापित करना लोगों की मजबूरी होगी। हर व्यक्ति की इच्छा यही रहती है कि आने वाली पीढ़ी के लिए ऐसा वातावरण बनाए कि उन्हें सुकून से रहने का अवसर प्राप्त हो सके। फिर क्या कारण है कि न केवल मूल्यों में क्रमशः ह्रास देखने को मिल रहा है वरन् अत्याधिक सुख-सुविधा के बावजूद, मानसिक शांति का घोर अभाव हो रहा है। शिक्षा पर अपेक्षाकृत अधिक व्यय करने एवं नामचीन अंग्रेजी स्कूलों में दाखिले के बावजूद अनुशासन व चरित्र निर्माण अपेक्षा के अनुरूप नहीं है। परिणामस्वरूप, स्वेच्छाचारिता, व्यक्तिवाद, स्वार्थपरता और भ्रष्ट आचरण का, जहाँ एक ओर प्रादुर्भाव हो रहा है वहीं दूसरी ओर राष्ट्रप्रेम, सामाजिक मूल्य, आपसी भाईचारा, समाज के प्रति दायित्वों का घोर अभाव देखने को मिल रहा है। बिना बल प्रयोग के नियम, कायदा-कानून और आदर-सम्मान स्वीकार करने की स्थिति, चिंताजनक है। इसलिए कानून व्यवस्था स्थापित करने में जहाँ प्रशासन को काफी मशक्कत करनी पड़ती है वहीं दूसरी ओर कुछ लोग उत्पीड़न का शिकार भी होते हैं कारण कि शासन-प्रशासन में कार्यरत लोग भी इसी समाज की उपज है जो वर्तमान स्थिति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते।

समय के प्रवाह को रोकना कठिन है। कभी संचार के त्वरित माध्यम का घोर अभाव था और यही कारण था कि संवादहीनता की स्थिति रहती थी पर आज स्थिति बिलकुल भिन्न है। विकास के साथ जहाँ बहुत-सी अच्छाईयाँ आती हैं वहीं दूसरी ओर कुछ नकारात्मकता का होना भी स्वाभाविक है। बात वहीं पहुँचती है कि बुद्धि का शुद्ध होना आवश्यक है। जहाँ एक ओर व्हाट्सएप का प्रयोग कर लोग अनेकों अच्छी जानकारियाँ शीघ्रातिशीघ्र प्रेषित कर रहे हैं वहीं कुछ लोग अनर्गल उपयोग में भी व्यस्त हैं। इंटरनेट सेवा ने दुनिया का स्वरूप बदल कर रख दिया है। जहाँ पहले हम टिकट आरक्षण के लिए काफी मशक्कत करते थे, वहीं आज घर बैठे इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं और आरक्षण प्राप्त करने में सफल हो रहे हैं। कुछ स्वार्थी लोग, इसका गलत उपयोग कर लोगों को कठिनाई में भी डाल रहे हैं जो उचित नहीं है। जहाँ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से समाचार की विस्तृत जानकारी उपलब्ध हो रही है वहीं कुछ स्वार्थी लोग, इसमें भी अपना व्यक्तिगत हित साधने और सुचिता को प्रभावित करने में लगे रहते हैं, जिससे गुणवत्ता के साथ-साथ विश्वास में भी कमी आती है। कुल मिलाकर, आधुनिक युग, अर्थ-प्रधान हो गया है और येन-केन प्रकारेण, इसको प्राप्त करने के उपाय ढूंढे जा रहे हैं। निचले स्तर की गड़बड़ियों को तो थोड़ी शक्ति के

साथ, सुधारना आसान है। कहीं-कहीं व्यवस्था का दोष भी, इनके गलत कार्यों के लिए जिम्मेदार है। पर सक्षम और सफल लोगों द्वारा किए जा रहे अत्याचार, अनाचार, दुराचार जैसे कार्यों को रोकना कठिन हो रहा है और यही कारण है कि इस तरह के कार्यों को समाज में धीरे-धीरे स्वीकार्यता प्राप्त हो रही है और ऐसे ही लोग महिमामंडित भी हो रहे हैं। अपराधी तत्वों और राजनेताओं का गठबंधन भी इस दिशा में अहम भूमिका निभा रहा है और यही कारण है कि लोक लुभावने वादे और किए जा रहे प्रयास भी निरर्थक साबित हो रहे हैं। परिणामस्वरूप, साधनहीन और कमजोर लोगों के जीवन स्तर में सुधार की संभावना कम दिख रही है।

समय परिवर्तनशील है और परिवर्तन प्रकृति का नियम भी है। समय-समय पर मूल्यों में भी परिवर्तन होता ही रहता है। पर इस प्रत्याशा में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना भी ठीक नहीं है। बुद्धि की शुद्धि के लिए, वृहद स्तर पर अनवरत प्रयास की आवश्यकता है। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है। शिक्षा केवल रोजगारपरक न होकर, चरित्र निर्माण के लिए भी होनी चाहिए। परिवार में शुरू से ही बच्चों को अच्छे संस्कार देने चाहिए, ताकि वे लोभ व संग्रह की प्रवृत्ति से बचें और सच्चाई के रास्ते पर चलने का प्रयास करें। प्राचीन भारतीय सनातनी परंपरा जिसमें सभी के सुख समृद्धि व निरोगी होने की कामना है का अनुकरण करने की शिक्षा देना लाभप्रद है ताकि आपसी सहयोग व भाईचारे की भावना विकसित हो। जाति, धर्म व क्षेत्रीय भेदभाव को हमेशा हतोत्साहित किया जाना उचित होगा। मजबूत व सत्य पर आधारित न्याय प्रणाली का होना अत्यधिक आवश्यक है ताकि सभी को त्वरित तथा बिना भेदभाव एवं पक्षपात के न्याय मिल सके। अपराधी को उसके अपराध के लिए कम से कम समय में दंड मिल सके, ताकि जहाँ एक ओर लोगों के मन में दंड का भय व्याप्त हो, वहीं दूसरी ओर शिष्ट एवं सदाचारी लोग सुकून से रह सके। राष्ट्र के प्रति लोगों के मन में आदर का भाव हो, परन्तु यह तभी संभव है जब शासन व्यवस्था न्याय संगत हो और सबको विकास के समान अवसर प्राप्त हो सके। गलत कार्यों को हतोत्साहित किया जाए तथा करने वाले को बिना किसी भेदभाव के दंडित किया जाए। जनसंख्या नियंत्रण हो, ताकि संसाधनों की छीना-झपटी और अव्यवस्था न हो। देश सेवा में उन्हीं लोगों को प्रोत्साहित किया जाए, जो चारित्रिक रूप से मजबूत हो तथा जिनका सामाजिक जीवन जाँचा-परखा हो, ताकि सभी के साथ न्याय हो सके। यदि इस तरह के उपाय अपनाए जाएं और निरंतर सजग रहकर प्रयास जारी रहे, तो निश्चित रूप से नवचेतना का संचार होगा और हम अपने गौरवशाली इतिहास की ओर तेजी से अग्रसर होंगे। हमारे धर्म-शास्त्र हमेशा उच्चतम मानव मूल्यों के हिमायती रहे हैं, यही कारण है कि अभाव के समय में भी, बलिदानियों और देशभक्तों का ताँता लगा रहा। परिणामस्वरूप हर कठिनाई से उबर कर आज हम एक सशक्त राष्ट्र के रूप में उभर रहे हैं और संत महात्माओं तथा वीर पुरुषों के योगदान को स्मरण कर और उनके आदर्शों को अपने आचरण में उतार कर, आगे का कार्य करना है ताकि विश्व पटल पर भारतीय संस्कृति और जीवन-पद्धति का ध्वज हमेशा फहराता रहे और हम विश्व पटल पर हर क्षेत्र में नेतृत्व करने में सक्षम हो सकें।

वाह रे विधाता

अनीता सिंह
पत्नी श्री प्रदीप कुमार, सहायक पर्यवेक्षक
कार्या-प्र.म.ले.(ले.प.-II)
उ.प्र., लखनऊ

सोचा था पहुँच जाऊँगी अपनी मंजिल पर,
पर पहुँच भी नहीं पायी किसी साहिल पर।

पहुँच जब मिलने गई
अपनों से उनकी महफ़िल पर,
देखती रह गयी थाम लिया अपने इस दिल को,
सजा भी न दे पायी इस मन के कातिल को।

"वाह रे विधाता !"
सुख क्या देते
दुःख भी न दिया इस काबिल को।
आये थे इस जग में जीने ज़िन्दगी को,
पर क्या मालूम था कि
छोड़कर जाना पड़ेगा
ऐसे जग की महफ़िल को।

अन्त जब आया इस मजबूर जिन्दगी का,
तो सोचकर पछताती रह गयी, और सोचा,
कि "हाय विधाता !" अभी तो जान भी नहीं पायी थी,
इस निर्दयी विश्व अखिल को।

भाषा

भाषा विचारों की संवाहिका है समसामयिकता की पृष्ठभूमि में नवार्जित ज्ञान, अनुभूतियों व कल्पना की रश्मियों से सुसज्जित होकर विचारों के रूप में, भाषा की विविध विधाओं के माध्यम से, लेखकत्व प्रादुर्भूत होता है। वस्तुतः हर मनुष्य में लेखकत्व कला विद्यमान होती है। उसके हृदय की भावुकता, भावों की तरलता एवं वातावरण की अनुकूलता, उसे साहित्य सृजन अथवा रचना के लिए अभिप्रेरित करती है। रचना के लिए भाषा की बाध्यता नहीं वह कोई भी हो सकती है। परन्तु किसी भी रचना में प्रवाहमयता का भाव तभी आ सकता है, जब रचना में प्रयुक्त भाषा से आत्मीयता का सम्बन्ध हो। इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदी भाषा से हमारी आत्मीयता है। यह शैशवकाल से ही हमारे साथ जुड़ी हुई है।

रुको !!

धीरेन्द्र किशोर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या-निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा,
लखनऊ

रुको,
मत जाना फेर कर मुँह अपना,
अभी बहुत कुछ कहना है।

क्यों आसमाँ पे टाँके तारे
धरती पे फूल इतने सारे,
क्यों इंद्रधनुष में रंग डाले
वीणा के स्वर में झंकारें।

रुको,
मत उठाना सर से ओढ़नी अपनी,
अभी कुछ और पहर रहना है।

क्यों सुरमई रात के पहरे
चाँद चांदनी को बिखेरे,
क्यों रेशमी सुबह सुनहरे
आसमान में रँग उकेरे।

रुको,
मत सजाना आँख में काजल,
अश्रुओं को बहना है।

रुको,
मत जाना फेर कर मुँह अपना
अभी बहुत कुछ कहना है,
रुकों।

सानिध्य

दीपिका पांडे
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ
शाखा-प्रयागराज

मन की हर हलचल में अब तुम हो
दिल की हर हलचल में अब तुम हो,
इन्द्रधनुष के हर रंग में अब तुम हो
मन की हर तरंग में अब तुम हो।

गीतों की हर लय में अब तुम हो
फूल की हर खुशबू में अब तुम हो,
तुमसे खुशियों की कलियां खिलती है
छाया, प्रतिबिंबित में अब तुम हो।

दिल के हर दर्पण में अब तुम हो
मन की रागरागिनी में अब तुम हो,
मन की हर इच्छायें हैं तुमसे
हरदम चिंतन में अब तुम हो।

संध्या को आते चंद्र किरण बनकर
भोर होते ही आते धूप का कण बनकर,
गीत बनकर ही सही पर आ गए हो तुम
मेघ बनकर ही सही पर छा गए हो तुम।

एक बादशाह को एक नौकर की आवश्यकता थी। उसके मंत्रियों ने तीन उम्मीदवार उनके सामने पेश किए गए। बादशाह ने उन तीनों उम्मीदवारों से पूछा- ''यदि मेरी और तुम्हारी दाढ़ी में साथ-साथ आग लगे तो पहले किसकी बुझाओगे?''
एक ने कहा, पहले आपकी बुझाऊँगा। दूसरे ने कहा, पहले मैं अपनी बुझाऊँगा। तीसरे ने कहा, एक हाथ से अपनी और दूसरे हाथ से आपकी बुझाऊँगा।
बादशाह ने तीसरे आदमी की नियुक्ति कर दी और दरबारियों से कहा- ''जो अपनी उपेक्षा करके दूसरों का भला करता है वह अव्यावहारिक है। जो स्वार्थ को ही सर्वोपरि समझता है वह नीच है और जो अपनी और दूसरों की भलाई का समान रूप से ध्यान रखता है उसे ही सज्जन कहना चाहिए। मुझे सज्जन की आवश्यकता थी, सो उस तीसरे आदमी की नियुक्ति की गई।''

प्रयागराज का समय और हवा

गणेश शंकर निषाद
सहायक सम्प्रेक्षा अधिकारी
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ
शाखा-प्रयागराज

भारत, दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा देश है। यह, पूर्व में डिब्रूगढ़ से लेकर पश्चिम में राजकोट तक व उत्तर में श्रीनगर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक विस्तृत है। हर देश में सूर्योदय के अनुसार प्रत्येक शहर का अलग-अलग स्थानीय समय होता है लेकिन व्यवस्था, प्रशासन व एकरूपता बनाये रखने हेतु, एक क्षेत्र-विशेष का एक मानक समय निर्धारित कर दिया जाता है और उस क्षेत्र में, वही मानक समय मान्य होता है, भले ही स्थानीय समय कुछ भी हो। अरूणाचल से गुजरात तक हमारे देश की चौड़ाई लगभग तीन हजार किलोमीटर है। इतनी दूरी में, लगभग दो घण्टे के समय का अंतर आ जाता है, लेकिन देश का मानक समय एक होने के कारण दोनों जगह एक ही समय माना जाता है, क्योंकि भारत का समय-क्षेत्र (टाइम जोन) एक ही है। कई देशों में अनेक समय-क्षेत्र होते हैं। उदाहरण के तौर पर, रूस में ग्यारह समय होते हैं और वहाँ पूर्वी छोर के लोग, जब काम-काज की शुरुआत कर रहे होते है तब पश्चिमी छोर के लोग सो रहे होते हैं।

सम्पूर्ण भारत का मानक समय वही है जो प्रयागराज का स्थानीय समय होता है। 82.5° पूर्वी देशांतर रेखा, जोकि प्रयागराज के पास से गुजरती है, से भारत का मानक समय लिया जाता है। उदाहरण के लिए डिब्रूगढ़, भोपाल, जैसलमेर व राजकोट का स्थानीय समय अलग-अलग होगा, परंतु सभी स्थानों का मानक समय, प्रयागराज का स्थानीय समय ही होगा। अतएव प्रयागराज का समय ही पूरे देश का समय माना जाता है।

प्रयागराज की हवा

मानव स्वास्थ्य के लिए शुद्ध हवा अत्यंत आवश्यक है। शुद्ध हवा ही स्वास्थ्य का आधार स्तम्भ है परंतु दुर्भाग्य से शहरों की हवा निरंतर खराब होती जा रही है। इसके कई कारण हैं, परंतु एक प्रमुख कारण अंधाधुंध व अनियोजित शहरीकरण है। अभी हाल ही में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार, विश्व के दस सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में भारत के 9 शहर थे जिनमें कानपुर, दिल्ली व लखनऊ शहर शामिल थे। उत्तर प्रदेश के **कवाल टाउन** (कानपुर, आगरा, वाराणसी, प्रयागराज व लखनऊ को उत्तर प्रदेश का **कवाल टाउन** कहा जाता है) में संभवतः सबसे ज्यादा हरियाली, प्रयागराज में है परंतु यहाँ भी वायु प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। इस शहर के आस-पास, पहले बहुत से अमरूद के बाग थे, जो काट दिये गये हैं और आगे भी काटे जा रहे हैं। यहाँ का सेबिया अमरूद (लाल रंग वाला) बहुत प्रसिद्ध है। इस शहर में वायु प्रदुषण का सबसे मुख्य घटक, धूल व वाहनों का धुँआ है। सड़क के किनारे अव्यवस्थित, फैली हुयी व ठीक ढंग से नहीं रखी गयी, भवन व सड़क निर्माण सामग्री की वजह से धूल प्रदूषण फैल रहा है। इसके लिए प्रशासन व समाज, सभी जिम्मेदार है। वायु प्रदूषण को नियंत्रित किया जाना अति आवश्यक है अन्यथा यह मानव स्वास्थ्य के लिए काफी घातक होगा।

प्रयागराज शहर तीन तरफ से नदियों से घिरा है। उत्तर व पूर्व में गंगा व दक्षिण में यमुना नदी ने शहर को घेर रखा है, इस कारण से शहर के विस्तार को कम जगह मिली, फलस्वरूप, शहर की बसावट घनी होती जा रही है। घनी आबादी होने के कारण वायु प्रदूषण बढ़ रहा है। दक्षिण में करेली, अटाला, खुलदाबाद, सदियापुर, दरियाबाद, कीडगंज व पूर्व में दारागंज सहित कई क्षेत्रों में तंग गलियों व सघन आबादी के कारण वायु प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। शहर में जगह कम होने के कारण, नदियों के पार, शहर का तेजी से विस्तार होता रहा है और नैनी, झूँसी व फाफामऊ जैसे उपनगरीय क्षेत्रों में बसावट तेजी से बढ़ रही है। इन उपनगरीय क्षेत्रों में, अभी अधिक घनी आबादी न होने के कारण हवा बेहतर है परंतु नैनी में पहले से औद्योगिक इकाइयों के कारण हवा के मामले में फाफामऊ, झूँसी बेहतर हैं।

कारण जो भी हो, परन्तु एक नागरिक के रूप में, यदि हम अपने उत्तरदायित्व का निवर्हन सही रूप से करें तो, न केवल प्रयागराज को, अपितु यहाँ के निवासियों को भी, वायु प्रदूषण से मुक्ति मिल सकती है।

एक बार डेविड नाम का एक लड़का भेड़ चराते हुए उसी गाँव के पास से गुजर रहा रहा था, तो उसने उस गाँव के लोगों से पूछा कि आप लोग इस राक्षस को मारते क्यूँ नहीं हैं, उसका सामना क्यूँ नहीं करते है।
उन लोगों ने जवाब दिया ''तुमने देखा नहीं, वो कितना बड़ा है, उसे मारा नहीं जा सकता है।''
डेविड ने कहा- बात यह नहीं है कि उसके बड़ा होने की वजह से उसे मारा नहीं जा सकता है; बल्कि हकीकत यह है, वह इतना बड़ा है कि उस पर लगाया गया निशाना चूक ही नहीं सकता है।
उसके बाद डेविड और गाँव वालों ने मिलकर सिर्फ गुलेल से उसे मार दिया। राक्षस वही था पर उसके बारे में डेविड का नजरिया अलग था।

उलझन

राम औतार प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(सेवानिवृत्त)
कार्या-महानिदेशक, ले.प.(के.), लखनऊ,
शाखा-पटना

एक ऐसी उलझन, सुलझे न मन
करूं तो क्या करूं, है ऐसी उलझन।

बीता था साथ उसके बचपन
साथ रहा वो हर क्षण,
कैसे और क्या हुआ
आज विकल उसका मन।
है एक उलझन।

करता हूँ आत्मविश्लेषण,
कहीं मैं तो नहीं कारण।
पाता हूँ हुआ कुछ नहीं है,
प्रेम भी उसका वही है
वही है अपनापन
पर वह जोश नहीं, उत्साह नहीं
बेबाकीपन, वो हठ नहीं
समझ नहीं आता, कैसी है उलझन।

मैं तड़पता रहता हूँ
कही झेल नहीं रहा वो कुछ,
हिम्मत की, उसकी पत्नी से पूछा-
कैसी है उलझन?
रहता शांत व मौन हर क्षण।
पत्नी बोलीं-'पता नहीं'
लगता नहीं उनका मन,
पूछता हूँ तो बताते नहीं
मैं तो पहुँच गई हूँ
अभी ही अपने चौथेपन।
मुझे भी है उलझन।

एक दिन बैठाया अकेले में उसको, पूछा हाल
टपकने लगे उसके आँसू, भींग गया बदन
सिसक रहा था
कुछ बोल नहीं पा रहा था
बहुत पूछा, तब बोला- क्या कहूँ
पापा, भैया के पास
विदेश को चले गये
छोड़ गये अपना वतन,
कब लौटेंगे, पता नहीं,
अब मुझे टोकने वाला कोई नहीं,
'क्यों देर हुई', पूछने वाला कोई नहीं
'जाओ! ला दो मेरे लिए पान-कसैली'
कहने वाला कोई नहीं
बच्चों के डांटने पर, मुझे डांटा करते थे
ऐसा करने वाला अब कोई नहीं।
सिहरता हूँ ऐसा सोंचकर हर क्षण,
कब लौटेंगे, पाऊँगा वो क्षण।

पापा की डांट, पापा की सलाह से
मरहूम हो गया हूँ इस क्षण
पापा धरोहर थे, सुकून थे, धैर्य थे
सच कहूँ, पापा होते ही हैं ऐसे
नीम व पीपल के दरख्त जैसे
ऑक्सीजन देते रहते हमें
जितना दिन रहो, पापा के पास रहो
चरण धूलि उनकी
माथे पर लगाते रहो
उनका यहाँ न रहना
यही है मेरी उलझन।

मन नहीं लगता एक भी क्षण
मैं भी सिसक पड़ा, उसी क्षण।
दोनों कपसने लगे तत्क्षण
सच है उसका उलझन
अनसुझी उलझन
पर सार्थक उलझन...!!!

कार्यालयीन अंग्रेजी-हिन्दी शब्दावली

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी रूपांतरण	अंग्रेजी शब्द	हिन्दी रूपांतरण
Random verification	यादृच्छिक सत्यापन	Mutatis mutandis	परिवर्तनों के साथ
Reservoirs	जलाशय	Modus operandi	कार्य-प्रणाली
Safeguard	रक्षोपाय	Ipso facto	स्वयमेव
Misstatement	मिथ्या कथन	Pecuniary	वित्तीय
Cherry pick	मनोनुकूल चयन	Summarised	सारांकित
Unwarranted	अनुचित/अनावश्यक	Viable	कार्य योग्य
Post-facto	कार्योत्तर	Notwithstanding	के होते हुए भी/फिर भी

प्रस्तुतिः बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालयः प्र.म.ले. (लेखापरीक्षा-II), उ.प्र., लखनऊ

आपके पत्र/आशीर्वाद/प्रतिक्रिया

धन्यवाद ज्ञापन

राजभाषा हिन्दी पत्रिका **'संधान'** के तृतीय अंक के बारे में भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग के कार्यालयों से बेहद उत्साहजनक प्रतिक्रियाएं आशीर्वाद स्वरूप प्राप्त हुई। प्रतिक्रियाओं में **'संधान'** के तृतीय अंक की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। न केवल संधान में प्रकाशित लेखों एवं रचनाओं को सराहा गया, बल्कि पत्रिका के रूप एवं कलेवर की भी प्रशंसा की गई। आपकी इतनी उत्साहजनक प्रतिक्रिया, हमें न केवल पत्रिका के सम्पादन में और अधिक उत्तरदायी बनाती है बल्कि पत्रिका को और बेहतर बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। सम्पादक मण्डल एवं समस्त संधान परिवार की ओर से, आप सभी का इस आशा के साथ कोटि-कोटि हार्दिक आभार कि आगामी अंकों के लिए भी हमें आपका आशीर्वाद इसी प्रकार मिलता रहेगा।

संपादक मण्डल 'संधान'

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका ''संधान'' के तृतीय अंक वर्ष 2020-21 की ई-पत्रिका के रूप में प्राप्ति हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका ''संधान'' के तीसरे अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद, पत्रिका का सम्पादन सराहनीय है। पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर ''कोरोना में पलायन'', ''प्रकृति की पुकार'', ''इन दिनों हालात'', ''हिन्दी की वेदना'', ''बुझ गए चिराग'', आदि रचनाएँ प्रेरणादायक और सराहनीय है।

पत्रिका का प्रवाह इसी प्रकार निरंतर चलता रहे, ऐसी कामना है।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (ऑडिट-II) म.प्र.
होशंगाबाद रोड, भोपाल

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका 'संधान' के तृतीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। दीपिका पांडे की 'नव-आविष्कार, नव-खोज', आभा पांडे की 'बारिश की रिमझिम बूंदों पर,' शैलेंद्र कुमार शर्मा की 'हिंदी की वेदना' व 'नेता जी का नाश्ता', नितनेम सिंह सोढी की 'अवसाद आखिर क्यों?', मंजुला श्रीवास्तव की 'धनुषकोडी-एक विस्मृत तीर्थस्थल' आदि रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

सधन्यवाद।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.), कर्नाटक, बेंगलुरु

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 02-11-2020 के द्वारा, कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''संधान'' की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्च-स्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ व पत्रिका में दर्शाई विभिन्न गतिविधियों की झलकियाँ अति मनमोहक हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हिंदी गृह–पत्रिकाएँ बहुमूल्य योगदान निभा रही हैं। संबन्धित पत्रिका का यह अंक भी इस लक्ष्य की ओर निष्ठा के साथ अग्रसर है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मण्डल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिन्दी कक्ष

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.), हरियाणा

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका ''संधान'' का तृतीय अंक (ई-संस्करण) इस कार्यालय में मेल के माध्यम से प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। श्री विजय शंकर वर्मा कृत ''हार-जीत'', श्री प्रदीप कुमार कृत ''इच्छा जो पूरी नहीं हो सकी'' एवं श्री सत्य शील कृत ''महाभारत कुछ रोचक तथ्य'' उत्कृष्ट हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) तेनामपेट, चेन्नई

महोदय,

कृपया उपरोक्त विषयक अपने कार्यालय का ई-मेल दिनांक 02-11-2020 अपराहन 12:51 का अवलोकन करें।

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई तिमाही हिंदी पत्रिका ''संधान'' के तृतीय (जनवरी-जून 2020) अंक की ई-मेल प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई हैं। इस हिंदी पत्रिका के तृतीय अंक की सभी रचनाएं, लेख, कविता, कहानियां इत्यादि इस कार्यालय के अधिकारियों कर्मचारियों को अत्यंत पसंद है।

''संधान'' तृतीय अंक के लेख में रचनाकारः श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव द्वारा रचित ''कोरोना में पलायन'' श्री देवमणि पांडेय द्वारा लिखित रचना ''क्या-क्या हुआ गांव से गायब'', श्री शैलेंद्र कुमार शर्मा द्वारा लिखित रचना ''हिंदी की वेदना'', श्री सत्य शील द्वारा रचित ''महाभारत के कुछ रोचक तथ्य'' तथा श्री अखिलेश कुमार द्वारा लिखित ''आत्महत्या आखिर क्यों?'' बहुत ही अच्छी और पठनीय हैं। इस पत्रिका के सभी रचनाएं मनभावन और दिल को स्पर्श करने वाली हैं।

पत्रिका अपने कार्य को बखूबी निभा रही है, इसके आने का इंतजार इस कार्यालय को हमेशा रहता है। प्रकाशन के उज्जवल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

कार्यालय वित्त एवं संचार विभाग, सीनपुरा, कपूरथला (पंजाब)

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका ''संधान'' के अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका समाविष्ट लेख, कविताएं, सभी उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री बृजेश्वर प्रसाद त्रिपाठी की रचना ''प्रकृति की पुकार'', श्री देवमणि पाण्डेय की रचना ''क्या क्या हुआ गाँव से गायब'' तथा श्री अखिलेश कुमार का लेख ''आत्महत्या आखिर क्यों?'' आदि उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), महाराष्ट्र, नागपुर

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'संधान' के तृतीय अंक की ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई है। पत्रिका की साज-सज्जा अति उत्तम है। पत्रिका में क्या-क्या हुआ गाँव से गायब, नया विधान, हिंदी की वेदना, नेताजी का नाश्ता रचनाएं रोचक है।

आशा है कि पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं।

सधन्यवाद,

हिंदी अधिकारी

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम, गुवाहाटी

जुलाई 2020 से जून 2021 के मध्य हुए मुख्य क्रियाकलाप

कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम

ऑडिट भवन में **दिनांक 12 जून 2021** को **कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम** का आयोजन किया गया, जिसमें **187 लोगों** का टीकाकरण किया गया।

अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का शुभागमन

दिनांक 18 फरवरी 2021 को भारत की **अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक** (एन.सी.आर.) **सुश्री दिव्या मल्होत्रा** तथा **महानिदेशक** (एन.सी.आर.-I) **सुश्री आत्रेयी दास** का 'नोयडा में भू-अधिग्रहण एवं सम्पत्तियों के आबंटन' से सम्बंधित निष्पादन लेखापरीक्षा पर चर्चा हेतु ऑडिट भवन में शुभागमन हुआ।

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

सितम्बर 2020 में ऑडिट भवन स्थित सभी कार्यालयों में कोरोना प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए, हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगितायें एवं कार्यक्रम आयोजित किये गये।

पेंशन अदालत का आयोजन

दिनांक 29 दिसम्बर 2020 को **कार्यालय महालेखाकार** (लेखा एवं हक.) **II, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज, शाखा-लखनऊ** द्वारा **ऑनलाइन पेंशन अदालत** का सफल आयोजन किया गया, जिसमें पेंशन सम्बन्धी शिकायतों का निवारण किया गया।

जुलाई 2020 से जून 2021 के मध्य पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति

जुलाई 2020 से जून 2021 की अवधि में पदोन्नति पाये सभी कर्मचारियों/अधिकारियों को हार्दिक शुभकामनायें। साथ ही इस अवधि में निष्ठा के साथ, भारत सरकार में कर्त्तव्य निर्वहन करते हुये अधिवार्षिकी पर सेवानिवृत्त हुये सभी कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए 'संधान परिवार' स्वस्थ एवं मंगलमय दीर्घ जीवन की कामना करता है।

कार्यालय-महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	प्रभावी तिथि
	पदोन्नतियाँ	
रूपेश	सहा. लेखापरीक्षा अधि.	02-11-2020
मनोज कुमार	-उपरोक्त-	28-09-2020
दिलीप खरवार	-उपरोक्त-	28-09-2020
वंदना सिंह	पर्यवेक्षक	05-01-2021
महेंद्र कुमार	पर्यवेक्षक	05-01-2021
पंकज मौर्य	सहा. लेखापरीक्षा अधि. (तदर्थ)	07-10-2020
सौरभ प्रताप सिंह	-उपरोक्त-	07-10-2020
संजीव वर्मा	-उपरोक्त-	07-10-2020
संतोष वर्मा	-उपरोक्त-	07-10-2020
अनादि शुक्ला	-उपरोक्त-	07-10-2020
नितीश कनौडिया	-उपरोक्त-	07-10-2020
अंकुर पंत	-उपरोक्त-	07-10-2020
प्रशांत सोनकर	-उपरोक्त-	25-06-2021
कृष्ण कान्त चौधरी	-उपरोक्त-	25-06-2021
हरजीत सिंह	-उपरोक्त-	25-06-2021
हर्ष यादव	-उपरोक्त-	25-06-2021
शशांक ठाकुर	-उपरोक्त-	25-06-2021
सुरजीत सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	01-01-2021
नीरज कुमार	सहायक पर्यवेक्षक	24-03-2021

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	प्रभावी तिथि
रमेशेश्वर	वरिष्ठ लेखा परीक्षक	28-10-2020
रोहित कुमार	डी.ई.ओ. ग्रेड बी	31-12-2020
	सेवानिवृत्तियाँ	
सुनील शर्मा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31-10-2020
लक्ष्मी सहाय	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31-01-2021

स्वतंत्रता दिवस (2020) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

लीना दरियाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
चन्द्रजीत यादव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुनील शर्मा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
राम जनम राम	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
विश्वनाथ	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
विजय बहादुर सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
वन्दना सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
नितीश कनौडिया	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
आंकाक्षा सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
दीपक बाजपेयी	लेखापरीक्षक
नवीन कुमार	डी.ई.ओ.
राम सुरेश	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
राजेश कुमार स्वंयभू	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
विनय कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम
सत्यशील	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
रितेश छाबड़ा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
वेद प्रकाश शुक्ला	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
अभय कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
राकेश कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
पुष्प कुमार मौर्या	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
संजय कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
अमितेश कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
आदर्श कुमार कर्ण	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
वन्दना सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
दिलीप खरवार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
दुर्गेश अवस्थी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
हर्ष यादव	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कृष्ण कान्त चौधरी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
अंकुर पन्त	डी.ई.ओ.

गणतंत्रता दिवस (2021) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

देवेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
अभय झा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
उदय पाल सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हीरा सिंह खनका	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
योगेश कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
आशीष कुमार गुप्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
पंकज कुमार सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
दीपेन्द्र पाण्डेय	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
राहुल कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
क्षमा त्रिपाठी	लेखापरीक्षक
सौरभ वर्मा	लेखापरीक्षक
ई.ए.पी.एस. शास्त्री	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
रोमी सुल्तान	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
अर्जुन राम	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुरजीत सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
स्वाति गुप्ता	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
शंशाक ठाकुर	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
अमरनाथ राय	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
आशीष कुमार	लेखापरीक्षक
रवि सिंह	डी.ई.ओ.

कार्यालय-महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय) लखनऊ, शाखा-प्रयागराज (प्रत्यक्ष कर)

स्वतंत्रता दिवस (2020) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

मनोज कुमार श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
पी.बी.डी. नैथानी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
अविनाश कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
राजेश शर्मा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
शरद चंद्र उपाध्याय	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम
सूरज तिवारी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
सुनील कुमार मौर्या	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
टुनटुन कुमार	डी.ई.ओ.
सुधांशु शुक्ला	एम.टी.एस.

गणतंत्रता दिवस (2021) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

विकास चन्द्र योगेश्वर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
अच्छे लाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
अजय कुमार गुप्ता	पर्यवेक्षक
अनिल सिंह पटेल	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
प्रशान्त	लेखापरीक्षक
रजनीश कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
आदर्श पाण्डेय	लेखापरीक्षक

कार्यालय-महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय) लखनऊ, शाखा-प्रयागराज (केन्द्रीय व्यय)

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	प्रभावी तिथि
	पदोन्नतियाँ	
राजा कुमार	स.स.अ. (तदर्थ)	07-10-2020
सुनील कुमार मौर्या	-उपरोक्त-	07-10-2020
राम बहादुर	सहायक पर्यवेक्षक	01-01-2021
शिव बाबू	लिपिक	01-01-2021

स्वतंत्रता दिवस (2020) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

सुनील कुमार भट्टाचार्या	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
अनूप कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
वी.के. श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
मनजीत	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
रोशनी कुमारी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
वेद प्रकाश शुक्ला	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
सुमित पाण्डेय	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कल्पना सचान	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
राजेन्द्र बाबू	वरिष्ठ लेखापरीक्षक

गणतंत्रता दिवस (2021) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

सत्य प्रकाश	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
एस.एच. असगर	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
छाया रानी श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
सुनील कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
लाल मोहन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
सुरेश कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
मोहन प्रकाश मीना	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
रजनी बाला	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
आर.के. सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
राम रतन मीना	वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कार्यालय-महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय) लखनऊ, शाखा-पटना

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	प्रभावी तिथि
	पदोन्नतियाँ	
मुकेश कुमार	सहा. लेखापरीक्षा अधि. (तदर्थ)	24-08-2020
अजय कुमार झा	-उपरोक्त-	24-08-2020
साकेत बिहारी	-उपरोक्त-	24-08-2020
धर्मवीर कुमार	-उपरोक्त-	28-05-2021
विनय कुमार झा	सहायक पर्यवेक्षक	01-01-2021
ऋषिकेश वर्मा	-उपरोक्त-	01-01-2021
शत्रुघ्न कुमार	-उपरोक्त-	01-01-2021
श्रवण कुमार दयाल	-उपरोक्त-	01-01-2021
संगीता वर्मा	लेखापरीक्षक	01-01-2021
कमल किशोर सिन्हा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	25-02-2021
	सेवानिवृत्तियाँ	
प्रदीप कुमार सिन्हा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30-11-2020
एम.ए. तमन्ना	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31-12-2020

स्वतंत्रता दिवस (2020) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

दिलीप कुमार अरोड़ा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुजीत कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कमल किशोर सिन्हा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

गणतंत्रता दिवस (2021) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

दीपक कुमार रजक	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
मोहम्मद नईम अंसारी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुबोध प्रसाद	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय-महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय) लखनऊ, शाखा-राँची

	पदोन्नतियाँ	
अरविन्द कुमार II	सहायक पर्यवेक्षक	01-01-2021
विनोद कुमार प्रभात	-उपरोक्त-	01-01-2021
श्रवण कुमार	-उपरोक्त-	01-01-2021
	सेवानिवृत्तियाँ	
जय प्रकाश सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	28-02-2021

स्वतंत्रता दिवस (2020) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

अन्जनी कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
मृत्युन्जय कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
करजु लाल मुर्मू	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
सन्तोष कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक

गणतंत्रता दिवस (2021) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	प्रभावी तिथि
हेमन्त कुमार सरदार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
शान्तनु कुमार बराट	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
सुशील कुमार II	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
विपिन चौधरी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	

कार्यालय-प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) उत्तर प्रदेश, लखनऊ

	पदोन्नतियाँ	
विक्रांत	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	28-09-2020
सुरेश कुमार	-उपरोक्त-	28-09-2020
अनिकेत गगन	-उपरोक्त-	28-09-2020
अभयदीप तिवारी	सहा. लेखापरीक्षा अधि. (तदर्थ)	07-10-2020
पुष्पेंद्र कुमार	-उपरोक्त-	07-10-2020
अंकुर चौधरी	-उपरोक्त-	07-10-2020
आनंद सिंह	-उपरोक्त-	07-10-2020
संदीप गोयल	-उपरोक्त-	07-10-2020
आलोक त्रिपाठी	-उपरोक्त-	07-10-2020
अरविन्द सोनी	-उपरोक्त-	25-06-2021
अजीत प्रताप सिंह	-उपरोक्त-	25-06-2021
आलोक प्रकाश वर्मा	-उपरोक्त-	25-06-2021
विक्रमजीत सिंह	-उपरोक्त-	25-06-2021
अवनीश कुमार	-उपरोक्त-	25-06-2021
अमित कुमार	-उपरोक्त-	25-06-2021
साकेत कुमार	-उपरोक्त-	25-06-2021
शैलेन्द्र कुमार द्विवेदी	सहायक पर्यवेक्षक	19-03-2021
राजेश कुमार शर्मा	-उपरोक्त-	08-01-2021
दुर्गेश कुमार कनौजिया	-उपरोक्त-	01-01-2021
नबी रसूल	-उपरोक्त-	01-01-2021
अब्दुल गुफरान	-उपरोक्त-	01-01-2021
प्रदीप कुमार	-उपरोक्त-	01-01-2021
राहुल तिवारी	-उपरोक्त-	01-01-2021
सुदीप माथुर	-उपरोक्त-	01-01-2021
अजय कुमार	-उपरोक्त-	01-01-2021
पूनम सिंह	-उपरोक्त-	01-01-2021
संजय दत्त शुक्ला	-उपरोक्त-	04-01-2021
हरि ओम	पर्यवेक्षक	05-01-2021
प्रेम शंकर	पर्यवेक्षक	05-01-2021
दीक्षा यादव	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30-06-2021
शिवम श्रीवास्तव	डी.ई.ओ., ग्रेड बी	01-01-2021
	सेवानिवृत्तियाँ	
शूर वीर सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31-10-2020
जीवेन्द्र सिंह	-उपरोक्त-	31-08-2020
राम कुमार	-उपरोक्त-	31-12-2020
अनिल कुमार शुक्ल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31-12-2020
अनूप कुमार विद्यार्थी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31-07-2020
रविन्द्र कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31-07-2020
राधे श्याम	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31-07-2020
श्याम लाल	एम.टी.एस.	31-01-2021
मोइम-उल-हुदा	एम.टी.एस.	30-06-2021

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	प्रभावी तिथि

स्वतंत्रता दिवस (2020) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	प्रभावी तिथि
मांधाता सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
वारिधीश गुप्ता	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
चंचल कुमार पाण्डेय	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
रत्नेश कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
विजय बहादुर यादव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
विभोर पाहवा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
वायु नन्दन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
सिद्धार्थ शुक्ला	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
अनुपम सिंह राठौर	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
जितेन्द्र कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
प्रदीप कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
संजय कुमार	लेखापरीक्षक	
सतीश कुमार	डी.ई.ओ.	
बलराम कनौजिया	एम.टी.एस.	
शैलेष कुमार शुक्ला	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
जीवेन्द्र सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
अतुल कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
कृष्ण कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
निमेश गुप्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
बृजेन्द्र श्रीवास	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
राकेश कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
दीपेन्द्र मिश्रा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अनुराग दीक्षित	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
प्रहलाद सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अनिल कुमार गुप्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
ओम प्रकाश चौहान	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अभिनव सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
विवेक यादव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
सौरभ कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
सुदीप माथुर	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
पूनम सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
अंकुर चौधरी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
गौरव खन्ना	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
मंजेश मिश्रा	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
अभय दीप तिवारी	डी.ई.ओ.	
सर्वजीत सिंह	डी.ई.ओ.	

गणतंत्रता दिवस (2021) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	प्रभावी तिथि
अजय कुमार श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
अंशु कुमार यादव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
आशीष कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
लवलेश कुमार लवानिया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
अंशुल अग्रवाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
संजीव कुमार सिन्हा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
रामप्रीत	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
हिमांशु मिश्रा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
दीपक वर्मा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अजय कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
पवन कुमार वर्मा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
चन्द्रवीर सिंह चौहान	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अवधेश सिंह चौहान	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
दुर्गेश कुमार कनौजिया	सहायक पर्यवेक्षक	
गौरव खन्ना	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
संजय बाबू गुप्ता	लेखापरीक्षक	
राजीव कुमार मिश्रा	एम.टी.एस.	
जितेन्द्र यादव	एम.टी.एस.	
धीरज कुमार	एम.टी.एस.	
नरेश पटेल	एम.टी.एस.	
सुनील अग्रवाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
मानधाता सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
प्रवीण कनौडिया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
नितिन अग्रवाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
विवेक यादव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
विशाल महेश्वरी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
आर.एन. चौधरी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
श्वेता शुक्ला	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
मो. नदीम-उल-हक	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अनुराग दीक्षित	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अनिल कुमार गुप्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
पवन कुमार जायसवाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
मुकेश प्रताप पाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
राकेश कुमार सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अमित कुमार गुप्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
शेखर गुप्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
रतनेश कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अरविन्द कुमार मिश्रा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
संदीप गोयल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)	
अंकुर चौधरी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)	
अशोक कुमार मौर्या	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
मुकेश पमनानी	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
योगेन्द्र	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
कुमार विक्रम	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
मो. आतिफ़	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
उमा शंकर पाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
दिवाकर पंडित	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
अजय कुमार सिंह	लेखापरीक्षक	
रवि कुमार	डी.ई.ओ.	
विपिन कुमार	डी.ई.ओ.	
शिव शंकर सोनकर	एम.टी.एस.	
बृजेश कुमार मीना	एम.टी.एस.	

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	प्रभावी तिथि

स्वतंत्रता दिवस (2020) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

शाखा प्रयागराज

वी.के. नायर	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
अजय कुमार वर्मा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अवधेश कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
रवि रावत	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
राम बिहारी मिश्रा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
दिलीप कुमार यादव	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
विजय श्रीवास्तव	लेखापरीक्षक	
मुन्नू लाल	लेखापरीक्षक	
राकेश कुमार	लिपिक	
राधे मोहन	लिपिक	
अवधेश कुमार	लिपिक	
विनोद कुमार	एम.टी.एस.	
रमेश चंद्रा	एम.टी.एस.	
राम दास	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
डी.पी. सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
संजय सक्सेना	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
सर्वोत्तम श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
पी.के. गुप्ता	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
एस.के. शुक्ला	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
ओम प्रकाश	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
गणेश कुमार यादव	लेखापरीक्षक	
श्याम लाल	एम.टी.एस.	

गणतंत्रता दिवस (2021) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

सर्वोत्तम श्रीवास्तव	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
दीपक कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
विजय कुमार	पर्यवेक्षक	
विशाल कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
अजय कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
राजेश कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
शिव प्रसाद	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
संगम सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
राजीव पासवान	डी.ई.ओ.	
मोईन-उल-हुदा	एम.टी.एस.	
विशाल कोरव	एम.टी.एस.	
डी.पी. सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
संजय सक्सेना	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
अनिल कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
रोविन कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
लाल जी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
राजेश कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
राज कुमार यादव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अवधेश कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
विवेक कुमार श्रीवास्तव	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
कमलेश कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	

नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	प्रभावी तिथि
राम पूजन	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
संजय प्रजापति	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	
हेमत शर्मा	डी.ई.ओ.	

कार्यालय-निदेशक, वित्त एवं दूरसंचार लेखापरीक्षा, शाखा-लखनऊ

पदोन्नतियाँ

अनिल कुमार विश्वकर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	25-01-2021
अखिलेश कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	29-06-2021
सीताराम धुरिया	सहायक पर्यवेक्षक	01-01-2021
सुरेन्द्र कुमार	-उपरोक्त-	01-01-2021
मो. इमरान खान	-उपरोक्त-	01-01-2021
नरेंद्र प्रसाद	-उपरोक्त-	01-01-2021

सेवानिवृत्तियाँ

गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव	निदेशक	31-07-2020
सुरेश कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31-07-2020
सुनील कुमार चौहान	-उपरोक्त-	31-07-2020
दल बहादुर	एम.टी.एस.	31-10-2020
सीताराम धुरिया	सहायक पर्यवेक्षक	31-07-2021

स्वतंत्रता दिवस (2020) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

सुरेश कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	
अनिलेन्द्र अवस्थी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अभिषेक कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	
अखिलेश कुमार	डी.ई.ओ.	

कार्यालय-प्रधान महालेखाकार, (लेखा एवं हक.) II, शाखा-लखनऊ

सेवानिवृत्तियाँ

रमेश कुमार लालचंदानी	वरिष्ठ लेखाकार	30-06-2021

गणतंत्रता दिवस (2021) पर पुरस्कृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

सैय्यद हसन मुस्तफा रिजवी	वरिष्ठ लेखाकार	

राजभाषा हिन्दी पत्रिका संधान के तृतीय अंक के जारी किये जाने के अवसर की झलकियाँ

श्री जयन्त सिन्हा, प्रधान महालेखाकार

श्री राज कुमार, महानिदेशक

राजभाषा हिन्दी पत्रिका संधान के तृतीय अंक के जारी किये जाने के अवसर की झलकियाँ

श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव, निदेशक

श्री अभिषेक सिंह, वरिष्ठ उपमहालेखाकार

संपादक मण्डल एवं रचनाकार मण्डल

वृक्षारोपण करते हुए
प्रधान महालेखाकार
श्री जयंत सिन्हा
(बायें)
एवं
महानिदेशक
श्री राज कुमार
(दायें)

हिन्दी पखवाड़े के अवसर की कुछ झलकियाँ

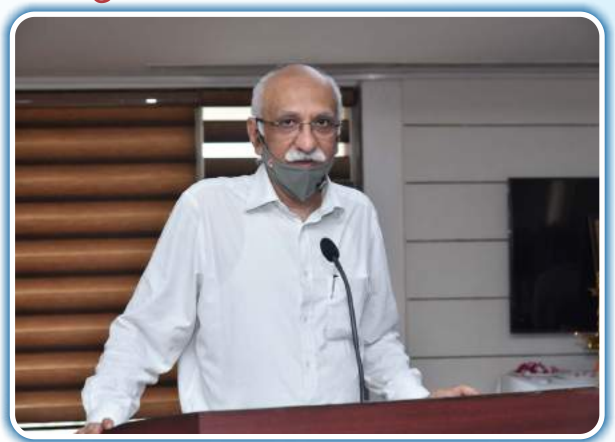

श्री जयन्त सिन्हा, प्रधान महालेखाकार

श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव, निदेशक

श्री अभिषेक सिंह, वरिष्ठ उपमहालेखाकार

श्रीमती हंसा, वरिष्ठ उपमहालेखाकार

श्री उत्सव पाराशर, उपमहालेखाकार

अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (एन.सी.आर.) तथा महानिदेशक (एन.सी.आर.-I) के आगमन की कुछ झलकियाँ

अपर उपनियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (एन.सी.आर.) सुश्री दिव्या मल्होत्रा

महानिदेशक (एन.सी.आर.-I) सुश्री आत्रेयी दास

गणतंत्र दिवस पर झण्डारोहण की कुछ झलकियाँ

झण्डारोहण करते महानिदेशक श्री राज कुमार (बायें)

ऑनलाइन पेंशन एवं भविष्य निधि अदालत-2020

ऑडिट भवन में टीकाकरण केन्द्र में टीकाकरण कराते हुए अधिकारीगण

श्रद्धा सुमन

जुलाई 2020 से जून 2021 की अवधि के मध्य कोरोना महामारी या अन्य कारणों से निम्नलिखित अधिकारी/कर्मचारी ब्रह्मलीन हो गये। संधान परिवार इन सभी के असमय अवसान पर अपनी हार्दिक संवेदनायें प्रकट करता है।

कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II), लखनऊ
नाम - रवि कुमार श्रीवास्तव
पद - वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
जन्म तिथि - 05-03-1967
मूल निवास - प्रयागराज
शिक्षा - बी.ए.
नियुक्ति की तिथि - 28-05-1990
परलोक गमन तिथि - 20-04-2021
अवसान का कारण - कोरोना महामारी

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II), लखनऊ से दिल्ली स्थानान्तरित
नाम - विश्वास त्रिवेदी
पद - वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
जन्म तिथि - 08-09-1972
मूल निवास - लखनऊ
शिक्षा - बी.कॉम. (आई.सी.डब्ल्यु.ए.)
नियुक्ति की तिथि - 08-05-1995
परलोक गमन तिथि - 17-05-2021
अवसान का कारण - कोरोना महामारी

कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II), शाखा-प्रयागराज
नाम - मंजुला श्रीवास्तव
पद - वरिष्ठ निजी सचिव
जन्म तिथि - 30-06-1961
मूल निवास - प्रयागराज शिक्षा - स्नातक
नियुक्ति की तिथि - 26-02-1982
परलोक गमन तिथि - 21-04-2021
अवसान का कारण - ज्वर व ऑक्सीजन की कमी

कार्यालय - महालेखाकार (ले. एवं ह.) II, शाखा- लखनऊ
नाम - मनोज कुमार सक्सेना
पद - सहायक पर्यवेक्षक
जन्म तिथि - 15-08-1963
मूल निवास - कानपुर
शिक्षा - बी.कॉम.
नियुक्ति की तिथि - 25-08-1987
परलोक गमन तिथि - 26-04-2021
अवसान का कारण - कोरोना महामारी

कार्यालय - निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, लखनऊ
नाम - शरद कुमार श्रीवास्तव
पद - वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
जन्म तिथि - 30-01-1966
मूल निवास - मधेयगंज, लखनऊ
शिक्षा - बी.एस.सी.
नियुक्ति की तिथि - 09-10-1987
परलोक गमन तिथि - 19-04-2021
अवसान का कारण - कोरोना महामारी

कार्यालय - निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा, लखनऊ से पटना स्थानान्तरित
नाम - श्री अनिल कुमार विश्वकर्मा
पद - वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
जन्म तिथि - 21-01-1969
मूल निवास - लखनऊ
शिक्षा - बी.एस.सी.
नियुक्ति की तिथि - 18-02-1993
परलोक गमन तिथि - 09-04-2021
अवसान का कारण - कोरोना महामारी

कार्यालय - महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ, शाखा- राँची, झारखण्ड
नाम - प्रबल कुमार मित्रा
पद - सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
जन्म तिथि - 18-03-1963
मूल निवास - राँची
शिक्षा - बी.कॉम.
नियुक्ति की तिथि - 20-01-1987
परलोक गमन तिथि - 17-04-2021
अवसान का कारण - कोरोना महामारी

कार्यालय - महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ, शाखा- राँची, झारखण्ड
नाम - शान्तनु कुमार बराट
पद - सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
जन्म तिथि - 03-02-1970
मूल निवास - कोलकाता
शिक्षा - बी.एस.सी.
नियुक्ति की तिथि - 18-11-1992
परलोक गमन तिथि - 13-04-2021
अवसान का कारण - कोरोना महामारी

कार्यालय - महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ, शाखा- पटना, बिहार
नाम - अरविन्द कुमार
पद - वरिष्ठ लेखापरीक्षक
जन्म तिथि - 31-03-1970
मूल निवास - राधोपुर, वैशाली
शिक्षा - मैट्रिक
नियुक्ति की तिथि - 15-01-1991
परलोक गमन तिथि - 30-04-2021
अवसान का कारण - तेज बुखार

कार्यालय - महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ
नाम - सतीश कुमार राम
पद - एम.टी.एस.
जन्म तिथि - 10-12-1961
मूल निवास - गाजीपुर
शिक्षा - कक्षा आठ
नियुक्ति की तिथि - 05-10-1983
परलोक गमन तिथि - 24-05-2021
अवसान का कारण - कोरोना महामारी

आधुनिक लखनऊ

अटल बिहारी वाजपेयी (इकाना) स्टेडियम, लखनऊ

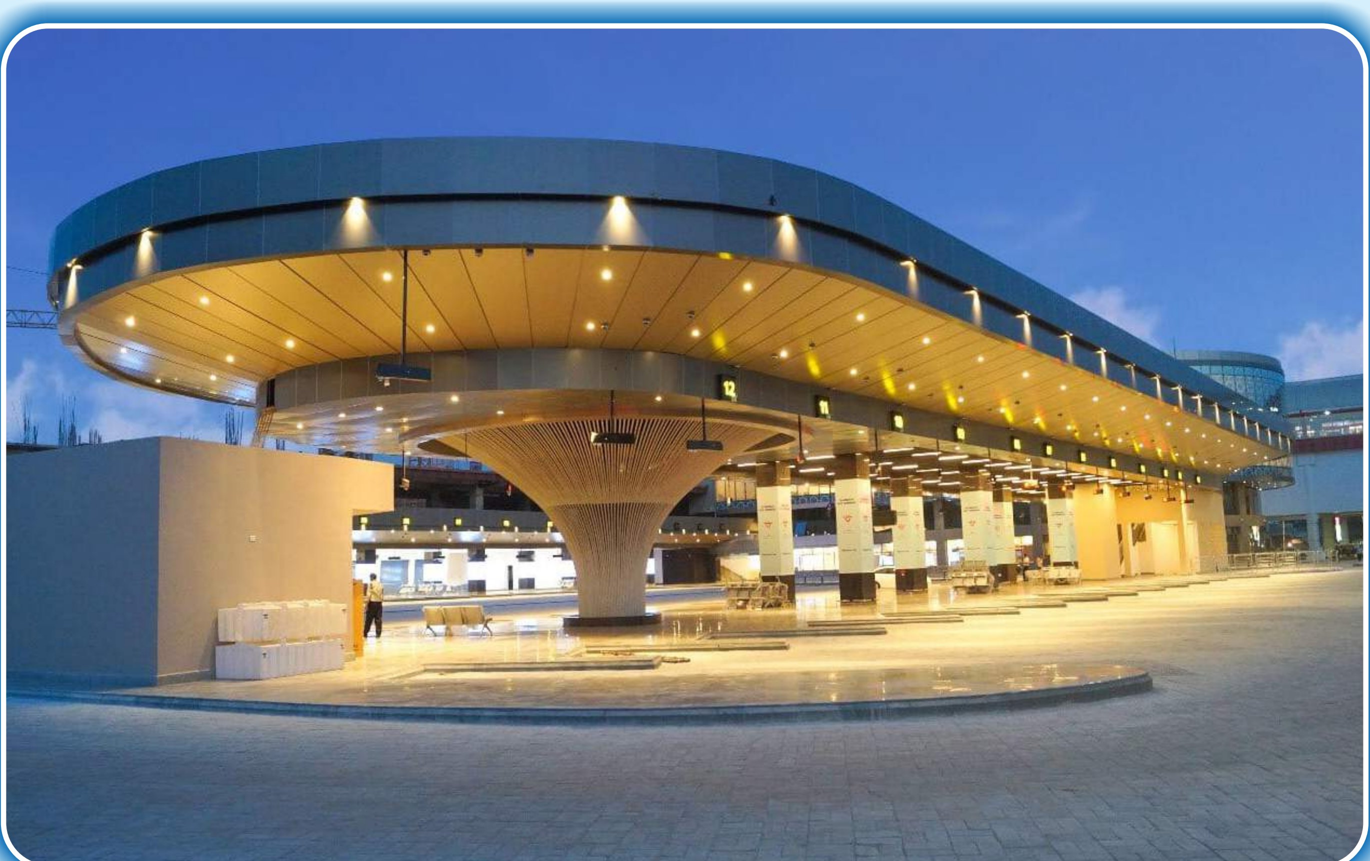

आलमबाग बस स्टेण्ड, लखनऊ

अवधी लखनऊ

छतर मंजिल, लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

army printing press
www.armyprintingpress.com
Lucknow (0522) 6565333

राजभाषा हिन्दी पत्रिका संधान - चतुर्थ अंक (जुलाई 2020-जून 2021)